मख़दूमे जहाँ

शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी

मकतब-ए-शरफ़ ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म
बिहार शरीफ़, नालंदा (बिहार)

हज़रत मख़दूमे जहाँ

शैख़ शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी

(1263 - 1380 ई०)

जीवन और संदेश

सैयद शाह शमीमुद्दीन मुनएमी

सज्जादानशीन, ख़ानक़ाह मुनएमीया, मीतनघाट, पटना सिटी

विभागाध्यक्ष, अरबी विभाग, ऑरियन्टल कॉलेज, पटना सिटी

मकतबा शरफ़ बैतुश्शरफ़ ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म

बिहार शरीफ़

प्राक्कथन

(प्रथम संस्करण)

इस संसार में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनकी चर्चा कर लेखक उन पर कृपा करता है परन्तु कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं, कि जिनकी चर्चा और गुणगान कर लेखनी और लेखक दोनों धन्य हो जाते हैं। सारे संसार के लिए दया और करूणा का केन्द्र बना कर अवतरित किये गए पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद[सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम] का गुणगान करते हुए उनके प्रसिद्ध शिष्य और अरबी भाषा के विख्यात कवि हज़रत हस्सान बिन साबित ने कहा था-

मा इन मदहतो मुहम्मदन बेमक़ालती
लाकिन मदहतो मक़ालती बेमुहम्मदिन

मैं अपनी रचना के द्वारा हज़रत मुहम्मद[सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम] का गुणगान क्या करूँगा सत्य तो यह है कि मैं ने उनकी चर्चा के द्वारा अपनी रचना को प्रशंसा के योग्य बना लिया है।

महान पैग़म्बर के मार्ग का अनुसरण कर ईशकृपा से हज़रत मख़्दूमे जहाँ भी ऐसे व्यक्तित्व के स्वामी हुए हैं कि मैं उनके गुणगान को स्वंय अपने लिए मोक्ष और मुक्ति का साधन मानता हुँ।

जो व्यक्तित्व परमात्मा की दृष्टि में प्रिय हो जाता है उसे परमात्मा अपनी आभा से ढाँक लेता है, हर किसी को न तो उसकी महानता सूझती है, न ही हर किसी को उसके चरणों का स्पर्श प्राप्त होता है और न ही हर व्यक्ति को उनके गुणगान का सौभाग्य प्राप्त होता है। यह तो मात्र परमात्मा की कृपा है कि वह अपने किसी सेवक को यह शक्ति प्रदान

करता है कि वह उसके प्रिय व्यक्तित्व का अपनी क्षमतानुसार गुणगान कर सके। वरना कहाँ मख़दूमे जहाँ का व्यक्तित्व और कहाँ संसार की मोह-माया में लिप्त यह तुच्छ लेखक।

जो व्यक्तिव परमात्मा के समीप अपनी आस्था और पवित्र जीवन के कारण स्वीकृत हो जाता है, उसके प्रति परमात्मा लोगों के दिलों में प्रेम और आदर की धड़कनें पैदा कर देता है सारा जग उसके वशीभूत हो जाता है। यही कारण है कि मख़दूमे जहाँ की दरगाह शरीफ़ पर धर्म, आस्था, पंथ, सम्प्रदाय, जात-पात, नागरिकता और पहचान से ऊपर उठकर सभी लोग श्रद्धा अर्पित करने पहुँचते हैं, जिनमें बहुत बड़ी संख्या में हिन्दी भाषी होते हैं, उनकी जिज्ञासा और बारंबार इच्छा का सम्मान करते हुए, हज़रत **मख़दूमे जहाँ** के वर्तमान सज्जादानशीन जनाबहुज़ूर **सैयद शाह मुहम्मद सैफुद्दीन फ़िरदौसी** साहब ने मुझे इस कार्य के लिए उत्प्रेरित किया और मात्र उनके आदेश की अवहेलना से बचने के लिए मैं ने इस लक्ष्य को स्वीकार किया साथ ही श्री **शैलेष कुमार सिंह**, जिलाधिकारी, नालन्दा, श्री **सभापति कुशवाहा**, अपर समाहर्त्ता, नालन्दा और श्री **सुरेश कुमार भारद्वाज**, आरक्षी उप महानिरीक्षक, नालन्दा, का मुखर प्रयास भी इस पुस्तक के इस रूप में आने का कारण बना और मात्र एक महीने में, वह भी रमज़ान जैसे महीने में अपनी क्षमता के अनुरूप यह प्रयास पाठकों की सेवा में स्वीकृति के लिए अर्पित है।

इस पुस्तक की तैयारी में मैं अपने बड़े भाई श्री अहमद बद्र का भी हार्दिक आभारी हूँ कि उन्होंने अपनी व्यस्तता के बावजूद समय निकाल कर इस पुस्तक पर एक दृष्टि डाली और बहुमूल्य सुझाव दिये। मैं इस सन्दर्भ में डा० अली अरशद साहब शरफ़ी का भी आभारी हूँ। समय की कमी और अपनी दूसरी व्यस्तताओं के कारण इस प्रयास में ढेर सारी कमी रह गई है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि इस पुस्तक में आपकी दृष्टि में कोई त्रुटि आए तो मुझे क्षमा कर सूचित करने की कृपा करें ताकि भविष्य में इसका सुधार हो सके।

ख़ानक़ाह मुनएमीया क़मरीया
मीतन घाट, पटना सिटी

शमीम मुनएमी

प्राक्कथन

(द्वितीय संस्करण)

बिहार में सूफ़ीवाद का इतिहास 12वीं शताब्दी ईस्वी से निश्चित रूप से मिलने लगता है। सुहरवर्दी सूफ़ीयों में यहाँ शेख़ शहाबुद्दीन सरुहरवर्दी (निधन : 632 हि०) के कई ख़लीफ़ा यहाँ कार्यरत दिखते हैं वहीं ख़्वाजा मौदूद चिश्ती के ख़लीफ़ा ख़िज्र पारादोज़ की ख़ानक़ाह भी जानी मानी थी। बिहार के कई सूफ़ी ख़्वाजा ग़रीबनवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती, ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी, ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंजशकर और ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया की सेवा में देखे जा सकते हैं।

बिहार में मनेर शरीफ़ (जिला पटना) को प्राचीनतम सूफ़ी केन्द्र के रूप में जाना जाता है जहाँ हज़रत इमाम मुहम्मद ताज फ़कीह ने एक सूफ़ीवादी केन्द्र की नींव रखी। उनसे पहले हज़रत मोमिन आरिफ़ भी मनेर शरीफ़ में यह काम व्यक्तिगत रूप से कर रहे थे। इस तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतवर्ष में सूफ़ीवाद के इतिहास का एक प्राचीन साक्षी 'बिहार' भी है।

बिहार न केवल सूफ़ीवाद का प्राचीन केन्द्र रहा है बल्कि यहाँ सूफ़ियों की बहुलता और विभिन्न सिलसिलों के सूफ़ी केन्द्रों की लोकप्रियता भी इसे दिल्ली और बदायूं जैसे महत्वपूर्ण सूफ़ी केन्द्रों की पंक्ति में ला खड़ा करती है। बिहार में मनेर शरीफ़, बिहारशरीफ़, भागलपुर, सीवान, सहसराम और पटना इत्यादि ऐसे स्थान हैं जहाँ बड़ी संख्या में सूफ़ी दरगाहें और ख़ानक़ाहें मौजूद रही हैं।

सूफ़ी सिलसिलों में चिश्तिया, सुहरवर्दिया, क़ादरिया, शत्तारीया, ज़ाहिदिया, कलंदरिया, नक्श्बंदिया, शाज़लिया, मदारिया और अबुलउलाईया हर सिलसिले के महत्वपूर्ण सूफ़ी और ख़ानक़ाहें बिहार में महत्वपूर्ण भुमिका निभाती रही हैं।

बिहार में सूफ़ीवाद के इतिहास की चर्चा हो या इसलामी इतिहास की बात हो, सबसे सशक्त और महत्वपूर्ण व्यक्तित्व **हज़रत मख़दूमे जहाँ**

शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी का ही नज़र आता है।

सूफ़ी साहित्य की स्थापना और विकास में भी बिहार का योगदान सर्वोपरी है। हज़रत मख़दूमे जहाँ शैख़ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी के पत्रों का संग्रह इस उपमहाद्वीप में सूफ़ी साहित्य और इसलामी लेखन का सर्वोत्तम उदाहरण है। हज़रत मख़दूमे जहाँ के पहले भी और आपके बाद भी कई महत्वपूर्ण सूफ़ी संतों के पत्र-संग्रह तैयार हुए और लोकप्रिय हुए लेकिन जैसी व्यापक और सर्वमान्य लोकप्रियता हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों को प्राप्त हुई और हो रही है वह अद्वितीय है। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने जितनी बड़ी संख्या में पत्र लेखन का कार्य किया वह भी अभूतपूर्व है। लगभग 600 पत्रों का पता निश्चित रूप से चल जाता है कि हज़रत मख़दूमे जहाँ ने लिखे थे। इस संदर्भ में शोध कुछ आगे बढ़े तो यह संख्या 1000 से भी ऊपर जा सकती है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के मलफ़ूज़ात (सत्संग के प्रवचनों का लिखित रूप) के संग्रह भी बड़े महत्वपूर्ण हैं। आपके मलफ़ूज़ात श्रेष्ठतम कोटी के सूफ़ी विचारों और इसलामी विद्वता के द्योतक हैं। इन मलफ़ूज़ात से यह स्पष्ट होता है कि 14वीं शताब्दी के मध्य में हज़रत मख़दूमे जहाँ के कारण बिहार इसलामी दुनिया के नक्शे में एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुका था। मध्य एशिया और इस उपमहाद्वीप के कोने-कोने से उच्च शिक्षा के प्रेमी और शोधकर्त्ता ही नहीं बल्कि विद्वान, सूफ़ी और पीरज़ादे आपके दर्शन और आपके प्रवचन सुनने को लगातार चले आ रहे थे। जिज्ञासाओं का समाधान और प्रश्नों के उत्तर प्रदान करने में हज़रत मख़दूमे जहाँ एक अनुपम सामर्थ्य के मालिक थे। जो आता संतुष्ट जाता किसी बिन्दु पर हज़रत मख़दूमे जहाँ के द्वारा व्यक्त किया गया विचार कल भी स्वीकार्य था और आज भी है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के मलफ़ूज़ात का जितना बड़ा भाग कई संग्रहों के रूप में हमें प्राप्त है शायद ही इस उपमहाद्वीप में किसी के मलफ़ूज़ात का इतना बड़ा संग्रह मिलता हो। इन मलफ़ूज़ात में धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों के साथ समकालीन सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक परिवेश पर भी जो इशारे और टिप्पणीयाँ मिलती हैं वह भी बहुत महत्वपूर्ण तथा तत्कालीन इतिहास की रचना में संदर्भ का दर्जा रखती हैं।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के विचार और दर्शन अतिशयोक्ति, कट्टरता और विरोधाभास से दूर हैं। यही कारण है कि आपकी रचनाएं सर्वमान्य और सर्वप्रिय हैं। सुननेवाले और पढ़नेवाले के मन में आपकी बातें बड़ी सहजता और सुगमता के साथ घर कर जाती हैं और अपना प्रभाव दिखाती हैं।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के विचारों की गहराई और गुणवत्ता उनके गहण अध्ययन और शोध तथा लम्बे तप और साधना का नतीजा हैं। उन्होंने जहाँ एक ओर इसलामी शिक्षा-जगत के सभी आयामों का गूढ़ अध्ययन किया था तो वहीं दूसरी ओर वे बाईबिल और दूसरी आसमानी किताबों पर भी भरपूर निगाह रखते थे, साथ ही वेदों, पुराणों और उपनिषदों से भी भलीभाँति परिचित थे। मख़दूमे जहाँ के मलफ़ूज़ात और लेखों के विस्तृत अध्ययन से उनके योग विद्या में भी पारंगत होने का प्रमाण मिल जाता है। यही कारण है कि मख़दूमे जहाँ के यहाँ अधूरे और छिछले ज्ञान का विकार दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता और एक ऐसे महासागर का आभास होता है, जिसकी हर लहर अपने सामने वाले को ज्ञान और विज्ञान की एक नई ऊँचाई का दर्शन कराती है। हज़रत मख़दूमे जहाँ तत्कालीन विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में भी पारंगत थे इसीलिए आपकी बातें समय और काल के समानांतर अपनी यात्रा जारी रखती हैं और कभी इनमें जड़ता या पुरानापन दिखाई नहीं देता।

हज़रत मख़दूमे जहाँ की शैली के साथ-साथ भाषा भी फ़ारसी जगत में भारत को सरबुलंद करने वाली है। ईरान, जो फ़ारसी भाषा की जन्मभूमि है, अपने शैख़ सादी के फ़ारसी गद्य पर जितना भी स्वाभिमान करे उचित है, लेकिन मख़दूमे जहाँ के लेखों और पत्रों की फ़ारसी भाषा किसी भी प्रकार शैख़ सादी से पीछे नहीं है। किसी जन्मजात भारतीय के फ़ारसी भाषा में दक्षता का यह कीर्तिमान उसकी अभूतपूर्व मेधा का खुला प्रमाण है। फ़ारसी के साथ-साथ हिन्दवी या उर्दू में मख़दूमे जहाँ की समय-समय पर की जानी वाली टिप्पणी और उक्ति उन्हें इस भाषा के भी उत्तम ज्ञाता और संरक्षणदाता के रूप में स्थापित करती है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ और उनकी सेवाओं पर हर काल में लिखने, पढ़ने, शोध, व्याख्या और अनुवाद का काम चलता रहा है। फ़ारसी भाषा में बुरहानुल अतक़िया, मानाक़िबुल असफ़िया, गुलेफ़िरदौस, अंसाबे शरफ़ी

इत्यादि इसी सिलसिले की कड़ियाँ हैं। फिर जब फ़ारसी से उर्दू का ज़माना आया तो मौलूदे शरफ़ी, वसीलए शरफ़ व ज़रियए दौलत, सीरतुश्शरफ़, अशशरफ़ इत्यादि दर्जनों छोटी बड़ी जीवनियाँ लिखी गई और लोकप्रिय हुई। अब वह समय आ गया है कि इस देश की एक बड़ी जनसंख्या हिन्दीभाषी है और वह मख़दूमे जहाँ के प्रति उर्दू भाषियों से कुछ कम श्रद्धा नहीं रखती, इसीलिए हिन्दी भाषी श्रद्धालुओं की जिज्ञासा और लगाव को ध्यान में रखते हुए हज़रत मख़दूमे जहाँ से संबंधित एक विस्तृत जीवनी की आवश्यकता पूरी करने के उद्देश्य से 1998 ई० में इस पुस्तक का पहला संस्करण लाया गया जो शीघ्र ही समाप्त हो गया और इसके नये संस्करण की माँग बढ़ने लगी।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के 27वें वर्तमान सज्जादानशीन जनाबेहुज़ुर सैयद शाह मुहम्मद सैफुद्दीन फ़िरदौसी ने लोगों की इस आवश्यकता को अच्छी तरह महसूस किया और मुझे इसके दूसरे संस्करण का आदेश दिया। पहले संस्करण की तुलना में हमने यह प्रयास किया है कि इस संस्करण में सूचनाएं बढ़ाई जाएं साथ ही संदेश का भाग भी पहले से अधिक हो तथा मख़दूमे जहाँ के पवित्र जीवन के हर भाग पर समुचित प्रकाश पड़े। इस द्वितीय संस्करण में भी हम अपने बड़े भाई प्रो० सैयद अहमद बद्र, व्याख्याता उर्दू विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपूर के हार्दिक आभारी हैं कि उन्होंने अपना बहुमुल्य समय देकर इस प्रयास पर एक नज़र डाली और हमारा मार्गदर्शन किया। हम छोटे भाई सैयद शहाब अहमद और सैयद मिमशाद फ़िरदौसी के भी ऋणी हैं कि उनके सहयोग के बिना इस संस्करण का समय पर आ पाना संभव न था। विश्वास है कि इस पुस्तक के पाठकों की आशाओं पर खरा उतरूँगा। अगर कहीं कोई त्रुटि या कमी दिखे तो इसे मेरी अयोग्यता समझते हुए मार्गदर्शन की कृपा करें। मैं उनका आभारी और ऋणी रहूँगा।

शमीमुद्दीन मुनएमी

ख़ानक़ाह मुनएमीया, मीतनघाट, पटना सिटी

27 रमज़ान 1432 हि०
28 अगस्त 2011 ई०

विषय सूची

दिल्ली, बदायूँ और जौनपुर की भाँति बिहार प्राँत के नालन्दा जिला का बिहार शरीफ प्रखण्ड भी उत्तर पुर्व भारत के ख्याति प्राप्त स्थलों में से एक है, जहाँ बड़ी संख्या में सूफ़ी संतों की दरगाहें और ख़ानक़ाहें मौजूद हैं। बिहार प्राँत के प्राय: सभी क्षेत्रों में सूफी संतों के मज़ार, मक़बरे, ख़ानक़ाहें और दरगाहें तथा उनसे जुड़ी यादगारें फैली हुई हैं परन्तु बिहार शरीफ़ इन सभी में सर्वप्रथम है। विभिन्न विचारधारा और जीवनशैली वाले सूफ़ी संत अपने-अपने काल में महत्वपूर्ण योगदान देकर जहाँ अपनी समाधियों में आराम कर रहें हैं, लेकिन इन सभी में सर्वाधिक लोकप्रिय, महान और सर्वोत्तम मख़दूमे जहाँ **शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी** का अस्तित्व है।

जन्म

ऐसा माना जाता है कि इस धरती के महान सपूत हज़रत मख़दूमे जहाँ का जन्म **26 शाबान 661 हि0/1263 ई0** को पटना जिले के मनेर शरीफ़ में हुआ। उस समय सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद जैसा न्यायप्रिय और सज्जन शासक दिल्ली की गद्दी पर आसीन था। हज़रत मख़दूमे जहाँ के जन्म की तिथि और वर्ष का उल्लेख पुराने लेखकों ने नहीं किया है, परन्तु 400 वर्ष बाद के लेखक उक्त जन्मतिथि पर एकमत हैं। आपका जन्म नासिरुद्दीन नामक शासक के शासनकाल में बताया जाता है। इसी नाम का एक शासक बंगाल में भी था। दोनों के शासनकाल में अन्तर है। अगर निरंतर चल रहे शोध के निष्कर्ष में वह बंगाल का शासक प्रमाणित हो जाता है तो हज़रत मख़दूमे जहाँ की जन्मतिथि 690 हि०/1291 ई० के आसपास निश्चित होगी।

मनेर शरीफ़ में आज भी ख़ानक़ाह से सटे एक दालान और दो कमरों वाली एक असुसज्जित इमारत में, जो '**रवाक़**' कहलाती है, आपका जन्म-स्थान सुरक्षित है।

नाम और लक़ब (उपाधि)

हज़रत मख़दूमे जहाँ का नाम अहमद था और शरफुद्दीन आपका लक़ब था। अरबी परम्परानुसार अपने पिता का नाम 'यहया' अपने नाम में सम्मिलित कर इस प्रकार लिखा करते थे:

शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी

आपको आपके जीवनकाल से ही **मख़दूमे जहाँ** के नाम से याद किया जाने लगा था और तब से यही नाम प्रचलित और सर्वविदित है। इस पुस्तक में भी इसी नाम से आपकी चर्चा की जाएगी।

पिता और परिवार

मख़दूमे जहाँ का परिवार जब 576 हि०/1180 ई० में भारत वर्ष पधारा था, तब राजा मनयर इस क्षेत्र का निरंकुश और बर्बर शासक था और मनेर उसकी राजधानी थी। उसी वर्ष हज़रत मख़दूमे जहाँ के दादा के पिता हज़रत इमाम मुहम्मद ताज फ़कीह ने उसके कुशासन से पीड़ित जनता को मुक्ति प्रदान की थी। वे स्वंय तो अपने घर येरूशलम (बैतअलमुक़द्दस) वापस लौट गए लेकिन उनके पुत्र (शैख़ इसराईल, शैख़ इसमाईल तथा शैख़ अब्दुल अज़ीज) उनकी आज्ञानुसार यहीं रह गए।

इन तीनों भाईयों का वंश खूब फला-फूला और उनके वंशज में बड़े-बड़े सूफ़ी संत और बुद्धिजीवी हुए, जिनके विवरण के लिए एक अलग पुस्तक की आवश्यकता है। यहाँ केवल इस परिवार के सबसे उज्जवल और महत्वपूर्ण व्यक्तित्व हज़रत मख़दूमे जहाँ शैख़ शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी का उल्लेख किया जाता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ की वंशावली, सारे संसार के लिए

साक्षात दया और कृपा बना कर अवतरित किए गए पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सगे चचा ज़ुबैर बिन अब्दुलमुत्तलिब से इस प्रकार जा मिलती है:

मख़्दूमे जहाँ **शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी** पुत्र **शैख़ कमालुद्दीन यहया मनेरी** पुत्र **शैख़ इसराईल** पुत्र **हज़रत इमाम मुहम्मद ताज फ़क़ीह** पुत्र **इमाम अबूबक्र** पुत्र **इमाम अबुलफ़तेह** पुत्र **इमाम अबुल क़ासिम** पुत्र **इमाम अबुस्साएम** पुत्र **इमाम अबुदहर** पुत्र **इमाम अबुल्लैस** पुत्र **इमाम अबूसहमा** पुत्र **अबूदीन** पुत्र **इमाम अबूमसऊद** पुत्र **इमाम अबूज़र** पुत्र **ज़ुबैर** पुत्र **अब्दुलमुत्तलिब** पुत्र **हाशिम**।

(अनसाबे शरफ़ी पृ 28-29)

हज़रत मख़्दूमे जहाँ के पिता हज़रत मख़्दूम कमालुद्दीन यहया मनेरी भी अपने समय के एक महान सूफ़ी संत थे, उन्होंने सूफ़ीवाद की शिक्षा-दीक्षा विख्यात सूफ़ी संत हज़रत शैख़ुश्शयूख़ उमर बिन मुहम्मद शहाबुद्दीन सुहरवर्दी से प्राप्त की थी और मनेर शरीफ़ में अपने पिता शैख़ इसराईल के बाद उनका स्थान ग्रहण किया था। कहते हैं कि शैख़ कमालुद्दीन यहया मनेरी को शैख़ तक़ीउद्दीन मेहसवी से भी श्रद्धा थी और वे उनसे भी लाभान्वित हुए थे। एक मत यह भी है कि शैख़ यहया मनेरी विख्यात सूफ़ी हज़रत शैख़ नजमुद्दीन कुबरा से भी लाभान्वित हुए थे।

हज़रत मख़्दूमे जहाँ को मिलाकर आपके चार पुत्र और एक पुत्री थीं। हज़रत मख़्दूमे जहाँ के बड़े भाई शैख़ जलीलुद्दीन ने, अपने पिता के बाद मनेर में उनका स्थान ग्रहण किया।

मंझले स्वंय हज़रत मख़्दूमे जहाँ थे और तीसरे भाई शैख़ ख़लीलुद्दीन थे, जिन्होंने बिहारशरीफ़ में मख़्दूमे जहाँ के साथ सारा जीवन व्यतीत किया और उनकी क़ब्र भी मख़्दूमे जहाँ के चरणों के पास स्थित है। चौथे भाई शैख़ हबीबुद्दीन, मख़्दूम नगर जिला वीरभूम बंगाल में हज़रत मख़्दूमे जहाँ के एक मात्र पुत्र शैख़ ज़कीउद्दीन के

साथ रहते थे और वहीं इन दोनों संतों की क़ब्रे हैं। हज़रत मख़दूम जहाँ की बहन बीबी माह, मौलाना शमसुद्दीन माज़न्दरानी की पत्नी थीं।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के पिताश्री की दरगाह मनेर शरीफ़ में ऊँचे टीले पर अवस्थित है और मनेर शरीफ़ की बड़ी दरगाह कहलाती है। प्रत्येक वर्ष इसलामी कैलेन्डर से 11 शाबान को उनका उर्स होता है।

माता और उनका परिवार

हज़रत मख़दूमे जहाँ की माताश्री बीबी रज़िया, जो बड़ी बुआ भी कहलाती थीं, प्रसिद्ध सूफ़ी संत शैख़ शहाबुद्दीन पीर **'जगजोत'** की बड़ी पुत्री थीं। पीर जगजोत अफ़ग़ानिस्तान से उत्तर स्थित काशग़र प्रांत से भारत आए थे। कहते हैं कि वे काशगर के राजा या न्यायाधीश थे और उन्होंने राजसी ठाठ-बाट को लात मार कर संत मार्ग अपना लिया था।

उन्होंने भी मख़दूमे जहाँ के पिता की भाँति विख्यात सूफ़ी संत **शैख़ुश्शयूख़ उमर शहाबुद्दीन सुहरवर्दी** से दीक्षा प्राप्त की थी और उन्हीं के आदेशानुसार इस क्षेत्र में पधारे थे। आज भी पटना में आपकी दरगाह, कच्ची दरगाह के नाम से विख्यात है और लोगों की श्रद्धा का केन्द्र बिन्दु है। प्रत्येक वर्ष इस्लामी कैलेन्डर से ज़ीक़ाद मास की 21 को आपका वार्षिक उर्स सम्पन्न होता है।

हज़रत मुख़दूमे जहाँ की वंशावली अपनी माता की ओर से पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस प्रकार जा मिलती है:

मख़दूमे जहाँ **शैख़ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी** पुत्र **बीबी रज़िया** पुत्री **मख़दूम शहाबुद्दीन पीर जगजोत** पुत्र **सैयद मुहम्मद** पुत्र **सैयद अहमद** पुत्र **सैयद नासिरुद्दीन** पुत्र **सैयद यूसुफ़** पुत्र **सैयद हसन** पुत्र **सैयद क़ासिम** पुत्र **सैयद मूसा** पुत्र **सैयद हमज़ा** पुत्र **सैयद दाऊद** पुत्र **सैयद रुक्नुद्दीन** पुत्र **सैयद क़ुत्बुद्दीन** पुत्र **सैयद इसहाक़** पुत्र **सैयद इसमाईल** पुत्र **सैयदना इमाम जाफ़र सादिक़** पुत्र **हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर** पुत्र **हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन**

पुत्र **इमाम हुसैन** पुत्र **बीबी फ़ातिमा** पुत्री नबीए रहमत **हज़रत मुहम्मद** सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम।(अनसाबे शरफ़ी पृ 30-31)

आपकी माताश्री बीबी रज़िया की तीन छोटी बहनें और थीं। उनकी दूसरी छोटी बहन बीबी हबीबा, हज़रत मूसा हमदानी की पत्नी थीं, जिनके सुपुत्र हज़रत मख़दूम अहमद चरमपोश (नि: 776 हि०/1374 ई०) प्रसिद्ध सूफ़ी संत हुए। उनकी दरगाह बिहारशरीफ़ के अम्बेर मुहल्ले में मशहूर है।

उनकी तीसरी बहन बीबी कमाल, हज़रत इमाम मोहम्मद ताज फ़कीह के पौत्र सुलेमान लंगर ज़मीन की पत्नी थीं। उनकी दरगाह जहानाबाद जिले के काको ग्राम में श्रद्धा का केन्द्र-बिन्दु है।

उनकी चौथी बहन मख़दूम हमीदुद्दीन चिश्ती की पत्नी थीं जिनकी दरगाह अपने पिता के साथ कच्ची दरगाह के समीप पक्की दरगाह में प्रसिद्ध है। मख़दूम हमीदुद्दीन के सुपुत्र मख़दूम तय्यमुल्लाह चिश्ती की दरगाह बिहार शरीफ़ के बीजवन ग्राम में स्थित है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ की माता और उनकी बहनें तथा उनकी सन्तान, सभी का व्यक्तित्व सूफ़ी दर्शन व जीवन-शैली का श्रेष्ठ उदाहरण था और ये सभी ईश्वर की असाधारण कृपादृष्टि के पात्र थे।

जन्मजात वली

हज़रत मख़दूमे ज. की महानता के लक्ष्ण तो उनके जन्म से पुर्व ही परिलक्षित होने लगे थे। फिर जब आपका जन्म हुआ तो आपने रमज़ान मास में व्रत की अवधि में स्तनपान कभी नहीं किया। आपके स्तनपान की अवधि में एक बार 29 रमज़ान को आकाश बादल भरा था, लोग सामान्य रूप से चाँद न देख सके। कारणवश चाँद दिखने के सम्बन्ध में मतभेद हुआ। प्रात: लोग हज़रत मख़दूमे जहाँ के पिता के पास अपने मतभेद के निदान के लिए पहुँचे कि रोज़ा रखा जाए या नमाज़े ईद की तैयारी की जाए? उसी क्षण घर के भीतर से दाई यह समाचार लाई कि नवजात शिशु ने आज भी दूध नहीं पिया है।

हज़रत मख़्दूमे जहाँ के पिताश्री ने लोगों से कहा कि आप लोग रोज़ा रखें और दाई से कहा कि बच्चे को मत छेड़ो वह रोज़े से हैं।

पवित्र लालन पालन

हज़रत मख़्दूमे जहाँ की माताश्री न केवल एक महापुरुष की पुत्री और एक सूफ़ी संत की पत्नी थीं बल्कि वे स्वंय भी एक आदर्श महिला और ईशभक्ति में लीन थीं। उन्हें भी हज़रत मख़्दूमे जहाँ के असाधारण भविष्य का भलीभाँति आभास था, इसीलिए उन्होंने भी आपके लालन पालन में विशेष सतर्कता और पवित्रता का ध्यान रखा यहाँ तक कि कभी भी बिना वज़ू किए आपको स्तनपान नहीं कराया।

एक दिन आपकी माताश्री आपको पालने में अकेला छोड़कर पड़ोस में गई जब लौटीं तो एक अजनबी व्यक्ति को देखा कि वह पालने के पास बैठे हैं और धीरे-धीरे पालना भी हिला रहे हैं। यह देखकर माताश्री भयभीत हो उठीं। उसी क्षण वह अजनबी व्यक्ति आखों से ओझल हो गए। जब आप भयमुक्त हुईं और अपने पिताश्री को इस बात की जानकारी दी तो उन्होंने कहा - "डरो मत वह **ख़्वाजा खिज़्र** थे, वही पालने को हिला रहे थे और बच्चे की सुरक्षा कर रहे थे, तुम्हारा लड़का महापुरुष होगा, ख़्वाजा खिज़्र मुझसे कह कर गए हैं कि तुम्हारी बेटी बच्चे को अकेला छोड़ कर गई, ऐसा नहीं होना चाहिये क्योंकि इसमें बच्चे की असुरक्षा की आशंका है।"

प्रारम्भिक शिक्षा

हज़रत मख़्दूमे जहाँ की प्रारम्भिक शिक्षा अपने माता पिता के संरक्षण में हुई। फिर मनेर शरीफ़ में हज़रत शाह रुकनुद्दीन मरग़ीनानी से भी कुछ मौलिक शिक्षा प्राप्त हुई। इस सम्बन्ध में कोई विशेष या विस्तृत विवरण प्राप्त नहीं होता है।

हज़रत मख़्दूमे जहाँ स्वंय स्पष्ट कहते हैं कि:

"मुझे बचपन में गुरुओं ने कुछ पुस्तकें कन्ठस्थ

करार्इ जैसे मसादिर, मिफ़्ताहुल्लुग़ात वैग़रह, मिफ़्ताहुल्लुग़ात बीस भाग की पुस्तक होगी जिसको कन्ठस्थ कराया गया और उसे बार-बार मुझे बिना देखे सुनाना पड़ता।''

मौलाना अशरफ़ुद्दीन अबूतवामा

उस काल में जिन व्यक्तियों की शैक्षणिक महानता और विद्वता को पूरी इस्लामी दुनिया स्वीकारती थी उनमें एक महत्वपूर्ण नाम मौलाना अशरफ़ुद्दीन अबूतवामा का भी था। वे उस काल की सभी प्रचलित विद्याओं में निपुण थे। न केवल धार्मिक शिक्षा बल्कि रसायन विज्ञान तथा हीमिया एवं सीमिया नामी विज्ञान के भी पंडित थे। वे सुल्तान बलबन (1228-1281) के शासनकाल में बुख़ारा से दिल्ली आए थे। सामान्य जनता, दरबारी, सामन्त और राजा सब आपसे श्रद्धा रखते थे और आपका उनपर अच्छा प्रभाव था। हज़रत मख़दूमे जहाँ आपकी चर्चा करते हुए कहते हैं:

''मौलाना अशरफ़ुद्दीन अबूतवामा भारत के विद्वानों में बहुत प्रसिद्ध थे यहाँ तक कि उनकी विद्वता में किसी को भ्रम न था। आप रेशमी पगड़ी और इज़ारबन्द प्रयोग में लाते थे। आपने ऐसी चीज़ें लिखीं कि दूसरे विद्वानों को भी इसकी पैरवी करनी चाहिए।''

मौलाना की असामान्य लोकप्रियता को देखकर स्वंय दिल्ली के सुल्तान को भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि मौलाना राजपाट पर अपना अधिपत्य जमा लें, इसी कारणवश एक बहाना बना कर मौलाना को राजधानी छोड़ सोनारगाँव जाने के लिए सहमत करा लिया। मौलाना की दूरदर्शिता सब समझ रही थी लेकिन सुल्तान के आदेश का पालन करने को उचित समझ कर सोनारगाँव की ओर प्रस्थान किया और मार्ग में मनेर में विश्राम के लिये रुके।

सोनारगाँव प्रस्थान

हज़रत मख़दूमे जहाँ की आयु 10 या 12 साल थी कि मौलाना अशरफुद्दीन अबुतवामा मनेर में रुके। हज़रत मख़दूमे जहाँ भी उनकी प्रशंसा सुन दर्शन के लिए सेवा में गए और दिल ही दिल में यह निर्णय किया कि इनकी सेवा में धर्मज्ञान की पूर्णरूपेण प्राप्ति की जा सकती है। हज़रत मौलाना अबुतवामा की दृष्टि से भी किशोर मख़दूमे जहाँ की मेधा और विद्या-प्रेम छिपा न रहा और दोनों ने एक दूसरे को स्वीकार करने का मन बना लिया। हज़रत मख़दूमे जहाँ के माता-पिता के दिल में भी अपने होनहार पुत्र के लिए उज्जवल भविष्य की जैसी कामना थी उसकी पूर्ति के लिए इससे उत्तम उपाय नहीं था।

मौलाना अबुतवामा ने जब मनेर से सोनारगाँव की ओर प्रस्थान किया तो उनके साथ नवयौवन में पदार्पन कर रहे हज़रत मख़दूमे जहाँ भी बड़ी प्रसन्नता के साथ उनके शिष्यों में सम्मिलित होकर साथ-साथ चले।

सोनारगाँव (ज़िला नारायणगंज) वर्तमान बंग्लादेश में उस मार्ग पर है जो ढाका से चटगाम को जाता है। उस काल में दो शताब्दियों तक इस स्थान की महत्ता रही। अज़ीम शाह सिकन्दर के पुत्र ने यहीं से विद्रोह और स्वशासन का झण्डा उठाया और उसने यहीं से फ़ारसी भाषा के विख्यात ईरानी सूफ़ी कवि हाफ़िज़ शीराज़ी को बंगाल पधारने का निमंत्रण दिया था।

ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति

सोनारगाँव में हज़रत मख़दूमे जहाँ मौलाना अबूतवामा की सेवा में रात दिन एक करके शिक्षा की प्राप्ति में जुट गए लेकिन इस तन्मयता के बावजूद तप और साधना को भी त्यागा नहीं और लगातार तीन-तीन दिनों का व्रत रख कर अपने ब्रह्मचर्य जीवन को सार्थक बनाते रहे।

मौलाना अशरफुद्दीन अबुतवामा के गुरुकुल में खाने के समय सभी छात्र एकत्र होते, दस्तरख़्वान बिछता और स्वंय मौलाना अबुतवामा पधारते एवं सब साथ मिलकर भोजन करते। हज़रत मखदूमे जहाँ कुछ दिनों तक तो इस नियम का पालन कर भोजन करते रहे, लेकिन इस नियम के पालन में समय कुछ अधिक नष्ट होता है, ऐसा देखकर हज़रत मखदूमे जहाँ ने दस्तरख़्वान पर उपस्थित होना छोड़ दिया। मौलाना का आप पर विशेष ध्यान रहता था, दस्तरख़्वान पर उन्हें न देखकर जब आपको ढूंढा गया तो आपने अपने अध्ययन के लिए अधिक समय की आवश्यकता के कारण दस्तरख़्वान पर अपनी उपस्थिति से स्वंय को मुक्त रखने की प्रार्थना की। मौलाना ने आपका खाना अलग रखने का निर्देश दिया।

लगभग 17 वर्ष हज़रत मखदूमे जहाँ ने मौलाना अबूतवामा की सेवा में सोनारगाँव में गुज़ारे। इस अवधि में धार्मिक ज्ञान और विज्ञान की सभी शाखाओं में शीर्षस्थ शिक्षा प्राप्त की। तफ़सीर (पवित्र कुरआन की व्याख्या), हदीस (पैग़म्बर ह रत मुहम्मद की वाणी) फ़िक़्ह (जीवन निर्वाह का इस्लामी विधान), उसूले फ़िक़्ह (कुरआन और हदीस में विधि विधान की पहचान और उनके कर्यान्वयन के लिए उनके समझने की विधि), तस्व्वुफ़ (सूफ़ीवाद) इत्यादि ज्ञान शाखाओं में आसाधारण परिश्रम और घोर अध्ययन के बाद इन सभी क्षेत्रों में मील का पत्थर और प्रकाश-पुंज बन गए।

शुभ विवाह

शिक्षा प्राप्ति, अध्ययन और शोध में तल्लीन रहने के कारण आपका ब्रह्मचर्य जीवन तो सफल हो गया, परन्तु एक ऐसे रोग के लक्षण परिलक्षित होने लगे, जिसके निदान स्वरूप हकीमों के परामर्शानुसार आपने गृहस्थ जीवन में पदार्पण किया और आपके गुरु मौलाना अबूतवामा की सुपुत्री बीबी बहू बादाम से गुरु की परम अभिलाषा के अनुसार शुभ विवाह सम्पन्न हुआ। आपकी इन्ही पत्नी से वहीं सुनार गाँव में एक पुत्र का जन्म हुआ जिनका नाम ज़कीउद्दीन रखा गया।

(10)

मनेर वापसी

पठन-पाठन के सम्पूर्ण काल में अपने घर से आने वाले किसी पत्र को भी हज़रत मख़्दूम जहाँ ने केवल इस लिए खोल कर नहीं पढ़ा कि पता नहीं किस समाचार से घर की याद सताने लगे और पढ़ने लिखने से दिल उचाट हो जाए। जब सोनारगाँव आना सार्थक हो गया और स्वंय गुरु ने सात बार आपकी यह कहते हुए परिक्रमा कर डाली कि:

"तुम्हारी ऐसी हिम्मत पर मैं बलिहारी जाऊँ !"

तब आपने उस थैली को खोला, जिस में घर से आने वाले सारे पत्र संजो कर रखे हुए थे। प्रथम पत्र में ही पिताश्री हज़रत मख़्दूम कमालुद्दीन यहया मनेरी के स्वर्गवास हो जाने का समाचार मिला। इस समाचार को पढ़कर आप चिंतित हो उठे और माताश्री की याद ने आपको व्याकुल कर दिया। प्रिय गुरु से आज्ञा ली और अपने अल्पायु पुत्र के साथ मनेर की ओर प्रस्थान किया।

मनेर शरीफ़ पहुँच कर कुछ दि. नाताश्री के चरणों में बिताए परन्तु जैसी शिक्षा-दीक्षा आपने ग्रहण की थी, उसके फलस्वरूप लक्ष्य सांसारिक एश्वर्य या शाही नौकरी या क़ाज़ी, मुफ़्ती बनना नहीं था बल्कि एकमात्र सर्वशक्तिमान, सबके सृष्टिकर्ता और पालनहार अल्लाह की तलाश, जिज्ञासा, उसकी निकटता और सेवा की ऐसी ज्वाला हृदय में भड़क चुकी थी कि संसार के किसी कार्य में कदापि मन नहीं लगता था और आँखें हर समय किसी ऐसे गुरु, पीर, शैख़ और मुर्शिद को ढूंढती रहती थीं जो इस परम लक्ष्य की प्राप्ति करा सकें।

इसी आशय से एक रोज़ अपनी माताश्री के चरणों में अपने अल्पायु पुत्र को यह कहते हुए रखा कि:

"इसको मेरे स्थान पर स्वीकार कीजिए और मुझे आज्ञा दीजिए कि जहाँ चाहूँ जाऊँ बल्कि यह समझ लीजिए कि शरफ़ुद्दीन मर चुका।"

मख़दूमे जहाँ और दिल्ली

माताश्री स्वंय ईशभक्ति में लीन थीं, उन्होंने शुभ कार्य में आगे बढ़ने के लिए अपने प्रियतम पुत्र को प्रसन्नता के साथ आज्ञा दी। बड़े भाई शेख़ जलीलुद्दीन भी साथ चले। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने दिल्ली की ओर कूच किया। दिल्ली तब अल्लाह वालों की नगरी कहलाती थी, सल्तनत की राजधानी होने के साथ-साथ वहाँ सुल्तानुल मशाएख़ ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया की उपस्थिति से मानों अध्यात्मिक राजधानी का भी रूप ले चुकी थी।

दिल्ली पहुँच कर हज़रत मख़दूमे जहाँ वहाँ के आलिमों की सभाओं में सम्मिलित हुए, सूफ़ी संतों से भेंट की और सभी का गहराई से अवलोकन कर अधिकांश से असंतुष्ट ही रहे और उन लोगों के बारे में अपनी राय इस तरह दी कि:

" अगर संत की निशानी यही है तो मैं भी एक संत हूँ।"

हज़रत शरफ़ुद्दीन बूअली शाह क़लन्दर पानीपती की महानता का सभी दम भरते थे। हज़रत मख़दूमे जहाँ उनकी शरण में गए लेकिन बात नहीं बनी और यह कहते हुए वापिस हुए कि:

"यहाँ आकर संत से भेंट तो हुई लेकिन इनकी दशा कदापि ऐसी नहीं कि दूसरों का मार्गदर्शन कर सकें।"

फिर हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया की सेवा में बड़े आदर और श्रद्धा के साथ हाज़िर हुए उस समय ख़्वाजा साहब के समक्ष बड़े-बड़े बुद्धिजीवी और विद्वान इकट्ठा थे और किसी विषय पर चर्चा चल रही थी। इस चर्चा में श्रोता भी भाग ले रहे थे, मख़दूमे जहाँ ने भी चर्चा में भाग लेते हुए बड़े सटीक उत्तर दिए। हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया ने भी आपका आदर सत्कार किया।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अब अपना लक्ष्य और दिल्ली आने का कारण बताया तो ख़्वाजा साहब ने उनका मार्गदर्शन करने के बजाय पान की गिलौरियों से भरी थाली उनके सामने रख दी और

लोगों से कहा:

"वास्तव में यह पक्षी विलक्षण है, लेकिन मेरे जाल के भाग्य का नहीं।"

सूफ़ी संतों के यहाँ पान बढ़ाना विदा करने का चिह्न है। मख़दूमे जहाँ पान स्वीकार कर जब निराश लौटने लगे तो ख़्वाजा साहब ने उनसे कहा:

"मेरे भाई शरफ़ुद्दीन आपके मार्गदर्शक और गुरु होने का गर्व प्रकृति ने भाई नजीबुद्दीन के भाग्य में लिख दिया है आप वहाँ जाएं।"।

सिलसिलए फ़िरदौसिया में प्रवेश

ख़्वाजा साहब की बारगाह से हज़रत मख़दूमे जहाँ बड़े निराश होकर लौटे, बड़े भाई ने ख़्वाजा नजीबुद्दीन की शरण में चलने का परामर्श दिया तो बड़ी हताशा के साथ कहने लगे, जो दिल्ली का क़ुतुब और सबसे बड़ा संत था उसने पान देकर लौटा दिया। अब दूसरों के पास क्या जाऊँ। लेकिन बड़े भाई के बार-बार कहने पर आप हज़रत ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी की शरण में चल पड़े।

मार्ग में कुछ पान पगड़ी में रख लिये और कुछ हाथ में लेकर खाते हुए आगे बढ़े यहाँ तक कि ख़्वाजा नजीबुद्दीन के द्वार तक जा पहुँचे। अभी ठीक से समीप भी नहीं पहुँचे थे कि दूर से ही ख़्वाजा नजीबुद्दीन की एक झलक देखी तो शरीर काँप उठा और एक अपरिचित भाव से विभोर हो उठे, हज़रत मख़दूमे जहाँ को लगा कि ऐसा तो किसी भी संत का सामना करने पर नहीं हुआ था। आश्चर्य-चकित रह गए। उसी दशा में जब समीप पहुँचे तो हज़रत ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी ने आपको सम्बोधित किया और कहा:

"मुँह में पान, पगड़ी में पान और हाथ में भी पान

और उस पर बोली यह कि मैं भी संत हूँ।''

आप ने तुरंत पान निकाल फेंका, आश्चर्य-चकित, भावविभोर और निस्तब्ध हो बैठे, कुछ ही क्षणों में दशा सुधरी तो ख़्वाजा नजीबुद्दीन से बड़े आदर और श्रद्धाभाव के साथ अपने मार्गदर्शन में स्वीकार करने की प्रार्थना की। हज़रत ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी ने आपको मुरीद किया और अपने आध्यात्मिक उत्तराधिकार और दूसरों के मार्गदर्शन का लिखित आदेश (खिलाफ़तनामा) यह कहते हुए सौंपा-

''12 वर्ष पूर्व से यह तुम्हारे लिए लिख कर रखा हुआ है।''

आपका आश्चर्य और बढ़ा फिर बड़ी श्रद्धा के साथ घबरा कर विनती करने लगे कि:

> ''अभी तक न तो आपकी सेवा का ही कोई अवसर प्राप्त हुआ है और न अभी आपसे संतजीवन की दीक्षा ही ली है, जिस अभूतपूर्व कार्य का आदेश हो रहा है उसे मैं कैसे पूरा कर सकूँगा।''

पीरो मुर्शिद ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी ने यह कहते हुए सान्तवना दी कि:

> ''यह आज्ञा पत्र (इजाज़त नामा) हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आदेश से लिखा गया है, पैगम्बर की अमर ज्योति से स्वंय तुम्हारी दीक्षा होगी। मेरे गुरुओं की आध्यात्मिक शक्ति प्राय: हर घड़ी अपने कार्य में लगी हुई हैं और अपने कर्त्तव्यों से भली-भाँति परिचित है, तुम को दीक्षा की क्या चिन्ता?''

फिर संत जीवन से सम्बन्धित कुछ लिखित निर्देश अपनी पवित्र पोशाक के साथ सौंप दिए और कहा:

> ''जाओ, मार्ग में अगर कुछ सुनो तो कदापि वापस न होना''

सिलसिलए फ़िरदौसिया

सूफ़ी संतों में जो महान व्यक्तित्व और उत्कृष्ट उपलब्धियों के स्वामी हुए हैं, उनके मुरीदों और जुड़ने वालों ने स्वंय को उनके नाम या जन्मस्थान से जोड़ा और उनका मार्ग भी उसी सम्बन्ध से प्रसिद्ध हुआ उदाहरण स्वरूप- शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी का सिलसिला क़ादरिया कहलाया और उससे जुड़ने वाले क़ादरी कहलाए। शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी का सिलसिला सुहरवर्दिया कहलाया और इस सिलसिले में सम्मिलित होने वाले सुहरवर्दी कहलाए, ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़शबन्द का सिलसिला नक़्शबन्दिया कहलाया और इस सिलसिले वाले नक़शबन्दी कहलाते हैं।

सिलसिलए चिश्तिया की ही भाँति सिलसिलए फ़िरदौसिया में भी सबसे पहले फ़िरदौसी कौन कहलाए इसपर मतभेद है। कुछ ने ख़्वाजा नजीबुद्दीन कुबरा के सम्बन्ध में लिखा है कि उनके शैख़ (अध्यात्मिक गुरु) हज़रत अबूनजीब सुहरवर्दी ने उन्हें मशाएख़े फ़िरदौस में गिना इसीलिए उनके मुरीदीन ने स्वंय को फ़िरदौसी लिखा परन्तु कुछ का विचार है कि हज़रत ख़्वाजा रुकनुद्दीन फ़िरदौसी सर्वप्रथम फ़िरदौसी प्रसिद्ध हुए।

सिलसिलए फ़िरदौसिया भी सिलसिलए सुहरवर्दिया की ही भाँति हज़रत शैख़ अबूनजीब सुहरवर्दी (नि:562 हि०) के शिष्यों से प्रसारित हुआ। हज़रत अबू नजीब सुहरवर्दी के दो ख़लीफ़ा अति महत्वपूर्ण सूफ़ी संत गुज़रे हैं। पहले हज़रत शैख़ुश्शयूख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (नि: 532हि०),जिनसे सिलसिला सुहरवर्दिया प्रारंभ हुआ और दूसरे हज़रत शैख़ुलइस्लाम नजमुद्दीन कुबरा वलीतराश (नि:610 हि०) जिनका सिलसिला कुबरवीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ, इसी कुबरवीया सिलसिले की एक शाखा फ़िरदौसिया के नाम से विख्यात हुई। सिलसिलए फ़िरदौसिया की संगतावली (शजरा) इस प्रकार पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से जा मिलती है।

1. हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम

2. हज़रत अली बिन अबीतालिब
3. हज़रत इमाम हुसैन
4. हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन
5. हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र
6. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़
7. हज़रत इमाम मूसा काज़िम
8. हज़रत इमाम अली रज़ा
9. हज़रत ख़्वाजा मारूफ़ करख़ी
10. हज़रत ख़्वाजा सिर्री सक़ती
11. हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी
12. हज़रत ख़्वाजा मिमशाद उल्व दीनौरी
13. हज़रत ख़्वाजा अहमद स्याह दीनौरी
14. हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अलमारूफ़ ब अमूवा
15. हज़रत ख़्वाजा वजीहुद्दीन अबूहफ़्स
16. हज़रत ख़्वाजा ज़ियाउद्दीन अबूनजीब सुहरवर्दी
17. हज़रत ख़्वाजा नजमुद्दीन कुबरा वलीतराश
18. हज़रत ख़्वाजा सैफ़ुद्दीन बाख़रज़ी
19. हज़रत ख़्वाजा बदरुद्दीन समरक़न्दी
20. हज़रत ख़्वाजा रुकनुद्दीन फ़िरदौसी
21. हज़रत ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी
22. हज़रत मख़दूम शेख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी फ़िरदौसी।

इस प्रकार पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा से हज़रत मख़दूमे जहाँ तक 21 पीढ़ियाँ गुजरीं और स्वंय मख़दूमे जहाँ 22 वीं पीढ़ी में थे।

इस फ़िरदौसी सिलसिले के सूफ़ी संतों में सर्वप्रथम भारत आनेवाले हज़रत बदरुद्दीन समरक़न्दी हैं। उनका मज़ार शरीफ़ दिल्ली में फ़िरोज़ शाह कोटला के पीछे संगोला नामक स्थान में स्थित है। उनके शिष्य हज़रत रुकनुद्दीन फ़िरदौसी के सौतेले भाई और शिष्य हज़रत नजीबुद्दीन फ़िरदौसी की दरगाह दिल्ली के महरौली में प्रसिद्ध है।

बिहिया तथा राजगीर में तप और साधना

अपने पीरो मुर्शिद शैख़ नजीबुद्दीन फ़िरदौसी के आदेशानुसार मख़दूमे जहाँ अपने बड़े भाई के साथ दिल्ली से वापस हुए तो मन असाधारण रूप से व्याकुल था, हृदय में दुख और पीड़ा इस प्रकार समाई हुई थी कि दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती थी दिल्ली से मातृभूमि की ओर अभी दो पड़ाव ही गए थे कि पीरोमुर्शिद शैख़ नजीबुद्दीन के स्वर्गवास का समाचार सुना लेकिन निर्देशानुसार आगे बढ़ते गए।

चलते-चलते बिहिया के निकट पहुँचे तो घना वन सामने था। उसी समय एक मोर की पीड़ा भरी आवाज़ सुनकर आपकी पीड़ा और ईश-वियोग चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया और इससे पहले कि साथ वाले कुछ समझें आप एकाएक जंगल में दौड़ते चले गए और आँखों से ओझल हो गए। बड़े भाई और दूसरे साथी आपको खोज कर थक गए लेकिन आपका पता न चल सका। अन्ततः वे पवित्र वस्तुएं और इजाज़तनामा जो शैख़ नजीबुद्दीन से मख़दूमे जहाँ को प्राप्त हुआ था उसे सम्भाल कर मनेर वापस लौट आए और माताश्री की सेवा में सारी व्यथा सुनाई। माताश्री ने संयम बरता और प्रिय पुत्र को अल्लाह पाक की सुरक्षा में सौंपा।

मनाक़िबुल असफ़िया नामक पुस्तक के अनुसार बिहिया के जंगल में आपने 12 वर्ष इस प्रकार गुज़ारे कि न कोई आपको पहचानता था और न ही आपको किसी की चिन्ता और चेतना थी।

एक बार उनको किसी व्यक्ति ने घने जंगल में देखा कि एक वृक्ष पर हाथ रखे इस प्रकार तल्लीन खड़े हैं कि चीटियाँ मुँह में आती और जाती हैं और उनको अपनी इस दशा की कोई ख़बर नहीं।

शाहजहाँ काल के नामी सूफ़ी संत मौलाना अज़ीज़ुल्लाह हुसामुद्दीन बनारसी अपनी हस्तलिखित पुस्तक गौहरिस्तान में लिखते हैं कि अपने तप काल में हज़रत मख़दूमे जहाँ के 12 वर्ष ऐसे गुज़रे कि कभी आप को पवित्रता प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

जंगल में तप और साधना में व्यतीत हुए वर्षों में कश्मीर के हवाले से जगप्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत मीर सैयद अली हमदानी (नि:786 हि०) भी भारतदर्शन और सूफ़ी संतों से मिलने की कामना से जब इधर से गुजरे तो मखदूमे जहाँ की सेवा में भी 6 महीने व्यतीत किए। इन 6 महीनों में वे मखदूमे जहाँ को आवश्यक मानवीय और प्राकृतिक आवश्यकताओं से सम्पूर्णत: निस्पृह पाकर आश्चर्यचकित रह गए और उनकी श्रद्धा में डूब गए। फिर तो ख़ूब लाभान्वित हुए और ख़िलाफ़त भी प्राप्त की।

इसी बिहिया के जंगल में एक दिन मखदूमे जहाँ के सामने से चुल्हाई अपनी बाछी चराते हुए गुजरे, हज़रत मखदूमे जहाँ चुल्हाई के पास गए और कहा कि मुझे थोड़ा दूध अपनी गाय से दूह कर दो, चुल्हाई कहने लगा कि अभी ये बछिया है, इसको दूध नहीं होता पर मखदूम जहाँ न माने। बार-बार एक ही उत्तर देते-देते चुल्हाई भी क्रोध में आ गए और केवल इसलिए बछिया को दूहने बैठ गए कि कदाचित जो बात कहने से समझ में नहीं आरही है वह करके दिखा देने से समझ में आ जाए। लेकिन हुआ इसके विपरीत, बछिया ने इतना दूध दिया कि बर्तन भर गया, फिर क्या था चुल्हाई चरणों में गिर पड़े। तन मन धन सब आप पर वार दिया और आपकी संगत में हो लिए। आज भी उनका मज़ार हज़रत मखदूमे जहाँ के मज़ार से समीप ही है।

बिहिया में अब जंगल तो न रहा परन्तु मखदूमे जहाँ का एक हुजरा अब तक विद्यमान है और हर धर्म और विश्वास के लोग बड़ी आस्था और श्रद्धा के साथ इस पावन स्थली पर श्रद्धा-सुमन अर्पित करने आते हैं।

कहते हैं कि मखदूमे जहाँ इस स्थान पर तल्लीन थे कि जगदीशपूर का जमींदार वहाँ से गुज़रा। पहले तो उसने आपको मृत समझा परन्तु जब समीप जा कर देखा तो उसे आपके जीवित होना का आभास हुआ। वह आपको उठा कर अपने घर ले गया। बड़ी

"सिद्ध पुरुष की पहचान क्या है?"

हज़रत मख़्दूमे जहाँ ने कहा:

"सिद्ध पुरुष की पहचान यह है कि अगर वह इस जंगल को कहे कि सोना होजा तो सोना हो जाए।"

आपका यह कहना था कि सम्पूर्ण जंगल सोना हो गया। फिर हज़रत मख़्दूम ने जंगल को सम्बोधित कर तुरंत कहा:

"तुम अपनी प्रकृति पर रहो मैं तो एक बात कह रहा था।"

यह सुनते ही जंगल पूर्ववत हो गया।

राजगीर में वह स्थान, जहाँ मख़्दूमे जहाँ ईशजाप में तल्लीन रहा करते थे और जहाँ पर ढेर सारे भेद आप पर खुले थे, आज भी सुरक्षित है और 'मख़्दूम कुण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ हल्के गर्म पानी का झरना है और ऊपर आपके इबादत की जगह और उससे कुछ सीढ़ियाँ और ऊपर जाने पर वह पवित्र स्थान, जहाँ हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से आपकी भेंट हुई थी आज भी उसी तरह पवित्र और पावन है और संसार के मोह-माया से मुँह मोड़कर सर्वशक्तिमान पालनहार की ओर लोगों का ध्यान खींचता रहता है।

बिहारशरीफ़ आगमन

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के मुँह से हज़रत मख़्दूमे जहाँ की प्रशंसा और प्रतिष्ठा का समाचार ढका छिपा न था। विशेषकर उनके शिष्यों में इसकी चर्चा रहती थी। बिहारशरीफ़ में भी ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्यों की अच्छी संख्या थी। जब हज़रत मख़्दूमे जहाँ के राजगीर के वनों में दिखने का समाचार मिला तो ख़्वाजा साहब के शिष्यों ने विशेष रूप से राजगीर के पहाड़ों में आपकी खोज-बीन प्रारंभ की।

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के एक मुरीद ने जिन्हें ख़िलाफ़त का भी सौभाग्य प्राप्त था और जिनका नाम भी मौलाना निज़ामुद्दीन मौला था, बड़े प्रयास के बाद हज़रत मख़्दूमे जहाँ को

राजगीर के वन में खोज ही लिया और बराबर सेवा में जाने लगे। फिर उन्हीं के निवेदन और मिलने के लिए वन में आनेवालों की कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए, हज़रत मखदूमे जहाँ शुक्रवार के शुक्रवार जुमा की नमाज़ में बिहारशरीफ़ आने के लिए सहमत हो गए। हज़रत मखदूमे जहाँ बिहारशरीफ़ की तत्कालीन जामा मस्जिद में जुमा की नमाज़ पढ़ने के लिए पधारते तो कुछ ही देर ठहरते और सत्संग तथा प्रवचन के बाद फिर राजगीर लौट जाते।

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का निज़ामी निर्माण

जुमा की नमाज़ के बाद हज़रत मखदूमे जहाँ के सत्संग में बैठने वालों को इस बात की चिन्ता हुई कि अल्प समय और अनुपयुक्त स्थान के कारण मखदूमे जहाँ जैसे दुर्लभ व महान व्यक्तित्व के सत्संग से संतुष्टि नहीं हो पा रही है तो जिस जगह आज तक ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का भवन है, उसी स्थान पर हज़रत निज़ामुद्दीन मौला ने एक सामान्य सा खपड़पोश ढाँचा खड़ा किया। उसी घास-फूस से ढकी कच्ची ज़मीन पर हज़रत मखदूमे जहाँ के चरणों में जुमा की नमाज़ के बाद सत्संग सजने लगा। हज़रत मखदूमे जहाँ कभी-कभी जुमा की नमाज़ के बाद यहाँ एक दो दिन तक रुक जाते और फिर पहाड़ियों की ओर गुम हो जाते।

कुछ समय इसी तरह बीता फिर उन्हीं निजामुद्दीन मौला ने दिन-प्रतिदिन श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या और उनकी कठिनाइयों को ध्यान में रखकर अपनी पवित्र जमा-पूँजी से उसी सामान्य से ढाँचे को एक सामान्य भवन का रूप दे दिया। ऐसा अनुमान है कि यह निर्माण 721 हि० से 724 हि० के मध्य किसी समय हुआ होगा। भवन तैयार हुआ तो भोज का भी आयोजन किया और इस अवसर पर सामान्य जनता और गणमान्य व्यक्तियों सभी को आमंत्रित किया। फिर हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के बिहारशरीफ़ वासी शिष्यों ने बड़े आग्रह और अनुरोध के बाद हज़रत मखदूमे जहाँ को इस भवन में

निवास कर लोगों की दीक्षा और मार्गदर्शन के लिए राज़ी कराया। हज़रत मख़्दूमे जहाँ ने न चाहते हुए भी सब की इच्छाओं का आदर किया। परन्तु जबतक आपकी शरीरिक क्षमता आज्ञा देती रही आप कभी लम्बी और कभी संक्षिप्त यात्रा हेतु निकलते रहे। इसी इमारत में आपके उपदेशों को सुन सुन कर आपके प्रिय मुरीद ज़ैन बदरे अरबी ने प्रसिद्ध उपदेशावली **'मादेनुल मआनी'** संग्रहित की। यह उपदेशावली आप के उपदेशों का पहला संग्रह है, जो बहुमूल्य तथ्यों और अनुपम विचारों पर आधारित है।

ख़ानक़ाहे मुअज़्ज़म का राजकीय निर्माण

आठवीं शताब्दी हिजरी की चौथी दहाई में हज़रत मख़्दूमे जहाँ की प्रसिद्धी, महानता और लोकप्रियता तुगलक़ साम्राज्य की सीमाओं को लाँघ गई। सामान्य जनता से लेकर सम्राट तक आपकी ओर आकर्षित हुए। यहाँ तक कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ भी आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा सुनते-सुनते आपकी सेवा के लिए आतुर हुआ और बिहार में अपने सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी मजदुल मुल्क मुक़तए बिहार के पास बुलग़ारिया से मंगाया नमाज़ और इबादत के लिए बिछाने वाला एक मुसल्ला इस आदेश के साथ भेजा कि इस बुल्ग़ारी मुसल्ले को मख़्दूमे जहाँ की सेवा में मेरी ओर से भेंट करो, उनके लिए एक ख़ानक़ाह (आश्रम) का निर्माण कराओ और उस ख़ानक़ाह के खर्चे के लिए परगना राजगीर मख़्दूमे जहाँ को भेंट करो और अगर वे इसे स्वीकार न करें तो बलात् स्वीकार कराओ। यह घटना 736 हि०/1334 ई० से 737 हि०/1335 ई० के मध्य की है।

मजदुल मुल्क मुक़तए बिहार के लिए यह बड़ी कठिन घड़ी थी। वह पहले से ही मख़्दूमे जहाँ का भक्त था और उसीके परामर्श से निज़ामुद्दीन मौला ने अपनी पवित्र जमा-पूँजी से जो भवन तैयार कराया था, उसमें बैठने को तो मख़्दूमे जहाँ बड़े प्रयास के बाद तैयार हुए थे। इसलिए सुल्तान की भेंट उनके लिए स्वीकार्य होगी इसकी

आशा नहीं के बराबर थी।

इसी दुविधा में हताश मजदुल मुल्क, हज़रत मखदूमे जहाँ की शरण में आए और अपना फ़ैसला मखदूम साहब पर छोड़ दिया। हज़रत मखदूमे जहाँ की दया और करुणा ने यह उचित नहीं समझा कि आदेश का पालन न होने के कारण मजदुल मुल्क पर कोई दण्डनीय कार्यवाही हो। इसीलिए स्वंय अपनी अन्तरात्मा पर राजकीय जागीर की पीड़ा और कड़वाहट को स्वीकार कर लिया। फिर तो बड़ी तीव्रता के साथ सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ के आदेश का पालन हुआ।

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का राजकीय निर्माण कैसा हुआ, इसका विस्तृत विवरण तो नहीं मिलता परन्तु मखदूमे जहाँ की उपदेशावलियों में बिखरी सूचनाओं को एकत्र करने से यह आभास होता है कि उस भवन में लंगर ख़ाना, जमाअत ख़ाना, सेहने जमाअत ख़ाना इत्यादि था। इसके अतिरिक्त ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के साथ ही साथ इसके भवन से थोड़ा हट कर हज़रत मखदूमे जहाँ के लिए हुजरा (कोठरी) और रवाक़ (साएबान) का भी निर्माण हुआ।

जब ख़ानक़ाह का निर्माण कार्य पुरा हुआ तो मजदुल मुल्क मुक़तए बिहार ने भोज का आयोजन किया। इसमें सभी लंगरदारों, सूफ़ी संतों और हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्यों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। नवनिर्मित जमाअत ख़ाने के प्रांगण में मजलिसे समा (सूफ़ी परम्परानुसार क़व्वाली की सभा) सजी और हज़रत मखदूमे जहाँ सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ के भेजे हुए बुलग़ारी मुसल्ले पर अपने हुजरे में आसीन हुए। उस विशेष अवसर की एक झलक हज़रत ज़ैन बदरे अरबी ने '**मादेनुल मआनी**' में सुरक्षित कर ली है। एक यात्री संत भी उस ऐतिहासिक आयोजन में सम्मिलित थे। वह क़व्वाली की सभा से उठकर मखदूमे जहाँ की सेवा में आए तो मखदूम साहब ने उनका अभिनन्दन यह कहते हुए किया:

"ये मंज़िल और स्थान तो आप लोगों का है तत्कालीन सम्राट के आदेशों का पालन आवश्यक है। इससे बचना मुश्किल है और मलिक मजदुल मुल्क को सुल्तान की ओर से यह आदेश है कि इसे स्वीकार कराओ और यह सब जो कुछ भी है, उन्हीं संतों का न्योछावर है अन्यथा यह व्यक्ति इसलाम के योग्य भी नहीं फिर मुसल्ले के योग्य क्यों कर हो सकता है।"

मख़दूम के मुख से यह सुन वह पर्यटक संत कहने लगे:

"मख़दूम आपको किसी ने भी ख़ानक़ाह और मुसल्ले के कारण नहीं पहचाना है। आपको जो व्यक्ति भी पहचानता है, सत्य के कारण पहचानता है। हमलोग यहाँ आपकी अन्तःशक्ति और आपकी श्रद्धा के कारण आए हैं। यहाँ आपकी विभुति से इसलाम का सूर्योदय होगा और उसकी किरणों में शक्ति आएगी।"

मख़दूमे जहाँ ने केवल इतना कह कर चुप्पी साध ली कि:

"जो संतों के मुख से निकलता है वही होता है।"

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का वलीउल्लाही निर्माण

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ द्वारा निर्मित ख़ानक़ाह में भवन के अतिरिक्त खुला प्रांगन और काफ़ी फैला हुआ अच्छा-ख़ासा इलाक़ा भी था। ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत बाद में मख़दूमे जहाँ के वंशजों में बंटने के कारण अब ख़ानक़ाह का क्षेत्र बहुत थोड़ा रह गया है। पर अभी भी ख़ानक़ाह और हुजरे के अतिरिक्त पूरब में खुला मैदान मौजूद है जिसके दक्षिणी पूर्वी छोर पर जनाबहुज़ूर सैयद अमीन अहमद फिरदौसी द्वारा निर्मित मस्जिद है और बीच में मुख्य द्वार है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के बाद उनके 12वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम दीवान शाह अली फ़िरदौसी ने सर्वप्रथम ख़ानक़ाह

मुअज़्ज़म के क्षेत्र में निवास करना प्रारम्भ किया और ख़ानक़ाह को सामान्य दिनों में भी आबाद किया। इसीलिए ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का इलाक़ा आपके शुभ नाम से जुड़कर मुहल्ला शाह अली कहलाया।

उन्होंने ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म की खुली ज़मीन पर इमारतें बनवाई और एक विशाल लंगरख़ाना भी संतों और दीन-दुखियों के लिए खोला, परन्तु ख़ानक़ाह का भवन शायद वही तुग़लक़ निर्मित ही रहा।

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के राजकीय निर्माण के लगभग साढ़े चार सौ वर्ष बाद, हज़रत मख़दूमे जहाँ के 21वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह वलीउल्लाह फ़िरदौसी (नि: 1234 हि०/1818-19 ई०) ने बड़े जीवट के साथ ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का नवनिर्माण कराया। उनके द्वारा निर्मित बरामदे, दोनों छोर पर कोठरियाँ, सम्मुख खुला प्रांगण और मजलिसे समा हेतु सेहन में चबूतरा था।

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का नवीनतम निर्माण

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के वलीउल्लाही निर्माण के लगभग 200 वर्षों बाद वर्ष 1996 ई० में हज़रत मख़दूमे जहाँ के 26वें सज्जादानशीन हज़रत सैयद शाह मोहम्मद अमजाद फ़िरदौसी ने इसके नवनिर्माण की नींव रखी और वर्ष 1997 में ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का नव निर्माण पूरा हो गया। बड़ी लागत, अथक परिश्रम, लगन और गहरी सूझबूझ से ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के इस भव्य निर्माण में 26वें सज्जादानशीन के ज्येष्ठ पुत्र और वर्तमान सज्जादानशीन हज़रत मौलाना सैयद शाह सैफ़ुद्दीन फ़िरदौसी का बहुत बड़ा योगदान रहा। मख़दूमे जहाँ के जीवन काल में जिस प्रकार ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के एक मुरीद निज़ामुद्दीन मौला ने ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का निर्माण कराया था उसी प्रकार मख़दूमे जहाँ के 25 वें सज्जादानशीन हज़रत सैयद शाह मोहम्मद सज्जाद फ़िरदौसी के एक प्रिय मुरीद श्री शमसुज़्ज़ुहा फ़िरदौसी साहब वर्तमान नवनिर्माण कराकर धन्य हो गए।

मार्गदर्शन और जन मानस की सेवा

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने इसी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में बैठकर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के स्वर्णिम जीवन का ऐसा जीता जागता उदाहरण जन मानस के सामने रखा कि पाप, ईर्ष्या, राग-द्वेश, बर्बरता, निर्दयता, विषमता इत्यादि का अन्धकार छँटने लगा तथा पुण्य, परोपकार, मानवीयता, सहभागिता और ईशभक्ति का प्रकाश फैलने लगा। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अर्द्ध-शताब्दी से अधिक समय तक स्वंय को सामान्य जनता के प्रति समर्पित रखा। उनके साफ़-सुथरे व्यक्तित्व में एक आदर्श पुरुष के सारे लक्ष्ण और गुण विद्यमान थे। 'मनाक़िबुल असफ़िया', जो मख़दूमे जहाँ के स्वर्गवास के 50 वर्षो के भीतर लिखी गई निकटतम पुस्तक है, के लेखक लिखते हैं:

> ''शैख़ शरफुद्दीन महान धर्म-गुरु थे उनका जीवन जन्म से मृत्यु तक इस प्रकार सुरक्षित था, कि कोई छोटा से छोटा और निम्न से निम्न स्तर का भी पाप उनसे नहीं हुआ। उनके जन्म पूर्व ही उनके माता पिता को उनकी महानता की शुभ सूचना मिलने लगी थी।''

यही कारण था कि आप बिहारशरीफ़ की धरती पर प्रकाश-पुंज की भाँति चमके, जिसका प्रकाश इस उपमहाद्वीप की सीमाओं के पार तक अपनी किरणें बिखेरने लगा। बल्ख़, बुख़ारा, चिश्त, सीसतान, समक़न्द और दूरस्थ क्षेत्रों से भी सच्ची भक्ति, मनमोहक धर्मशिक्षा और चुम्बकीय व्यक्तित्व की खोज करते हुए लोगों के क़ाफ़िले बिहारशरीफ़ पहुँचने लगे और बिहारशरीफ़ मानों छद्म-भक्ति के फैले असीम रेगिस्तान में आत्मिक शांति और सच्ची भक्ति का नख़लिस्तान (मरुउद्यान) बन गया। जो लोग रात-दिन आपकी सेवा में समर्पित थे, उनका कथन है कि उस काल में आपके शिष्यों की

संख्या एक लाख से पार कर गई थी। उनमें 40 व्यक्ति स्पष्ट: पारंगत हो चुके थे और 300 लोग ईशभक्ति में इस प्रकार सिद्धहस्त थे कि उनकी थाह लगाना कठिन था।

प्रात: से शाम तक हज़रत मखदूमे जहाँ कभी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में आसीन रहते तो कभी अपने हुजरे में बैठते और समर्पित देशी और विदेशी छात्रों और सत्यान्वेषियों का जमघट लगा रहता। कुरआन, तफ़सीर, फ़िक़्ह, उसूले फ़िक़्ह, इल्मे-कलाम, तसव्वुफ़ और सदाचार तथा व्यवहार के विषयों पर चर्चा होती, भ्रम दूर किए जाते, समस्याएं हल की जातीं, पापों का प्रायश्चित कराया जाता, महापुरुषों तथा परमात्मा को समर्पित व्यक्तियों की जीवनी सुनाई जाती, जाप और तप का मार्ग दिखाया जाता, मानवीय गुणों का पोषण होता, अमानवीयता से घृणा पैदा कराई जाती।

जो लोग अपने कर्त्तव्यों के निर्वाह के कारण या दूरी के कारण दिन प्रतिदिन इस सत्संग में सम्मिलित नहीं हो पाते और हज़रत मखदूमे जहाँ से पत्राचार के द्वारा शिक्षा और ज्ञानार्जन का निवेदन करते, उनको चिट्ठियों का उत्तर लिखवाया जाता। जो लोग किसी पुस्तक का पाठ लेना चाहते या गहन शिक्षा की इच्छा करते, उन्हें बड़े प्रेम और तन्मयता के साथ शिक्षा दी जाती। पीड़ित और दलित व्यक्तियों की सुनवाई और कल्याण के लिए अधिकारियों और राजाओं के पास अनुशंसा पत्र लिखे जाते और सबसे समय निकाल कर हज़रत मखदूमे जहाँ अपने सगे सम्बन्धियों, शिष्यों और चाहने वालों से मिलने के लिए बिहारशरीफ़ और उसके बाहर भी जाया करते।

यात्रा में भी दिनचर्या वही होती जगह-जगह आप ठहरते, लोगों के क़रीब जाते, उनके दुख-दर्द सुनते, उनके काम आते। सूफ़ी संतों के मज़ारों और मक़बरों पर जाते और वहाँ ध्यानमग्न होकर आत्मलाभ करते। किसी का शुभ समाचार सुनते तो कभी स्वंय जाकर और कभी चिट्ठी के द्वारा अपनी शुभकामना और भेंट भेजते। नवजात

शिशु के जन्म पर अपनी ओर से कपड़े-जोड़े भेजते। दुख का समाचार सुनते तो इस तरह अपना शोक व्यक्त करते कि न केवल दुख दूर होता बल्कि दुखदाता और दुखहरता परमात्मा से निकटता बढ़ती।

वेष-भूषा, खान-पान

हज़रत मखदूमे जहाँ का जीवन अति सादा और सरल था। आप अधिकतर मिर्ज़ई, कुर्ता, तहमद और चादर प्रयोग में लाते थे। सिर पर सूफ़ी संतों की भाँति सामान्य पगड़ी होती, जो संदली रंग की होती थी। दूसरे धर्मगुरुओं की भाँति लम्बा चोगा या असामान्य वस्त्र आप नहीं पहनते थे।

खान-पान सरल और मामूली था। अधिकतर सूखी रोटी, सूखे चावल या सूखी खिचड़ी खाकर कार्यक्षमता को बनाए रखते थे। दिन के समय आपकी निजी रसोई में चुल्हा जलाने की मनाही थी।

एक बार कोई अतिथि पधारे तो आपकी माताश्री ने उनके सत्कार के लिए दिन में चुल्हा जला कर रोटी सालन पकाना चाहा। हज़रत मखदूमे जहाँ को इसकी सूचना नहीं थी। उन्हों ने घर से धुआँ उठते देखा तो घर पहुँचे और माताश्री के सेवा में बड़ी नम्रता के साथ याचना की:

''माताश्री आप मेरा एक निवेदन भी स्वीकार न कर सकीं''

माताश्री ने तुरंत चुल्हा बुझा दिया और आटा और जो कुछ खाने का सामान था, अतिथि के हवाले कर दिया कि किसी के यहाँ पकवा कर खा लें।

आप बराबर कहते थे कि:

''संतों को खाना इस प्रकार खाना चाहिए जिस प्रकार दवा खाई जाती है।''

समकालीन सूफ़ी संतों से आपके सम्बन्ध

हज़रत मखदूमे जहाँ के आदर्श जीवन में समकालीन सूफ़ी-संतों

से मधुर सम्बन्धों का अद्वितीय उदाहरण मिलता है। आपके पत्रों के संग्रह में समकालीन सूफ़ी-संतों, आलिमों, बुद्धिजीवियों और धार्मिक व सरकारी पदों पर आसीन व्यक्तियों की सुन्दर चर्चा देखने को मिलती है। आप्के काल में आपकी व्यापक दृष्टि और मधुर स्वाभाव ने बिहारशरीफ़ को एक महान सूफ़ी केन्द्र के रूप में परिवर्तित कर दिया था। देश-विदेश के सूफ़ी-संत कभी अपनी जिज्ञासा और श्रद्धा से और कभी मख़दूमे जहाँ के आमंत्रण पर बिहारशरीफ़ पधारते रहते थे। उनमें से बहुत सारे ऐसे भी थे, जिन्होंने हज़रत मख़दूमे जहाँ की इच्छानुसार बिहारशरीफ़ या इसके आस पास अपनी ख़ानक़ाह स्थापित कर मार्गदर्शन की जिम्मेवारी स्वीकार कर ली थी।

आपके संकलित प्रवचनों में दूरस्थ प्रदेशों और विदेश से आने वाले संतों, संत पुत्रों और संत प्रेमियों की बार-बार चर्चा मिलती है। विभिन्न प्रकार के सूफ़ी-संत आते और हज़रत मख़दूमे जहाँ के सत्संग में सम्मिलित होकर अपना आना सफल कर जाते या फिर मख़दूम की नगरी में हमेशा के लिए रह जाते।

शैख़ इसहाक़ मग़रबी

आपके पूर्वज पश्चिम के थे। पूर्वजों में से एक ईरान में आ कर बस गए थे। आपके पिता ख़्वाजा अबू इसहाक़ मग़रबी धनी और समृद्ध व्यक्ति थे। उनकी एक वाटिका भी ईरान के हमदान नगर में थी। शैख़ इसहाक़ मग़रबी जब नवयुवक थे, उस समय उस वाटिका की देखभाल के लिए एक व्यक्ति अपने परिवार के संग वाटिका में रहता था, उसकी एक सुन्दर कन्या थी। दुर्भाग्यवश उसे गर्भ रह गया तो उस कन्या के पिता को यह भ्रम हुआ कि इस कन्या का गर्भ वाटिका के स्वामीपुत्र इसहाक़ मग़रबी से मित्रता का परिणाम है। उसने आपके पिता से अपना अनुमान बताया तो आपके पिता ने क्रोधित होकर कहा कि आज इसहाक़ को घर आने दो उसकी खाल खींच लूँगा।

जब किसी ने यह समाचार इसहाक़ मग़रबी को सुनाया तो उन्होंने स्वंय ही अपना हाथ सर पर रखा और कहा:

"ऐ मेरे शरीर की खाल तू मेरे शरीर को छोड़ दे"

क्षण भर में सारी खाल शरीर से अलग हो गई। आपने उसे एक थाल में सजा कर पिता के पास भेज दिया और स्वंय देश छोड़ कर भारत का प्रण किया और हज़रत मख़दूमे जहाँ की ख्याति सुनकर बिहारशरीफ़ पधारे। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उनका अभिनन्दन किया और अपनी ख़ानक़ाह में उन्हें ठहराया। कुछ दिनों बाद उनकी इच्छानुसार वर्तमान शैख़पुरा जिले के मटोखर नामक तत्कालीन निर्जन स्थान पर ईशजाप में व्यस्त रहने की आज्ञा दे दी। दोनों ओर से चिट्ठियाँ आती जाती रहतीं। दुर्भाग्यवश अभी तक मख़दूमे जहाँ के नाम शैख़ इसहाक़ मग़रबी का कोई पत्र नहीं मिल सका है परन्तु हज़रत मख़दूमे जहाँ का एक पत्र ख़्वाजा इसहाक़ मग़रबी के नाम उनके दो सौ पत्रों के संग्रह में सम्मिलित है।

आपकी कविताओं के संग्रह की हस्तलिखित प्रतियाँ विभिन्न पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं। फ़ारसी भाषा की इन उच्च कोटि की कविताओं में अधिकतर ईशप्रेम का गुणगान है।

मख़दूम जहानियाँ जहाँगश्त सैयद जलाल बुख़ारी

मख़दूम जहानियाँ अपने काल में बड़े महान सूफ़ी संत गुज़रे हैं। उनके संसार भ्रमण के कारण उन्हें जहानियाँ जहाँगश्त कहा जाता है। दिल्ली दरबार में उनका बड़ा आदर सत्कार होता था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ उनका भक्त था। उन्होंने सारे संसार में घूम-घूम कर सूफ़ी संतों से भेंट की थी और आत्मलाभ किया था। हज़रत मख़दूमे जहाँ से इस प्रकार स्नेह और प्रेम रखते थे कि दिल्ली में रहते हुए बराबर बिहार की ओर मुँह रखते, अपने हृदय को मलते और कहते:

"इश्क़ और मुहब्बत की सुगंध बिहार से आती है"

हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों का एक संग्रह आप तक भी

पहुँच गया था। हज़रत मख़दूम जहानियाँ जहाँगश्त की अन्तिम अवस्था में किसी ने पूछा कि श्रीमान् आज कल आपकी क्या व्यस्तता है? तो वे बोले कि शैख़ शरफ़ुद्दीन के पत्रों का अध्ययन करता रहता हूँ। फिर किसी ने पूछा कि आप ने उन पत्रों को कैसा पाया? उत्तर दिया कि:

''अभी तक मैं इन पत्रों की कुछ बातों को समझ नहीं सका हूँ''

मख़दूमे जहाँ की महान उपाधि

'गन्जे अरशदी' नामक पुस्तक से पता चलता है कि हज़रत मख़दूमे जहाँ को सर्वप्रथम हज़रत सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी ने 'मख़दूमे जहाँ' से सम्बोधित किया, जिसके उत्तर में हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उन्हें मख़दूमे जहाँनियाँ फ़रमाया, उसी दिन से यह दोनों महापुरुष इसी उपाधि से प्रसिद्ध हो गए।

किसी महान सूफ़ी संत का कथन है कि ''हर के ख़िदमत कर्द ऊ मख़दूम शुद'' (अर्थात जो सेवा करेगा उसकी सेवा की जाएगी) मख़दूम का अर्थ सेव्य होता है अर्थात स्वामी। मख़दूमे जहाँ अर्थात संसार के स्वामी।

शैख़ इज़ काकवी और अहमद बिहारी

यह दोनों संत मख़दूमे जहाँ के बहुत निकट थे। शैख़ इज़ काकवी जहानाबाद जिले के काको ग्राम के रहने वाले थे, उनके और हज़रत मख़दूमे जहाँ के मध्य पत्राचार भी होता था। शैख़ इज़ काकवी के प्रश्नों पर आधारित पत्रों का मख़दूमे जहाँ के द्वारा दिया गया उत्तर 'अजवबए काकवी' के नाम से प्रसिद्ध है। यह दोनों संत ईशप्रेम में इस प्रकार संलिप्त हो गये थे कि सारी मानवीय मर्यादाओं से मुक्त हो गए थे और ईशप्रेम के अतिरेक में गोपनीयता की सीमाओं को पार कर गए थे।

भ्रमण करते हुए यह दोनों संत दिल्ली जा पहुँचे। दिल्ली के निवासी उनकी प्रेमाग्नि से ज्वरित भाषा को नहीं समझ सके।

तत्कालीन सम्राट सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ तक शिकायत पहुँची। धर्मज्ञानियों और मुल्लाओं से सम्राट ने उनके बारे में परामर्श किया और लिखित उत्तर माँगा। सभों ने इन दोनों संतों के लिए प्राणदण्ड को उचित बताया। अन्ततः इन दोनों संत को प्राण्दण्ड दे दिया गया।

इन दोनों संतों की हत्या का समाचार जब हज़रत मख़दूमे जहाँ को मिला तो वे भावविभोर होकर बोले:

''जिस नगर में ऐसे व्यक्तियों का रक्तपात हुआ हो
यदि वह आबाद रह जाए तो आश्चर्य होगा।''

हज़रत मख़दूमे जहाँ की इस कटू आलोचना का समाचार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ तक भी जा पहुँचा। बादशाह ने मुल्लाओं को एकत्रित कर सम्बोधित किया किया कि मैंने तुम लोगों के धर्म-निर्णय के अनुसार उन संतों की हत्या कराई। फिर शैख़ शरफ़ुद्दीन ऐसी आलोचना क्यों कर रहे हैं? सभी उपस्थित मुल्लाओं ने एकमुख होकर कहा कि सम्राट उन को बुलाएं, जब वे पधारेंगे तब ही पता चलेगा कि उन्होंने यह बात क्यों कही?

सुल्तान उन लोगों के बहकावे में आ गया और हज़रत मख़दूमे जहाँ को दिल्ली आने का आदेश भेज दिया। जब इस आदेश के पारित होने का समाचार हज़रत मख़दूमे जहाँ को मिला तो आपने फ़रमाया:

''सैयद जलालुद्दीन (मख़दूम जहानियाँ) के कारण
यह आदेश निरस्त हो चुका है और इसके पीछे
दूसरा आदेश आ रहा है।''

हुआ भी ठीक वैसा ही। अभी दिल्ली बुलाने का ओदश भेजा ही गया था कि हज़रत सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी का एक सेवक सुल्तान की सेवा में आया और अपने स्वामी की ओर से भेजी गई भेंटस्वरूप वस्तुएँ सुल्तान के समक्ष रखीं तो सुल्तान ने उससे कहा:

''पता नहीं क्या कारण है कि मख़दूम जहानियाँ ने
इस बार मुझे बहुत दिनों बाद याद किया है।''

सेवक ने आदरपूर्वक कहा:

''आजकल शैख़ शरफ़ुद्दीन के पत्रों का एक संग्रह आपके पास आ गया है उसीके अध्ययन के लिए वे एकांतवास में हैं। इसी कारण किसी को मिलने का अवसर नहीं मिलता और आप तक इन पवित्र भेंटों के पहुँचने में विलम्ब का कारण भी यही है।''

सेवक से यह सुनकर सुल्तान को हज़रत मख़दूमे जहाँ की महानता का भली-भाँति ज्ञान हुआ और अपने आदेश पर पछतावा हुआ। तुरंत दूसरा आदेश पारित किया कि यदि मेरा पहला आदेश बिहार पहुँच गया हो तो उसे रोक लिया जाए। ऐसे महापुरुष को अपने स्थान से हटाना अच्छा नहीं है।

शैख़ नसीरुद्दीन महमूद चिराग़े देहली

शैख़ नसीरुद्दीन महमूद, हज़रत ख़्वाजा निजामुद्दीन औलिया के बाद उनके सज्जादानशीन और दिल्ली के सर्वोच्च सूफ़ी संतों में से थे। वे भी हज़रत मख़दूमे जहाँ की भूरि-भूरि प्रशंसा करते रहते थे। हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों के संग्रह की एक प्रति जब आप तक पहुँची तो आपने इसका बड़े चाव और आदर के साथ अध्ययन किया और इन पत्रों की बड़ी सराहना की।

सैयद अहमद चिरमपोश सुहरवर्दी

हज़रत सैयद अहमद चिरमपोश (नि:776हि०/1374ई०) हज़रत मख़दूमे जहाँ के सगे मौसेरे भाई थे और बिहारशरीफ़ में ही लोगों के मार्गदर्शन में व्यस्त रहते थे। हज़रत मख़दूमे जहाँ और हज़रत मख़दूम चिरमपोश के मध्य कार्यशैली की भिन्नता के बावजूद बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था और दोनों एक दूसरे का बड़ा आदर करते थे।

एक बार एक व्यक्ति कुछ मरी हुई मक्खियाँ लेकर हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में आया और कहने लगा कि:

''पारंगत संत (शैख़) के बारे में यह प्रसिद्ध है कि

वह मारता और जीवनदान देता है, तो आदेश दीजिए कि यह मक्खियाँ जीवित हो जाएं।''

हज़रत मख़दूम ने बड़ी नम्रता के साथ उत्तर दिया:

''भाई, मैं तो स्वंय तुच्छ हूँ, किसी को क्या जीवित करूँगा।''

वह व्यक्ति मख़दूमे जहाँ के यहाँ से लौटकर मख़दूम चिरमपोश की सेवा में वही प्रश्न लेकर जा पहुँचा।

मख़दूम चिरमपोश ने उत्तर दिया कि:

''यह शक्ति तो अल्लाह पाक ने शैख़ शरफुद्दीन को प्रदान की है, मुझसे क्या हो सकेगा?

फिर मक्खियों को कहा:

''उड़ जाओ।''

मक्खियाँ उड़ने लगीं।

उस व्यक्ति ने कहा:

''हाँ जीवित होना तो देखा तनिक मरना भी दिखाइए।''

यह सुन कर मख़दूम चिरमपोश ने कहा:

''जाओ रास्ते में देखोगे।''

वह व्यक्ति मख़दूम चिरमपोश के यहाँ से लौटा तो मार्ग में एक बैल ने उसको ऐसा मारा कि वह मर गया।

हज़रत मख़दूमे जहाँ को इसकी सूचना मिली तो वे उसके जनाज़े की नमाज़ में सम्मिलित होने के लिए पधारे। जब मख़दूमे चिरमपोश को मख़दूमे जहाँ के पधारने की सूचना मिली तो वे भी उसकी नमाज़े जनाज़ा में सम्मिलित हुए और उसे दोनों के समक्ष दफ़न किया गया।

हज़रत अमीरे कबीर मीर सैयद अली हमदानी

कश्मीर के सर्वोच्च प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत मीर सैयद अली हमदानी (नि:786 हि०/1384 ई०) ने भी चौथाई संसार का भ्रमण करते हुए हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में, जबकि वे घने जंगल और

निर्जन स्थलों पर तप और साधना में लीन थे, कुछ समय बिताने का सौभाग्य प्राप्त किया था। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उनकी कुछ आध्यात्मिक गुत्थियाँ बड़ी सुगमता के साथ जीवंत उदाहरण के द्वारा सुलझा दी थीं और वे लाभान्वित होकर लौटे थे।

आपके पौत्र अर्थात हज़रत मुहम्मद हमदानी के पुत्र सैयद अलाउद्दीन हमदानी भी सपरिवार बिहारशरीफ़ पधारे थे। उनका मज़ार लोहगानी ग्राम में बिहारशरीफ़ के समीप मौजूद है। सैयद अलाउद्दीन हमदानी के पुत्र सैयद शमसुद्दीन स्याहपोश हमदानी का मज़ार बड़ी दरगाह के पास ही स्वर्गीय हाफ़िज़ ताजुद्दीन के मकान में स्थित है।

इन हमदानी संतों की सन्तान बिहारशरीफ़ के मुहल्ला चुहड़ी चक में आबाद थी और उसकी एक शाखा इस्लामपूर प्रखण्ड में भी जा बसी थी। तेरहवीं शताब्दी हिजरी के प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत शाह वेलायत अली मुनएमी इस्लामपूरी इसी वंश से थे।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के देशी और विदेशी समकालीन सूफ़ी संतों में कुछ प्रसिद्ध व्यक्तित्व निम्नलिखित हैः

हज़रत अलाउल हक़ पण्डवी चिश्ती (पण्डवा, मालदा, प०बंगाल), हज़रत राजु क़त्ताल (उचा, मुल्तान,पाकिस्तान), शैख़ अलाउद्दीन समनानी (समनान, ईरान), इमाम याफ़ई (मक्का, सऊदी अरब), हज़रत सैयद तय्यमुल्लाह सफ़ीदबाज़ चिश्ती (बीजवन, बिहार शरीफ), हज़रत बदरुद्दीन बदरे आलम ज़ाहेदी (छोटी दरगाह, बिहारशरीफ़) इत्यादि।

हज़रत मख़दूमे जहाँ करतार रूप में

एक बार एक बड़े सुन्दर और आकर्षक मुखमण्डल वाला योगी बिहारशरीफ़ आया। मख़दूमे जहाँ के कुछ शिष्यों ने उससे भेंट की तो उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक योगी भी इस प्रकार आकर्षक मुखमंडल वाला हो सकता है?

वह चतुर योगी उनकी मन:स्थिति भाँप गया और बोला:

"ऐसी बात दिल में नहीं लानी चाहिए।"

फिर उसने प्रश्न किया:

"क्या तुम लोगों का कोई गुरु है?

मख़दूमे जहा के शिष्यों ने हाँ कहा और उसके आगे मख़दूमे जहाँ की प्रशंसा की तो उसने उत्सुकतावश पूछा कि:

"क्या वह मेरे पास आ सकते हैं?"

हज़रत मख़दूमे जहाँ के शिष्यों ने कहा:

"वे महान् संत हैं, किसी के पास नहीं जाते बल्कि
लोग उनकी सेवा में जाते हैं।"

यह सुनकर वह योगी बोला:

"तो मुझे उनकी सेवा में ले चलो।"

वे लोग उसको साथ लेकर मख़दूमे जहाँ की सेवा में चले। हज़रत मख़दूमे जहाँ के पास पहुँचते ही जैसे ही दूर से योगी की दृष्टि मख़दूमे जहाँ पर पड़ी वह उल्टे पैर वापस हुआ। लोगों ने लौटने का कारण पूछा तो योगी बोल पड़ा:

"वे करतार रूप में है, मैं उनके समक्ष जाने की
क्षमता नहीं रखता। यदि जाऊँगा तो जल जाऊँगा।"

मख़दूमे जहाँ के शिष्यों ने जब योगी का समाचार मख़दूमे जहाँ को दिया तो वे मुसकुराए और कहा:

"अच्छा जाओ उससे कहो कि अब चलो, अब तुम
देख सकोगे।"

वह योगी फिर दूसरी बार आया। देखा तो कहने लगा:

"हाँ अब समीप जा सकता हूँ।"

वह आकर सेवा में आदरपूर्वक बैठ गया। कुछ अधिक समय न बैठा होगा कि उसने इसलाम धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उसकी इच्छा पूरी करते हुए अपने शिष्यों में स्वीकार कर लिया। उस योगी को हज़रत मख़दूमे जहाँ ने केवल तीन दिन अपनी सेवा में रखा फिर विदा कर दिया और वह एक बार

फिर भ्रमण पर निकल गया। किसी ने हज़रत मखदूमे जहाँ से प्रश्न किया कि:

"उस योगी को इतने कम समय अपने पास क्यों रखा?"

हज़रत ने फ़रमाया:

"वह अपना काम लगभग पूर्ण करके पहुँचा था। ईश्वर और उसके मध्य एक पर्दा मात्र रह गया था जिसे मैं ने अपनी सेवा में रख कर उठा दिया। जब वह निपुण हो गया तो उसे विदा कर दिया।"

मखदूमे जहाँ की नज़र से लोहा चूर-चूर

एक बार स्वतंत्र प्रवृति का संत (क़लन्दर) इस प्रकार मखदूमे जहाँ की सेवा में पहुँचा कि उसका शरीर लोहे की जंज़ीरां और कवच से ढका हुआ था। उपस्थित लोगों ने आश्चर्य से पूछा कि:

"तुम यह लोहा अपने शरीर से क्यों नहीं उतारते?"

उसका उत्तर था- "कोई है, जो इसे उतार दे?"

हज़रत मखदूमे जहाँ ध्यानमग्न हुए और स्वत: उसके शरीर से सारा लोहा चूर हो कर धरती पर गिरा और बिखर गया।

मख़दूमे जहाँ की अलौकिक शक्ति

हज़रत मखदूमे जहाँ एक दिन भावविभोर होकर चुप-चाप राजगीर की ओर चल पड़े। एक व्यक्ति आपकी इच्छा भाँप कर उनके पीछे चल पड़ा। वह व्यक्ति मखदूमे जहाँ के पीछे चलता हुआ जंगल के समीप पहुँचा तो देखा कि दो बाघ मखदूम के समक्ष आए और मख़दूम के चरणों में अपना माथा रख दिया। मख़दूमे जहाँ ने उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया और पहाड़ के ऊपर चढ़ते चले गए। बाघ के भय वे वह व्यक्ति उनका पीछा नहीं कर सका। कुछ देर बाद हिम्मत जुटा कर वह भी आगे बढ़ा जब बाघों के समीप पहुँचा तो उसने उनसे कहा कि मैं शैख़ शरफुद्दीन के माध्यम से तुझसे विनती करता हुँ जो अभी इस मार्ग से ऊपर गए हैं, कि मुझे रास्ता दे दो।

बाघ मार्ग से हट गए। वह व्यक्ति जब पहाड़ पर पहुँचा तो मख़दूमे जहाँ ने पीछे मुड़ कर देखा और पूछा:

"उन कुत्तों से बच कर कैसे निकल आए।"

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि

"मैंने आपका का नाम लेकर विनती की तो उन्होंने मुझे छोड़ दिया।"

मख़दूम ने फ़रमया:

"मैं कौन हूँ कि मेरा नाम सुनकर वे मार्ग से हट गए। हो सकता है कि यह तुम्हारी लाठी के भय के कारण हुआ हो जो कि तुम्हारे हाथ में है। हो न हो इसी कारण वे भाग गए होंगे।"

इसके बाद मख़दूमे जहाँ ने उस व्यक्ति से कहा:

"ऐ संत! मुझे एक मित्र से भेंट करनी है, तू उस समय तक यहीं ठहर जब तक कि मैं वापस न आ जाऊँ।"

यह कह कर उस व्यक्ति को एक चट्टान पर बैठा दिया। फिर पवित्र कुरआन के उस भाग का, जो आयतल कुर्सी कहालाता है, जाप करके फूँका और उड़ चले, यहाँ तक कि दृष्टि से ओझल हो गए। जब तीन घड़ी रात बीत गई तो आकाश से वापस आए।

जब सुब्ह हुई तो अलौकिक व्यक्तियों का एक दल प्रकट हुआ। मख़दूम जहाँ आगे बढ़े और सभी ने उनके पीछे सीधी कतार में नमाज़ की तैयारी की। मख़दूमे जहाँ ने सुब्ह की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद सभी आगे बढ़े और मख़दूम के हाथों को श्रद्धास्वरूप चूमा और अन्तर्ध्यान होते गए।

मक्का में शुक्रवार की रात्रि और मख़दूमे जहाँ

एक व्यक्ति पवित्र मक्का की यात्रा से लौटा तो एक तस्बीह (जाप माला) लेकर मख़दूमे जहाँ की सेवा में आया और कहने लगा

कि मक्का की पावन धरती में शुक्रवार की रात्रि को मैं ने इस तस्बीह को पाया था। जो लोग वहाँ थे उनसे पूछा कि यह तस्बीह किसकी है? तो लोगों ने बताया कि यह शैख़ शरफुद्दीन मनेरी की है जो बिहारशरीफ़ में रहते हैं। जुमा (शुक्रवार) की रात्रि को यहाँ आते हैं। पर्यटक ने कहा कि मैं ने इस तस्बीह को इसलिए संभाल कर रख लिया था कि मैं स्वंय उनके दर्शन कर यह जाप माला उन्हें पहुँचाऊँगा।

लोगों के दोषों को ढाँकना

एक बार एक व्यक्ति सामूहिक नमाज़ में मख़दूमे जहाँ की उपस्थिति में नमाज़ पढ़ाने के लिए आगे बढ़ा और नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद मख़दूमे जहाँ के पास कुछ लोग यह सूचना लाए कि वह व्यक्ति जिसने नमाज़ पढ़ाई, शराबी है। आप ने फ़रमाया:

"हर समय नहीं पीता होगा।"

लोगों ने कहा:

"मख़दूम यह व्यक्ति हमेशा पीता है।"

मख़दूम ने कहा:

"रमज़ान के पवित्र मास में नहीं पीता होगा।"

जब उस व्यक्ति को अपने बारे में मख़दूमे जहाँ की यह बात मालूम हुई तो उसे बहुत ग्लानि हुई। उसने आकर आपके हाथ पर तौबा की और शेष जीवन एक नेक आदमी के रूप में व्यतीत किया।

भेंट स्वीकार करते परन्तु रखते नहीं

एक बार एक व्यक्ति ने पाँच स्वर्ण मुद्राएँ मख़दूमे जहाँ के पास भेंट स्वरूप भेजीं। चार स्वर्ण मुद्राऐं तो आप ने दीन-दुखियों में बाँट दीं और एक को यह कहते हुए प्रांगण में फेंक दिया कि यह ज़ाहिद के भाग्य का है। वह स्वर्ण मुद्रा प्रांगण में गिरते ही आँख से ओझल हो गई।

जब क़ाज़ी ज़ाहिद, जोकि आपके शिष्य थे, आपकी सेवा में पधारे तो उनसे आपने फ़रमाया:

''ज़ाहिद अपना हिस्सा ले लो।''

उन्होंने प्रांगण में स्वर्ण मुद्रा देखी और उसे उठा लिया।

दिल्ली दरबार में जाकर राजगीर को लौटाया

15 वर्षो तक सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ के भेंट किये हुए परगना राजगीर का स्वामित्व ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के पास रहा। जब 751 हि०/1350 ई० में सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ का देहांत हुआ तो हज़रत मखदूमे जहाँ, राजगीर की जागीर से सम्बन्धित कागज़ात के साथ दिल्ली की ओर चल पड़े।

हज़रत मखदूमे जहाँ के दिल्ली पहुँचने पर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ के दरबार में आपके आगमन का समचार पहुँच गया। सुल्तान फ़ीरोज़ तुग़लक़ नया-नया सिंहासनारूढ़ हुआ था इसलिए राज्य के हर क्षेत्र से अधिकारी और दूसरे सम्बन्धित व्यक्ति अपने अपने प्रमाण-पत्रों, पट्टों और भिन्न-भिन्न प्रकार के दस्तावेज़ों के नवीकरण और उसमें बढ़ोत्तरी के लिए दिल्ली आ रहे थे। हर व्यक्ति नये सुल्तान को प्रसन्न करके, नज़रें गुज़ार कर लाभान्वित होने के अवसर खोज रहा था।

हज़रत मखदूमे जहाँ जब दिल्ली पहुँचे तो सुल्तान के प्रशासनिक अधिकारियों, दरबारियों और दरबार से जुड़े मुल्लाओं को ऐसा भ्रम हुआ कि शैख़ शरफुद्दीन भी बहती गंगा में हाथ धोने आ गए हैं और स्वर्गीय सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ की भेंट, यानी राजगीर में कुछ और बढ़ोत्तरी कराना उनका ध्येय है। अपने दरबारियों के इस अनुमान की भनक जब सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ तक पहुँची तो उसने कहा कि अगर शैख़ शरफुद्दीन सम्पुर्ण बिहार चाहेंगे तो मैं दूँगा। दरबार में पहुँचने पर सुल्तान ने आपका बड़ा आदर किया और कहने लगा:

''आपके दिल्ली में अपने दरबार में पधारने पर मैं धन्य हो गया।''

मखदूम ने कहा:

"मैं एक स्वार्थ लेकर आया हूँ। यदि स्वीकार करने का वचन दें तो मैं अपनी बात कहूँ।

सुल्तान ने बड़ी प्रसन्नता के सहमति जताई तो मख़दूम ने अपनी पोशाक से परगना राजगीर से सम्बन्धित राजकीय काग़ज़ात निकालकर सुल्तान के हाथ में दिये और फ़रमाया:

"अल्लाह के लिए इसे वापस ले लें, यह मेरे काम का नहीं।"

मख़दूम के मुख से यह अनहोनी सुन कर सुल्तान समेत सारा दरबार स्तब्ध और चकित रह गया। सुल्तान चूँकि पहले ही वचन दे चुका था इसलिए उसे वापस लेना ही पड़ा। फिर बादशाह ने बड़े आदर और श्रद्धा के साथ कुछ धन यात्रा-व्यय के रूप में स्वीकार करने का बार-बार निवेदन किया तो उसे हज़रत मख़दूमे जहाँ ने स्वीकार कर लिया परन्तु दरबार से बाहर निकलते ही सारा धन दीन,-दुखियों, भिखारियों, धनहीनों में बाँट दिया और ख़ाली हाथ बिहार लौट आए।

फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ का बिहारशरीफ़ आगमन

एक बार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ को एक प्रकार के कुष्ठ रोग के लक्षण का आभास हुआ तो वह बड़ा चिंतित हुआ। राजकीय वैद्य, हकीम के अतिरिक्त अन्य नामी-गिरामी हकीमों ने इलाज किया लेकिन कारगर नहीं हुआ तो चिन्ता और बढ़ी। ऐसे में सुल्तान को सूफ़ी-संतों से आशीर्वाद प्राप्त करके रोगमुक्त होने की उम्मीद जगी तो हज़रत मख़दूमे जहाँ का विचार आया। इसीलिए बड़ी श्रद्धा और आदर के साथ सुल्तान फ़ीरोज़ तुग़लक़ बिहारशरीफ़ आया।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म से निकल कर उसका अभिनन्दन किया तो सुल्तान ने हज़रत मख़दूम का पवित्र हाथ पकड़ कर आगे चलने को कहा परन्तु हज़रत मख़दूम ने बादशाह को ही आगे किया और स्वंय पीछे चले।

सुल्तान जब ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में आकर बैठा तो हज़रत

मख़दूमे जहाँ ने ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के लंगरख़ाने के प्रभारी मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी से कहा कि सुल्तान अतिथि हैं, जो कुछ पका हुआ हो उसे लाकर सामने रखो उस समय रोटी और कुछ पक्षियों का माँस पका हुआ था। हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र ने स्वंय अपने हाथों से सुल्तान के आगे खाना परोसा। बादशाह ने जब पक्षियों के माँस को देखा तो मन में सोचने लगा कि जो मुझे हकीमों ने खाने से मना किया है वही यहाँ खाने को मिल रहा है। ऐसा लगता है कि यहाँ भी मेरे भाग्य में रोग से मुक्ति नहीं लिखी है।

हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी अपनी महानता से बादशाह के विचारों को समझ गए और आवेश मे आकर भुने हुए पक्षी की ओर इशारा काके बोले:

''बादशाह नहीं खाएगा तो क्यों पड़े हो, जाओ उड़ जाओ।''

यह कहना था कि भुने हुए पक्षी उड़ गए।

हज़रत मख़दूमे जहाँ को जब इसकी सूचना मिली तो फिर रोटी और भुने पक्षी सुल्तान के पास [illegible]वाए, जिसे सुल्तान ने बड़े आदर और श्रद्धा के साथ खाया और रोगमुक्त हो गया। परन्तु हज़रत मख़दूम ने भुने पक्षी को उड़ाकर चमत्कार दिखाने के लिए अपने प्रिय शिष्य मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी पर कड़ा रोष व्यक्त किया। अपने प्रिय गुरु के आक्रोश से भयभीत होकर मौलाना मुज़फ़्फ़र जाकर एक परनाले में छिप गए। अकस्मात वर्षा हो गई और उनके परनाले में छिपे होने के कारण पानी का निकलना बन्द हो गया। हज़रत मख़दूम ने जब यह देखा तो आपको प्यार से बुलाया:

''बाहर आइये, वहाँ क्या कर रहे हैं।''

मौलाना बाहर आए तो हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उन्हें अपने अलिंगन में ले लिया और फ़रमाया:

''तन(शरीर) **मुज़फ़्फ़र जाँ**(आत्मा) **शरफ़ुद्दीन,**
जाँ मुज़फ़्फ़र तन शरफ़ुद्दीन, शरफ़ुद्दीन मुज़फ़्फ़र,
मुज़फ़्फ़र शरफ़ुद्दीन''

तप और साधना का मख़दूमे जहाँ के शरीर पर प्रभाव

हज़रत अहमद लंगर दरिया बल्ख़ी ने अपने शिष्यों को बताया कि एक दिन हज़रत मख़दूमे जहाँ के सिर के बालों को नाई मूँड रहा था तभी अस्तुरे से आपका सिर तनिक छिल गया तो नाई चकित रह गया कि रक्त के स्थान पर केवल थोड़ा सा पानी बह निकला। हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रश्न करने पर नाई ने आश्चर्य के साथ कहा कि केवल पतला सा पानी दिखता है। यह सुनकर हज़रत मख़दूमे जहाँ ने फ़रमाया:

''शरफुद्दीन के शरीर में अभी तक नमी बच रही है।''

हज़रत मख़दूमे जहाँ के मुरीद और ख़लीफ़ा

हज़रत मख़दूम हुसैन नौशाए तौहीद बल्ख़ी लिखते हैं कि हज़रत मख़दूमे जहाँ के मुरीदों (अध्यात्मिक शिष्यों) की संख्या 1 लाख तक पहुँच गई थी। इन मुरीदों में सामान्य जन से लेकर राजकीय पदाधिकारी और राजपरिवार के लोग सभी सम्मिलित थे। आपके मुरीदों में देशी और विदेशी सभी प्रकार के सत्यप्रेमी थे। आपके संकलित प्रवचनों और पत्रों के संग्रह में कहीं-कहीं पर इन मुरीदों की चर्चा आ जाती है लेकिन वह इतनी व्याख्या के साथ नहीं है कि कुछ अधिक नाम और पहचान जुटाई जा सके। आपके प्रसिद्ध मुरीदों में शैख़ चुल्हाई, हेलाल, अक़ीक़, फ़तूहा, ज़ैन बदरे अरबी, मौलाना निज़ामुद्दीन कोही, हाजी रुकुनुद्दीन, मनव्वर, क़ाज़ी आलम, इत्यादि ऐसे मुरीद थे जो आपके स्वर्गवास के समय मौजूद थे। मजदुल मुल्क मुक़्तए बिहार, जिसने मुहम्मद बिन तुग़लक़ के आदेशानुसार ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का राजकीय निर्माण कराया था उसके बारे में भी प्रबल संभावना है कि वह भी आपके मुरीदों में से था। तुग़लक़ राजपरिवार के कई सदस्य भी आपके मुरीद थे। सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ के दामाद दावर मलिक के नाम आपके पत्र मिलते हैं। तुग़लक़ प्रशासन के कई उच्चाधिकारी भी आपके मुरीदीन में थे। बंगाल, जौनपुर,

ज़फ़राबाद और बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में आपके शिष्यों की संख्या बहुत अधिक थी। हज़रत मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद (पहाड़पूरा) को भी आपके शिष्य होने का सौभाग्य प्राप्त था।

आपके ऐसे मुरीदों की संख्या, जिन्हें आपने शिक्षा-दीक्षा में पारंगत करने के उपरांत उन्हें भी शिष्य बनाने की आज्ञा (ख़िलाफ़त) प्रदान कर दी थी, 313 बताई जाती है जिनमें कुछ प्रसिद्ध नाम निम्नलिखित हैं:

(1) मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी (नि: ८03 हि०) (2) मौलाना नसीरुद्दीन सिमनानी (3) हज़रत मख़दूम शोऐब (4) हज़रत मौलाना इब्राहीम (5) मौलाना आमूँ (6) मौलाना शमसुद्दीन मशहदी (7) मख़दूम मिनहाजुद्दीन रास्ती (8) क़ाज़ी शमसुद्दीन (चौसा के जिलाधिकारी) (9) मौलाना क़ाज़ी सदरुद्दीन (10) क़ाज़ी अशरफ़ुद्दीन (11) हज़रत सैय्यद अलीमुद्दीन महमूद बदायूनी

हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में उनके अपने मुरीदों के अतिरिक्त दूसरे सूफ़ी संतों के मुरीद भी बड़ी संख्या में आते थे और आप उनमें कोई भेद भाव नहीं करते थे और दूसरे संतों के शिष्यों पर भी कृपादृष्टि रखते हुए उनकी प्यास बुझाते थे। उनके मार्गदर्शन में भी पूरी दिलचस्पी लेते थे।

एक युवराज मुबारक क़सूरी लम्बी यात्रा करके आपके दर्शन के लिए पधारा और आपकी सेवा में कहने लगा:

> ''जब मैं अपने पीर का मुरीद हुआ तो उन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम्हारी क्या इच्छा है? तुम युवराज हो, तुम्हारी प्रकृति आदेश देने और आदेश पालन कराने की ओर सधी है या ईश्वर में रमने की ओर? मैंने आदरपूर्वक उत्तर दिया कि अब तो मैं आपकी सेवा में हूँ जैसा आदेश हो वैसा ही करूँगा। तब पीर ने कहा कि इस मार्ग में सबसे उत्तम यह है कि हर वस्तु तज दी जाए। मैंने ने भी इसको स्वीकार कर

लिया और मेरे मन में भी यही बात है।''

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उसकी बातें सुनकर उसको सम्बोधित कर यह प्रवचन दिया कि:

''इसमें कोई संदेह नहीं कि समस्त वस्तुओं को तज देना सर्वोत्तम है, यदि उसमें दृढ़ता हो, परन्तु कुछ दिनों तक समस्त वस्तुओं को तज देने और उनसे दूर रहने के बाद फिर उनकी ओर मन चला जाए तो निराशा होती है और इस प्रकार के सन्यास से कोई लाभ नहीं। सन्यास तो उसी समय सर्वोत्तम है कि तज दी गई वस्तुओं की ओर फिर कभी ध्यान न जाए। तभी कार्य में दृढ़ता और सत्यता पैदा होती है। तुम युवराज हो, अपने मित्रों के संग उठने-बैठने के अभ्यस्त हो। उनकी संगत में जाकर तुम में फिर परिर्वतन हो जाए तो ऐसे सन्यास से क्या लाभ। ऐसे बहुत से लोग हैं जो कहते हैं कि हम ने सभी चीजों को तज दिया। हम उपासक हैं, हमें इन्द्रियें पर विजय प्राप्त हो गई है परन्तु जब समय आता है तो झूठे साबित होते हैं। मानव मन के ऐसे बहुत से धोखे हैं इसलिए बिना परीक्षा के कोई भी दावा भरोसे के लायक नहीं।''

(**मादेनुल मआनी**)

लिखित और संकलित रचनाएं

हज़रत मख़दूमे जहाँ अभूतपूर्व आत्मिक सामर्थ्य, दैवी शक्ति सम्पन्न विलक्षण प्रतिभाशाली महापुरुष थे। एक ऐसा जीवन जो खुली किताब की भाँति था। जिसमें हर एक आराम से झाँक कर देख सकता था, छू सकता था, परख सकता था। इतना व्यस्त और सार्वजनिक जीवन जीते हुए आपने संसार को उच्चतम और सर्वोत्तम

कोटी की ऐसी पुस्तकें और रचनायें प्रदान की हैं कि जिनको पढ़ कर मन झूम उठता है, बात हृदय को छू जाती है और अन्तरात्मा इस महात्मा को कोटी-कोटी नमन करने को व्याकुल हो उठती है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ की सम्पूर्ण रचनाओं को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(1) आपके लिखित पत्र और पुस्तकें

(2) आपके प्रवचन

(3) दूसरों की रचनाओं की व्याख्या

(1) आपके लिखित पत्र और पुस्तकें

आपकी आध्यात्मिक महानता और अभूतपूर्व चिंतन के सबसे प्रबल साक्षी आपके पत्र हैं, जिन्होंने हर काल में अपनी श्रेष्ठता, योग्यता और सार्थकता सिद्ध की है। फ़ारसी भाषा में लिखे गए यह पत्र न केवल अपने अर्थ और संदेश के कारण महत्वपूर्ण हैं बल्कि भाषा और साहित्य की कसौटी पर भी यह अतिमूल्यवान और खरे हैं। पत्राचार के द्वारा सूफ़ीमत की शिक्षा का प्रचार प्रसार हज़रत मख़दूमे जहाँ से बढ़कर किसी ने भी नहीं किया। यद्यपि मख़दूमे जहाँ के पूर्व भी पत्राचार के द्वारा यह कार्य अन्य संतों ने किया है परन्तु जैसी व्यापक लोकप्रियता हज़रत मख़दूमे जहाँ को प्राप्त हुई वह अभूतपूर्व है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने ख़ानक़ाहे मुअज़्ज़म में निवास के उपरांत पत्राचार की दुनिया में अपने सम्मोहक पत्रों के द्वारा क्रांति ला दी। बड़े-बड़े राजा महाराजा के मन में यह लालसा जगी कि शैख़ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी हमें भी एक पत्र लिख दें तो हम धन्य हो जाएं। केवल एक पत्र अपने नाम लिखवाने हेतु बड़े-बड़े धनी और गुणी व्यक्ति मख़दूम की सेवा में कई-कई पत्र लिखते, निकटतम शिष्यों से सिफ़ारिश कराते।

मख़दूम के पत्र लिखने और उसके प्रसारण का ढंग भी निराला था। मख़दूम जिसे पत्र लिखते उसके आध्यात्मिक व बौद्धिक

स्तर और जीवन शैली का विशेष ध्यान रखते। कुछ लोगों के लिए जो पत्र लिखा जाता वह केवल उसी के लिए होता उसमें यह निर्देश होता कि यह पत्रों की थाली केवल तुम्हारे लिए है। इसमें वैचारिक मंथन और ईशकृपा से बने मूल्यावन पकवान केवल तुम्हारे लिए हैं, इसकी सुगंध भी किसी को न लगे। किसी को ऐसे पत्र लिखे जाते जो सारे संसार के लिए और हर काल के लिए शाश्वत होते, उसे उपस्थित शिष्यों के बीच अध्ययन के लिए रखा जाता और उस पत्र की वे सब अपने-अपने पास एक प्रतिलिपि तैयार कर लेते फिर पत्र जिसके नाम होता उसे भेज दिया जाता। उनके पत्रों के निम्नलिखित संग्रह उपलब्ध हैं :

(i) मकतूबाते सदी
(सौ पत्रों का संग्रह)

यह हज़रत मख़दूमे जहाँ के द्वारा सर्वप्रथम लिखे गए ऐसे सौ पत्रों का अतिमूल्यवान संग्रह है, जो उन्होंने अपने प्रिय शिष्य क़ाज़ी शमसुद्दीन के नाम लिखे थे। इन सौ पत्रों के संग्रह को 'मकतूबाते क़दीम' अर्थात प्रचीन पत्रों के भी नाम से भी जाना जाता है।

क़ाज़ी शमसुद्दीन बक्सर से समीप चौसा, जो शायद उस काल में एक बड़ा प्रशासनिक प्रखण्ड या जिला रहा होगा, के प्रशासनिक अधिकारी या जिलाधीश थे। अपनी प्रशासनिक व्यस्तता के कारण दिन-प्रतिदिन मख़दूमे जहाँ की सेवा में आने से लाचार थे इसीलिए उन्हों ने बड़ी नम्रता के साथ आपकी सेवा में कई बार यह विनती की थी कि मुझे पत्रों के द्वारा शिक्षा दी जाए तो बड़ी कृपा होगी। उनकी विनती को स्वीकार करते हुए हज़रत मख़दूमे जहाँ ने एक-एक करके यह 100 पत्र 749 हि०/ 1348-49 ई० में उनके नाम भेजे थे।

इन 100 पत्रों में हर एक अलग विषय पर आधारित है और पूरा संग्रह सूफ़ीमत और दर्शन का सुन्दर ब्योरा प्रस्तुत करता है।

रहस्यों और अर्थों को सरल और सहज करके बखान किया गया है। भाषा और शैली आकर्षक और मनमोहक है। जगह–जगह पर अर्थ को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न सूफ़ी कवियों के पद्यों से इन्हें और भी मनमोहक बना दिया गया है।

जब यह पत्र लिख कर भेजे जाते थे तो उपस्थित शिष्य भी उसकी प्रतिलिपि अपने पास रख लेते थे विशेषकर हज़रत मख़दूमे जहाँ के शिष्य और सेवक हज़रत ज़ैन बदरे अरबी ने बड़ी मेहनत के साथ सारे पत्रों की प्रतिलिपि अपने पास संजो कर रखी थी, और उन्होंने ही इन सौ पत्रों के संग्रह को अपनी संक्षिप्त भूमिका के साथ संग्रहित किया, जो आज मकतूबाते सदी के नाम से विश्व विख्यात है। इसका मौलिक स्वरूप फ़ारसी भाषा में कई बार छपा चुका है। ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म बिहार शरीफ़ के हज़रत सैयद शाह नजमुद्दीन अहमद फ़िरदौसी और हज़रत सैयद शाह इलयास 'यास' बिहारी ने इसका उर्दू अनुवाद किया जिसे ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का मकतबा शरफ़ कई बार छाप चुका है। इसका अंग्रेजी अनुवाद फ़ादर पॉल जैक्सन ने Hundred Letters of Sharafuddin Maneri के नाम से किया, इसके भी कई संस्करण अब तक आ चुके हैं। मकतूबाते सदी का बंगला अनुवाद भी हुआ है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अपने अन्तिम समय में इन पत्रों और क़ाज़ी शमसुद्दीन के बारे में इस प्रकार फ़रमाया:-

> "क़ाज़ी शमसुद्दीन के बारे में क्या कहूँ, क़ाज़ी शमसुद्दीन मेरा आध्यात्मिक पुत्र है। पत्र में कई स्थान पर मैं इसको पुत्र लिख चुका हूँ। पत्र में मैंने इसको भाई भी लिखा है। इनको संतज्ञान के प्रकट करने की आज्ञा मिल चुकी है। इन्हीं के लिए इतना कहने और लिखने का मन हुआ, नहीं तो कौन लिखता?"

बड़े–बड़े सूफ़ी संतों ने मख़दूमे जहाँ के इन सौ पत्रों के संग्रह की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। शत्तारिया सिलसिले के विख्यात सूफ़ी

और तानसेन के आध्यात्मिक गुरु हज़रत गौस ग्वालियारी इन पत्रों के बारे में कहते हैं:

''अगर किसी को धर्म गुरू का सत्संग प्राप्त न हो तो उसे चाहिए कि शैख़ शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी के पत्रों को अपने अध्ययन में रखे, इसीसे उसके मन का छल-कपट और उद्दण्डता दूर हो जायेगी अर्थात यह पत्र उसके धर्मगुरू का पर्याय बन जाएंगे।'' **(औरादे गौसिया)**

चिश्ती साबरी सिलसिले के महान सूफ़ी हज़रत जलालुद्दीन कबीर औलिया पानीपती इस संग्रह के बारे में कहते हैं:

''मख़दूम के पत्रों के अध्ययन के समय ऐसा अनुभव होता है कि मुझपर अलौकिक प्रकाश की वर्षा हो रही है।''

इन सौ पत्रों के संग्रह की ओर मुग़ल सम्राटों की भी विशेष अभिरुचि का प्रमाण मिलता है। सम्राट औरंगज़ेब के अध्ययन में जो किताबें प्रमुखता से रहती थीं उनमें यह मकतूबात भी थे। औरंगज़ेब को मख़दूमे जहाँ के पत्रों से कैसा गहरा प्रेम था ऱ्य का आभास इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि जब औरंगज़ेब को मृत्यु हुई तो उसके तकिये के नीचे से एक पुस्तक मिली जो कि यही सौ पत्रों का संग्रह था।

(ii) मकतूबाते दो सदी
(दो सौ पत्रों का संग्रह)

इस संग्रह में विभिन्न व्यक्तियों के नाम हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्र हैं। कुछ के नाम स्पष्ट हैं और कुछ पत्र बिना नाम के हैं। जिन के नाम स्पष्ट हैं वे निम्नलिखित हैं:

शैख़ उमर, काज़ी शमसुद्दीन, काज़ी ज़ाहिद, कमालुद्दीन सन्तूसी,

मौलाना सदरुद्दीन (सोनारगाँव के क़ाज़ी), मलिक ख़िज़्र, ख़्वाजगी ख़ासपूरी, मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी, रफ़ीउलमुल्क एवज़ी, मौलाना महमूद संगामी, ख़्वाजा सुलेमान, मौलाना हमीदुलमिल्लत, मुहम्मद दीवाना, मलिक मुफ़र्रेह, इमाम निज़ामुद्दीन, क़ाज़ी हुसामुद्दीन, फ़िरोज़ शाह तुग़लक़, शैख़ इसहाक़ मग़रबी, दाऊद मलिक, मौलाना बायज़ीद, मौलाना नसीरुद्दीन और सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ इत्यादि।

इन पत्रों के संग्रहकर्त्ता हज़रत मख़दूमे जहाँ के एक प्रिय शिष्य हज़रत मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन ईसा बल्ख़ी हैं जो कि अशरफ़ बिन रुक्न के नाम से प्रसिद्ध थे।

विभिन्न व्यक्तियों के नाम पत्र होने के कारण 'मकतूबाते दो सदी' में 'मकतूबाते सदी' की भाँति एकसूत्रता नहीं है और विभिन्न मानसिकता और अलग-अलग जीवन शैली के लोगों के नाम पत्र होने के कारण पत्रों का स्तर भी भिन्न-भिन्न है। संदेशों और प्रवचनों में विषयों की पुनरावृत्ति भी है।

यह संग्रह भी अनमोल विचारों और अनगिनत दुलर्भ संदेशों से भरा हुआ है। हर स्तर की समझ रखने वाले के लिए इस संग्रह में सामग्री मौजूद है।

यह संग्रह भी कई बार छप चुका है मूल फ़ारसी भी और उर्दू अनुवाद भी। इसका एक अच्छा उर्दू अनुवाद मकतबा शरफ़ ने प्रकाशित किया है, जिसमें कुल 208 पत्रों का अनुवाद हज़रत सैयद शाह क़सीमुद्दीन शरफ़ी ने किया है। मकतूबाते सदी की ही तरह फ़ादर पाल जैक्सन ने इसका भी अंग्रेजी अनुवाद In quest of God के नाम से किया है जिसमें 151 पत्र ही शामिल किये हैं। यह भी प्रकाशित हो चुका है।

(iii) बिस्तो हश्त मकतूबात

(28 पत्रों का संग्रह)

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अपने सबसे प्रिय मुरीद और ख़लीफ़ा,

जो आपके बाद सज्जादानशीन भी हुए, अर्थात मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी पर पूरे मनोयोग से मेहनत की थी और उन्हें अपने जीवन में ही पारंगत संत बना दिया था। हज़रत मख़दूमे जहाँ उनसे अपने हृदय का मर्म कहते थे, क्योंकि वे ही उनके मर्मज्ञ थे। आपके आदेशनुसार या आज्ञानुसार जब मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी कहीं बाहर चले जाते तो वहाँ से भी पत्रों का नियमिति आदान प्रदान होता रहता था।

कहते हैं कि हज़रत मख़दूमे जहाँ ने 200 से अधिक पत्र मौलाना को लिखे थे, जिन्हें सार्वजनिक करने की अनुमति नहीं थी। हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने भी अपने अन्तिम समय में यह वसीयत कर दी थी कि मेरे नाम मेरे पीरो मुर्शिद के पत्रों का थैला मेरे साथ ही दफ़ना दिया जाए, और ऐसा ही हुआ भी। परन्तु एक स्थान पर अलग रखे हुए केवल 28 पत्र दफ़न होने से बच गए, और कुछ दिनों बाद आप के सगे भतीजे, प्रिय शिष्य और ख़लीफ़ा मख़दूम हुसैन नौशा तौहीद बल्ख़ी को प्राप्त हुए तो उन्होंने उन 28 पत्रों को एकत्र कर इस संग्रह का रूप दे दिया।

इस संग्रह में उच्च कोटी के सूफ़ी दर्शन और गूढ़ विचारों के मंथन का सारांश एकत्र है। भाषा उत्तम है पर हरेक की समझ से परे है। सूफ़ी संतों के उच्चस्थ शिखर पर पहुँचने वालों के लिए ईश्वर और परलोक के मर्म का यह एक अनमोल ख़ज़ाना है। कुछ पत्र बहुत ही संक्षिप्त हैं पर गागर में सागर के समान हैं। इन पत्रों को **'मकतूबाते जवाबी'** भी कहा जाता है क्योंकि यह सभी मौलाना मुज़फ़्फ़र के प्रश्नों के उत्तर में लिखे गए हैं। इसका फ़ारसी मूल भी बहुत पहले छप चुका है और इसका उर्दू अनुवाद भी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के मकतबा शरफ़ से प्रकाशित हो चुका है।

(iv) फ़वायदे रुक्नी

हज़रत मख़दूमे जहाँ के एक शिष्य हाजी रुक्नुद्दीन हज करने के उद्देश्य से अरब जा रहे थे। इस पवित्र यात्रा पर जाने से पहले

उन्होंने अपने मार्गदर्शक व गुरु हज़रत मख़दूमे जहाँ से यह निवेदन किया कि इस तुच्छ के लिए अपने बहुमूल्य पत्रों के संग्रह से कुछ सार-संक्षेप सारांश के रूप में इस प्रकार लिख दिए जाएं कि मुझे यात्रा में सहायक हों और मार्गदर्शक का काम दे सकें। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उनकी इच्छानुसार स्वंय अपने पत्रों का सारांश और कुछ पत्रों का चयन संकलित कर दिया था। यह कुछ मूलभूत बिन्दुओं पर चयनित पत्रों का बड़ा ही लाभकारी संग्रह है। भाषा और शैली अनुपम है और जो बात भी कही गई है वह दिल में उतर जाने वाली है।

फ़वायदे रुक्नी का अधूरा अनुवाद एक बार भारत में और एक बार पाकिस्तान में छप चुका है। मकतबा शरफ़ इसका सम्पूर्ण उर्दू अनुवाद प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका है जिसके अनुवादक डा० अली अरशद शरफ़ी साहब हैं।

(v) अजवबए काकवी/अजवबए ख़ुर्द

जहानाबाद जिले के काको ग्राम के निवासी और स्वतंत्र प्रकृति के संत हज़रत इज़ काकवी ने मख़दूमे जहाँ से पत्र लिखकर तीन प्रश्न पूछे थे। उन प्रश्नों के उत्तर में लिखा गया यह पत्र ही एक पत्रिका के रूप में 'अजवबए काकवी' कहलाता है।

किये गए प्रश्न और उनके उत्तर बड़े ही उच्च कोटी के संतों की समझ और स्तर के हैं। भाषा बड़ी ही सुन्दर और संक्षेपण एवं रहस्यात्मकता के गुणों से भरपूर है। इस पत्रिका की पाण्डुलिपि विभिन्न ग्रन्थालयों में सुरक्षित है।

(vi) अजवबए कलाँ

यह विभिन्न प्रश्नों के उत्तरों पर आधारित एक पत्रिका है। यह प्रश्न ज़ाहिद बिन मुहम्मद बिन निज़ाम और दूसरे शिष्यों ने आपसे पूछे थे, जिनका संक्षिप्त और संतोषप्रद उत्तर मख़दूम ने बड़ी कुशलता के साथ दिया है। भाषा बड़ी सरल है और अर्थपूर्ण है। यह भी पाण्डूलिपि के रूप में सुरक्षित है।

(vii) इरशादुत्तालेबीन

इस संक्षिप्त पत्रिका में इस बात का उल्लेख है कि ईशभक्ति के मार्ग पर चलने वालों का आचरण कैसा होना चाहिए और उनका उद्देश्य क्या होना चाहिए। इसका उर्दू उनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

(viii) अक़ायदे शरफ़ी

अपनी इस रचना में हज़रत मख़दूमे जहाँ ने सूफ़ी संतों के धर्म विश्वासों पर प्रकाश डाला है। इस पुस्तक को 19 भागों में विभक्त कर सूफ़ीयों के सभी प्रमुख विषयों से सम्बन्धित विश्वास की चर्चा की गई है। इसका उर्दू अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

(ix) फ़वायदुल मुरीदीन

इसमें 22 बिन्दुओं पर चर्चा की गई है और संक्षेप में सभी महत्वर्पूण बातों का सारांश इकट्ठा कर दिया गया है। इसका उर्दू अनुवाद भी मकतबा शरफ़ ने प्रकाशित कर दिया है।

(x) औराद

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने पवित्र कुरआन और हदीस तथा महान सूफ़ी संतों से प्राप्त मंत्रों और जापों का एक वृहत् संग्रह तैयार किया था और उसे **औरादे कलाँ** नाम दिया। फिर उससे चयन कर एक दूसरा संग्रह बनाया और उसे **औरादे औसत** नाम दिया। सब के लिए सभी प्रकार के जाप न तो सुगम होते हैं और न लाभकारी, इसीलिए सामान्य लोगों के लिए एक संक्षिप्त संग्रह मंत्रों और जापों का तैयार कर दिया और उसे **औरादे खुर्द** नाम दिया। इन सभी की पाण्डुलिपियाँ कहीं कहीं सुरक्षित हैं।

(xi) औरादे शरफ़ी

अपनी माताश्री के लिये हज़रत मख़दूमे जहाँ ने औरादे खुर्द की ही भांति एक मिलता जुलता संग्रह तैयार किया जिसे औरादे

शरफ़ी के नाम से पहचाना जाता है। सैंकड़ों वर्षों से यह इस उपमहाद्वीप में लोकप्रिय है और घर-घर में पढ़ा जाता है। इसक पहला उर्दू अनूवाद हाफ़िज़ शफ़ी फ़िरदौसी ने किया लेकिन य‌ केवल फ़ारसी वाक्यों का था। मैंने फ़ारसी के साथ-साथ अरबं इबारतों का भी अनुवाद कर इसका सम्पूर्ण अनुवाद करने का सौभाग्‍ प्राप्त किया। यह अनुवाद उर्दू तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में ख़ानकाह मुनअमीया मीतनघाट, पटनासिटी से प्रकाशित हो कर लोकप्रिय ह चुका है।

इनके अतिरिक्त इराशादुस्सालेकीन, रिसाला मक्किया, रिसाल बिदायते हाल, मिरआतुल मुहक़्क़ेकीन, इशारात और अस्बाबुन्नजात लेमारफ़तिल ओसात की पाण्डुलिपिया भी विभिन्न पुस्तकालयों मं सुरक्षित हैं।

(2) आपके प्रवचन

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने बिहारशरीफ़ में जब से निवास प्रारम्भ किया तब से सारा जीवन लोगों की भलाई, मार्गदर्शन, धर्मव्याख्या और शिक्षा एवं दीक्षा के लिए समर्पित कर दिया था। कोई समय ऐसा नहीं होता, जबकि आप निरर्थक बातों में लीन हों या लोगों की भलाई से निश्चिंत हों। एक बार शैख़ हमीदुद्दीन, जो हज़रत मख़दूमे जहाँ से श्रद्धा और प्रेम रखते थे और बराबर सेवा में आते रहते थे, आधी रात को आपकी सेवा में पहुँचे। हज़रत मख़दूमे जहाँ पदचाप सुनकर अपने कक्ष से बरामदे में आ गए। शैख़ हमीदुद्दीन, भी कुछ देर चुप बैठे रहे फिर बोले कि यह चबूतरा कुछ और बड़ा कर दिया जाए तो प्रांगण साफ़ दिखे। हज़रत मख़दूमे जहाँ उनकी यह बात सुनकर उठ खड़े हुए और फ़रमाया:

> ''मैंने समझा था कि तुम आधी रात को आए हो तो अवश्य ही कुछ विशेष धार्मिक समस्या होगी, पर तुम तो चबूतरे की बात कर रहे हो। यह क्यों नहीं

कहते कि इस चबूतरे को ढा दिया जाए और इसकी ईंट से ईंट बजा दी जाए।"

बड़े-बड़े आलिम, धर्मपण्डित, बुद्धिजीवी, शोधकर्त्ता और शिक्षाविद आपकी सेवा में आते और अपनी-अपनी उलझन और समस्या आपके आगे रखते और आप उन्हें बड़ी सुगमता और सहजता से इस प्रकार सुलझा देते कि लोग आश्चर्यचकित रह जाते। सैकड़ों पुस्तकें मानों आपको कन्ठस्थ थीं। आप का व्यक्तित्व स्वंय में एक उच्च कोटी के ग्रन्थालय से कम नहीं था। ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी संदर्भ में जिस किताब से कोई अंश या अर्थ आप सुनाते या बताते तो उसके लिए आपको वह पुस्तक उस समय देखनी पड़ी हो। अगर ऐसा कभी हुआ भी तो दूसरों की संतुष्टि के लिए आप अपने ग्रन्थालय से किताब मँगवाते और उन्हें वह अंश देखने के लिए कहते।

धर्म विधान (फ़िक़ह) से सम्बन्धित कोई प्रश्न पूछता तो आप ऐसा उत्तर देते जिससे धर्म अनुसरण करने की रुचि बढ़े, जटिलता का मार्ग नहीं चुनते, सहजता और सरलता को पसन्द करते। शीघ्र आलोचना से बचते। समस्या की जड़ तक पहुँचते और सर्वमान्य हल निकालते। स्वभाव में आक्रामकता नहीं थी, यही कारण था कि आप जिस मार्ग का चुनाव करते उसमें में भी उग्रता नहीं होती। सभी के विचारों का आदर करते और संतुलित मार्ग अपनाते। धर्मविधान के सभी मार्गों का आपको असामान्य ज्ञान था और आप सभी का आदर करते थे। प्राय: हनफ़ी मार्ग को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देते परन्तु कभी-कभी दूसरों की भी कुछ विशेषताओं को स्वीकार करते थे। पवित्र कुरआन की व्याख्या (तफ़सीर) पर आप का ज्ञान बहुत विस्तृत था। पवित्र कुरआन के रहस्यों की ऐसी व्याख्या करते कि मन झूम उठता, ऐसे मर्म पर से परदा उठाते कि अर्थ पूर्णत: स्पष्ट हो जाता। अरबी और फ़ारसी में लिखी गई गई तफ़सीरों पर आप की सुक्ष्म दृष्टि थी और आप सभी की गुण्वत्ता का बखान करते रहते थे परन्तु फ़ारसी में लिखी गई **तफ़सीरे ज़ाहेदी** आपके समीप सर्वश्रेष्ठ

थी और इसका अध्ययन आपके समीप सभी तफ़सीरों के अध्ययन करने तुल्य था। **तफ़सीरे किरमानी** का भी आप कभी-कभी उदाहरण देते थे।

आपके सौ पत्रों के संग्रह की ही भाँति प्रिय शिष्य और सेवक हज़रत ज़ैन बदरे अरबी का संसार पर आभार है कि उन्होंने आपके प्रवचनों को भी संकलित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। हज़रत ज़ैन बदरे अरबी प्रायः प्रतिदिन आपकी सेवा में उपस्थित रहते, और बड़ी तन्मयता के साथ लोगों के प्रश्न और आप के उत्तर सुनते। कभी स्वंय भी प्रश्न करते और सभी प्रश्नोत्तर को यथाशीघ्र काग़ज़ पर ले आते। जब लिखते-लिखते एक पुस्तक के बराबर प्रवचन जमा हो जाते तो अनुकूल समय देखकर हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में उसे ले जाकर दिखाते और त्रुटियों को दूर करने का निवेदन करते। हज़रत मख़दूमे जहाँ उनकी इस सेवा से बड़े प्रसन्न होते और उनके द्वारा संग्रहित अपने प्रवचनों पर एक दृष्टि डाल कर आवश्यकतानुसार अपना लेखनी लगा देते। ऐसे ही उपलब्ध प्रवचनों के संग्रहों का यहाँ संक्षिप्त परिचय कराया जा रहा है।

(i) मादेनुलमआनी

(रहस्यों का ख़ज़ाना)

यह 63 भागों में विभक्त हज़रत मख़दूमे जहाँ के अनमोल प्रवचनों का संग्रह है। इसके संग्रह कर्त्ता, हज़रत ज़ैन बदरे अरबी, संग्रह के क्रम की चर्चा करते हुए अपनी भुमिका में लिखते हैं-

> ''मैं ने अपनी शक्ति और क्षमता के अनुसार जो प्रवचन सुने उनको याद रख लिया और लिखना प्रारम्भ किया। यथा सम्भव इसका पूरा ध्यान रखा कि आपके पवित्र मुख से जो शब्द निकला है, वही संग्रह में आये, यदि कभी मैं वह शब्द या वाक्य भूल गया हूँ (जो कि बहुत कम हुआ है) तो मैंने मजबूरीवश दूसरे से उस अर्थ को पूरा कर दिया है

क्योंकि उद्देश्य तो अर्थ है। मैं इस अक्षम्य पाप में कभी संलिप्त नहीं हुआ कि जान बूझकर प्रवचन के अर्थ में अपनी ओर से कोई फेरबदल किया हो, यहाँ तक कि अगर कोई बात याद न रही तो उस पृष्ठ को रिक्त छोड़ देता और जब सेवा का अवसर प्राप्त होता, तो उसके बारे में पूछने का साहस करता फिर जो उत्तर प्रदान होता, तो उसे भली भाँति याद कर लेता और रिक्त पृष्ठ को पूरा कर लेता। जब यह संग्रह पूर्ण हो गया तो मात्र इस विचार से कि शायद मनुष्य होने के कारण कहीं कोई भूल चूक न हो गई हो, आपकी सेवा में निवेदन किया कि आपके सेवक ने आपके प्रवचन संग्रहित किये हैं यदि वह सुन लिया जाए तो इस तुच्छ के दोनों लोक धन्य हो जाएं। अपार दया से मेरा यह निवेदन स्वीकार हुआ फिर तो मुँह माँगी मुराद मिल गई। सुविधानुसार आपकी सेवा में शब्दश: और अक्षरश: पूरा संग्रह मैं ने आपको सुनाना प्रारम्भ किया। कई स्थान पर भूलवश इस तुच्छ से शब्द छूट गए थे या अनुचित लिखा गए थे, उसे बड़ी दया और कृपा करते हुए ठीक कर दिया गया। जिस समय हज़रत मख़दूमे जहाँ इस प्रवचन को सुनते तो समय-समय से कोई उदाहरण या घटना या कविता या अतिरिक्त व्याख्या भी बताते जाते थे, उनको भी मैं ने इस प्रवचन में लिख लिया ताकि हज़रत के बहुमुल्य प्रवचन से संसार वाले वंचित न रहें''।

इस संग्रह में हज़रत मख़दूमे जहाँ के 749 हिजरी/1348-49 ई० से पूर्व के प्रवचनों का संग्रह है।

हज़रत सैयद शाह क़सीमुद्दीन शरफ़ी के द्वारा किया गया

(v) मलफ़ूज़ूस्सफ़र

इसके संग्रहकर्त्ता भी हज़रत ज़ैन बदरे अरबी हैं इस संग्रह में 762 हि०/1360-61 ई० में दिये गए प्रवचनों को एकत्र किया गया है। इस संग्रह में हर सभा की तिथि भी लिख दी गयी है।

(vi) तोहफ़ए ग़ैबी

इसके संग्रहकर्त्ता भी हज़रत ज़ैन बदरे अरबी हैं इस संग्रह में 759 हि० से 770 हि० (1357 ई० 1368 ई०) तक के प्रवचन एकत्र किये गए हैं।

(3) दूसरों की रचनाओं की व्याख्या और उन पर टीका

हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रवचनों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आपके शिष्यों में से कई एक आपकी सेवा में विभिन्न पुस्तकों का पाठ लेते थे और आप उनको इसकी शिक्षा देते समय सुन्दर व्याख्या भी करते जाते थे। अगर उन सब व्याख्याओं को सावधानी के साथ एकत्र किया गया होता, तो कई पुस्तकों पर मख़दूमे जहाँ की टिप्पणी से संसार लाभान्वित होता। कुछ पुस्तकों पर उपलब्ध उनकी व्याख्या का विवरण इस प्रकार है :

शरहे आदाबुल मुरीदीन

आदाबुल मुरीदीन अरबी भाषा में सूफ़ीवाद की महत्पूर्ण पुस्तक है इसके लेखक हज़रत शैख़ अबू नजीब सोहरवर्दी (नि: 563 हि०) थे जो कि आपके फ़िरदौसी सिलसिले के मुख्य गुरु गुज़रे हैं।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अपने एक प्रिय शिष्य मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन ईसा बल्ख़ी जो कि अशरफ़ बिन रुकन के नाम से प्रसिद्ध थे, की इच्छा और निवेदन पर आदाबुल मुरीदीन की व्याख्या

का कार्य 765 हिजरी के रबीउल अव्वल मास में शुक्रवार के दिन प्रारम्भ किया और एक वर्ष 10 महीना उपरांत 766 हि० के ज़िल हिज्जा मास में मंगल के दिन समाप्त किया।

इसकी व्याख्या हज़रत मख़दूमे जहाँ ने इस प्रकार की है कि सर्वप्रथम थोड़ा अरबी मूल लिखते हैं, फिर उसका फ़ारसी भाषा में अनुवाद करते हैं इसके बाद भाषा विज्ञान और व्याकरण के अनुसार व्याख्या प्रारम्भ करते हैं और अन्त में सूफ़ी दर्शन के अनुसार सुन्दर और स्पष्ट व्याख्या करते हैं। इस टीका में हज़रत मख़दूमे जहाँ के ज्ञान का सागर स्पष्टत: झलकता है। यह टीका बहुमूल्य है और इसमें सम्पूर्ण सूफ़ी दर्शन समा गया है। हज़रत मख़दूमे जहाँ की व्याख्या और टीका का ढंग बड़ा प्यारा और सरल है। हर समस्या पर विस्तृत चर्चा की है और सभी संभव हल एकत्र कर दिये हैं।

आदाबुल मुरीदीन की एक टीका हज़रत सैयद मुहम्मद गेसूदराज़ बन्दानवाज़ (निधन : 825हि०/ 1422ई०) जिनकी दरगाह कर्नाटक के गुलबर्गा में स्थित है, की भी मिलती है पर वह संक्षिप्त है। हज़रत मख़दूमे जहाँ की इस टीका की सूचना भारत से बाहर कम ही पहुँची है। इस टीका पर शोध और इसके प्रकाशन से हज़रत मख़दूमे जहाँ का अदभूत ज्ञानी व्यक्तित्व और भी उभर कर सामने आ जाएगा।

18वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान मुल्ला गुलाम यहया बिहारी ने मख़दूमे जहाँ की इस टीका पर बड़े परिश्रम से अपना फुटनोट लगाया था। इस टीका के मूल का थोड़ा सा आरंभिक भाग मुल्ला गुलाम यहया बिहारी के फुटनोट सहित प्रकाशित हुआ था और उसका उर्दू अनुवाद भी छप चुका है। परन्तु सम्पूर्ण पुस्[illegible]क हस्तलिखित ही है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के संदेश

प्राणियों की सेवा ही परमधर्म

हज़रत मख़दूमे जहाँ के जीवन का मुख्य ध्येय प्राणियों की सेवा और लोगों के काम आना था। प्राणियों की सेवा को ही वह सारे ब्रह्माण्ड के रचयिता अल्लाह पाक की प्रसन्नता का मार्ग समझते थे। लोगों की सेवा को वे पैग़म्बरों का कत्तर्व्य समझते थे और दूसरों की कठिनाइयों को अपने ऊपर लेते रहते थे, दूसरों के दुखों से दुखी रहना आपकी दिनचर्या थी। इस सम्बन्ध में अपने शिष्यों और श्रद्धा रखने वालों को भी सदा उपदेश देते रहते थे। विशेष रूप से प्रशासनिक अधिकारियों और राजपरिवार के सदस्यों को जब भी चिट्ठी लिखते तो उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट कराते और इस सम्बन्ध में कुछ करने की इच्छा जगाते और मनोबल बढ़ाते। तत्कालीन प्रभावशाली प्रशासनिक अधिकारी मलिक ख़िज़्र को एक पत्र में लिखते हैं :

> ''इस अन्धकारमय संसार में लेखनी, मुख, धन दौलत और पद से जितना सम्भव हो सके दीन-दुखियों को आराम पहुँचाओ। व्रत, नमाज, पुण्य सब अपने स्थान पर अच्छे ज़रूर हैं लेकिन दिलों को सुख पहुँचाने से अधिक लाभकारी नहीं''।

आपके पत्रों के संग्रह में लोगों की सेवा, प्राणियों पर दया और दिल जोड़ने का संदेश मुख्य रूप से मिलता है अपने एक पत्र में इसी ओर संकेत करते हुए बड़ा प्यारा संदेश देते हैं :-

> ''एक महान संत से लोगों ने पूछा कि परमात्मा तक पहुँचने के मार्गों के बारे में बताईये तो वे बोले इस सृष्टि का हर एक कण परमात्मा तक पहुँचाने का मार्ग है, लेकिन सर्वोत्तम और सबसे निकटतम मार्ग यह है कि लोगों के दिलों को प्रसन्न किया जाए, इससे निकटतम मार्ग और कोई नहीं। मैंने जो कुछ पाया इसी मार्ग से पाया और अपने शिष्यों को भी

इसी की शिक्षा देता रहता हूँ''।

अपनी इसी विशेष शिक्षा पर बल देते हुए एक पत्र में लिखते हैं:

''एक संत पुरुष के समक्ष एक व्यक्ति समकालीन राजा की इस प्रकार प्रशंसा कर रहा था कि इस नगर का राजा रात भर जागता है और नींद लेने के बजाय ईशजाप और नमाजें पढ़ने में रात व्यतीत करता है, तो उस संत पुरुष ने टोका और कहा कि बेचारा राजा अपना मार्ग भूल गया है इसलिए कि उसके लिए ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग यह है कि वह भूखों को भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन कराए, वस्त्रहीनों को भाँति-भाँति के कपड़े पहनाए, अप्रसन्न हृदय को प्रसन्नचित करे और जरूरतमन्दों की आवश्यकता की पूर्ति करे। अत्यधिक नमाज़ें और ईश-जाप में रात भर जागना संतों का काम है, हर मनुष्य को अपने लिए उचित कार्य करना चाहिए। रात भर जाग कर ईश-भक्ति करने से उत्तम यह है कि किसी एक टूटे दिल का दुख दूर करे, उसके काम आ जाए और उसके मुर्झाए दिल को प्रसन्न करे। क्योंकि कोई भी टूटी वस्तु अपना मूल्य नहीं रखती लेकिन टूटे दिल बड़े मूल्यवान होते हैं। कहते हैं कि एक दिन पैग़म्बर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इस प्रकार परमात्मा से विनती कर रहे थे कि हे परमात्मा, मैं तुम्हें कहाँ खोजूँ? तो उत्तर मिला कि मैं टूटे दिलों के समीप रहता हूँ। हज़रत मूसा ने आदर के साथ कहा कि हे परमात्मा मेरे दिल से अधिक किसी का दिल टूटा हुआ नहीं है तो आदेश हुआ कि फिर मुझे वहीं खोजो मैं वहीं मिलूँगा''।

दिल तोड़ने का कोई प्रायश्चित नहीं

एक बार हज़रत मख़दूमे जहाँ रमज़ान मास के अतिरिक्त सामान्य रोज़े से थे तभी आपकी सेवा में एक वृद्धा बड़ी श्रद्धा और प्रेम के साथ कुछ खाना पका कर लाई और उसे खा लेने का निवेदन करने लगी। आपने उसका निवेदन सुना। एक पल विचार किया और फिर उसके लाए खाने में से कुछ खा लिया वह अति प्रसन्न हुई और आशीर्वाद देती हुई लौट गई। हज़रत मख़दूमे जहाँ के उपस्थित शिष्यों में से कुछ को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने प्रश्न किया कि आप तो रोज़े से थे, फिर कैसे खा लिया? तो हज़रत मख़दूमे जहाँ ने फ़रमाया:

> ''रोज़ा तोड़ने का प्रायशचित तो है परन्तु दिल तोड़ने का कोई प्रायश्चित नहीं!''।

संसार का त्रिया-चरित्र

सूफ़ी संतों ने संसार की मोह-माया, क्षणिक और भौतिक सुखों के नशे में चूर और इसी मार्ग पर चलने वाले लोगों को इन सब की वास्तविकता से अवगत कराया और उनका मोह भंग कर परलोक का प्रेम जगाया तथा ईश भक्ति का संदेश दिया, हज़रत मख़दूमे
ने भी इस सम्बन्ध में विशेष रूप से ध्यान दिया और बड़ा
संदेश दिया। अपने एक कालजयी पत्र में इस ओर इ
दिलाते हैं :

> ''हे भाई, तुम्हें ज्ञात हो कि यह दुनि
> कपट से भरी हुई है और बड़ी
> रंग में नही रहती। हर समय
> यह दिखती तो मधु है
> यह दुनिया प्रातः कि
> में दूर कर देती
> करती है तो

इसके प्याले में घास और तिनके होते हैं और उस पर मक्खी भिनभिनाती रहती है। इसीलिए कहा गया है कि इसके मदिरा के प्याले को मुँह न लगाओ क्योंकि उसमें विष ही विष है और इसके फूल की पत्तियों को न सूँघो क्योंकि इसमें काँटे छिपे हैं।

यह बूढ़ी दुल्हन बहुत से बर्बर सम्राटों को मौत के घाट उतारना और अपने प्रेमियों को पैरों से रौंदना नहीं भूलती। यदि किसी को कुछ देती है तो फिर उसे लौटा भी लेती है। सत्य तो यह है कि यह दुनिया जादूगरनी है, इसका जादू तो यहाँ तक है कि इसकी चमक दमक स्वप्न के जैसी है, इसका खाना और पहनना भी काल्पनिक है और इसका सम्पूर्ण स्वाद और वासना स्वप्न दोष की भाँति है। फिर भी लोग इसके दीवाने हैं और इसी के पीछे भागे-भागे फिर रहे हैं।

एक बुद्धिजीवी से संसार की वास्तविकता के बारे में पूछा गया तो उसने कहा- यह दुनिया एक स्वप्न है या हवा का झोंका है या कोई काल्पनिक कथा है। फिर उस व्यक्ति के बारे में प्रश्न किया गया जो कि दुनिया पर मर मिटा है तो उसने कहा कि- ऐसा व्यक्ति भूत प्रेत है या पागल है।

हे भाई! संतों का कथन है कि दुनिया में प्रसन्नता का कोई प्रसंग ऐसा नहीं कि जिसमें दुख छिपा हुआ ीं है। क्योंकि ऐसा सुख जिसमें दुख न हो, ऐसी ता जिसमें मातम न हो रचयिता (अल्लाह) ने नहीं।

पा (मसीह)[अलैहिस्सलाम] ने एक वृद्धा को टेहाल थी, उसका मुख भी काला पड़

गया था और देखने में बड़ी कुरूप लग रही थी, तो आपने उससे पूछा कि तुम कौन हो, उसने कहा कि मेरा नाम दुनिया है। फिर आपने पूछा यह तो बताओ कि अब तक तुमने कितने को पति बनाया। उसने उत्तर दिया अनगिनत, जिनका न अन्त बताया जा सकता है और न अनुमान लगाया जा सकता है। *हज़रत ईसा ने पूछा- इन पतियों में से कितनों ने तुझे* तलाक़ दी उसने उत्तर दिया कि- एक ने भी तलाक़ नहीं दी बल्कि मैंने ही उन सब को मौत के घाट उतारा, वे सब मिट गए और मैं अपने स्थान पर हूँ। हे भाई! यह संसार संकटों से भरी नदी है, जिसमें रक्त ही रक्त है। ऐसी प्रेमिका है जिसका यौवन जानलेवा है। ऐसी महबूबा है जो वस्तु विहीन है। इसकी प्रसन्नता भी आश्चर्यजनक है और इसका मर मिटना भी विस्मयजनक है। यह अपना यौवन छिपा कर रखती है। यह ऐसी सुन्दर और मनमोहक है, जो अपने मुखमण्डल पर नक़ाब लगाए रखती है। इसकी चाल भी मस्तानी है और दिल में प्यार, मुहब्बत नाममात्र भी नहीं। यह सब को प्यासा रखती है और सब को धोखे में रख अतृप्त छोड़ देती है। अगर सुबह में कुछ देती है तो रात में लौटा लेती है। अगर प्रातः आदर सत्कार करती है तो सन्ध्या में अनादर कर डालती है। यह बूढ़ी दुल्हन ढेर सारे नवयुवकों और राजाओं को मार डालना और अनगिनत प्रेमियों को पैरों से रौंदना भली भाँति जानती है। इसके बाद भी लोग उसके त्रिया-चरित्र के जाल में फँस जाते हैं। इसके अन्दर खोट ही खोट है केवल एक ही अच्छाई है कि यह परलोक के लिए खेती है, इसमें

बीज डाल कर परलोक में फ़सल प्राप्त की जा सकती है''।

(फ़वायदे रुकनी)

सारे पापों की जड़ दुनिया का प्रेम है

दुनिया की भर्त्सना से यह नहीं समझना चाहिये कि हज़रत मख़दूमे जहाँ संसार को सर्वस्व छोड़ कर वनवास जाने को कह रहे हैं और मनुष्य जो एक सामाजिक प्राणी है, उसे समाज के सम्पूर्ण उत्तरदायित्व और कर्त्तव्यों से मुँह मोड़ने का संदेश दे रहे हैं। बल्कि उनका मार्ग तो वही मार्ग है, जिस पर चल कर स्वंय पैग़म्बर हज़रमत मुहम्मद मुस्तफ़ा[सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम] ने एक जीवन्त उदाहरण संसार के सामने रखा था। जिसमें पालनहार अल्लाह पाक के प्रति दायित्वों के निर्वाह के साथ-साथ समाज के प्रति दायित्वों और कर्त्तव्यों के भी निर्वहन के बिना मोक्ष और मुक्ति की प्राप्ति का प्रश्न ही नहीं उठता। दुनिया की भर्त्सना से कोई दिगभ्रमित न हो इसीलिए स्वंय हज़रत मख़दूमे जहाँ इस भर्त्सना के तात्पर्य और वास्तविकता की व्याख्या अपने एक पत्र में इस प्रकार करते हैं-

> ''पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद[सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम] ने कहा है कि ''सारे पापों की जड़ दुनिया का प्रेम है'' यह नहीं कि दुनिया का स्वामित्व पापों की जड़ है। प्रेम का स्थान हृदय है, हाथ नहीं है तो अगर किसी के स्वामित्व में सारी दुनिया हो परन्तु उसका मोह उसके दिल में न हो और उसका व्यय अपने सुख और वासना की पूर्ति में नहीं बल्कि अल्लाह पाक की उपासना तथा ईशभक्ति में, दान-दक्षिणा में धर्मानुसार करता हो तो इसमें कोई भय नहीं, कोई दुविधा नहीं। क्या यह नहीं देखते कि सारे संसार का स्वामित्व पूर्व से पश्चिम तक हज़रत सुलैमान[अलैहिस्सलाम]

को प्राप्त था परन्तु उसका मोह उनके दिल में नहीं था इसीलिए उससे उन्हें कोई हानि नहीं पहुँची। दुनिया का मोह है या नहीं इसकी वास्तविक पहचान यह है कि उसके लिए दुनिया का होना और न होना दोंनो बराबर हों अर्थात न तो दुनिया के होने और उसके पास रहने से उसे प्रसन्नता हो और न ही दुनिया के न होने या उसके हाथ से निकल जाने से उसे दुख हो और यह बहुत ही बड़ा काम है हर व्यक्ति के लिए असान नहीं''।

उद्देश्य के अनुसार कर्म के प्रकार

अपने एक और पत्र में, जो शैख़ उमर को लिखा गया, रत मख़दूमे जहाँ इस विषय को और भी आसान और सहज करके ते हैं कि :

''अब यह जान लो कि दुनिया में जो वस्तु हैं या कर्म हैं वे तीन प्रकार के हैं :-

एक वह कि दुनिया का प्रयोग केवल दुनिया के लिए हो। लालसा भी दुनिया और लक्ष्य भी दुनिया किसी भी प्रकार से परमात्मा के लिये न हो तो यह सब हर प्रकार से पाप ही पाप है।

दूसरा वह है जो दर्शाता तो हो कि यह सब परमात्मा के लिए है लेकिन वस्तुत: उसका लक्ष्य दुनिया ही हो। उदाहरणस्वरूप उसका मोह और वासना को तजना इस लिए हो कि लोगों की दृष्टि में मैं साधु और सज्जन दिखुँ। लोग महात्मा समझें। शिक्षा की प्राप्ति हो कि लोगों में आदर सम्मान और पद प्राप्त हो, लोग पंडित समझें और इस ज्ञान के द्वारा संसार का धन-दौलत एकत्र किया जा सके तो

यह सब चाण्डाल है यद्यपि स्पष्ट यही होता है कि यह सब परमात्मा के लिए है।

तीसरा प्रकार वह है कि संसार में रहते हुए संसार को भोगते हुए लक्ष्य और कामना मात्र परमात्मा की प्रसन्नता हो, यही प्रशंसनीय है। जैसे खाना, पीना, सोना इस कारण हो कि परमात्मा की उपासना कर सकेगा और विवाह करने, वैवाहिक जीवन बिताने के पीछे लक्ष्य यह हो कि परस्त्री गमन से बचेगा और उससे जो संतान पैदा होगी वह सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके दूत पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नाम लेवा होगी और अपने मस्तक से मसजिदों को आबाद करेगी, और थोड़ी आवश्यक सामग्री और वस्तुओं को जमा करना कि इससे उपासना और आराधना में संतुष्टि और आराम मिलेगा ौर अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए लोगों का ि न होना पड़ेगा तो इस लक्ष्य और उद्देश्य से ो भोगना प्रशंसनीय है"।

(मकतूबाते दो सदी)

ष्यों के प्रकार

पने एक पत्र में मनुष्यों का प्रका

लैहे वसल्लम के कथनुसार
एक जानवारों की
। और क्षमता खाने,
त तक सीमित है। पवित्र
। प्रकार के लोग जानवरों की
नसे भी गए गुज़रे।

और दूसरा प्रकार ऐसे लोगों का है जो फ़रिश्तों और दूतों की भाँति है उनकी सारी क्षमता और मेहनत, जाप, उपासना, साधना और अराधना में लगी है। उनका गुण फ़रिश्तों का गुण है। और एक प्रकार उनका है जो पैगम्बरों की तरह हैं, उनकी क्षमता और उद्देश्य परमात्मा का प्रेम और उसकी भक्ति है। इसी को कहते हैं कि हर व्यक्ति का मूल्य उसकी क्षमता के अनुसार होता है''।

(फ़वायदे रुकनी)

शिक्षा आवश्यक है

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने शिक्षा की प्राप्ति में स्वंय बड़ा उज्जवल उदाहरण स्थापित किया था और वे शिक्षा की महत्ता और आवश्यकता के बहुत बड़े पारखी थे अपने एक शिष्य को इस ओर ध्यान दिलाते हुए लिखते हैं कि

''रात दिन शिक्षा की प्राप्ति में लगे रहो हो और इसे अपने लिए आवश्यक कर लो। आराम, विश्राम, नींद, भूख सभी [illegible] रे धकेल दो क्योंकि शिक्षा हर प्रसंग अर्थात तप और साधना में पवित्रता की भाँति है। जिस प्रकार नमाज़ पढ़ने में पवित्रता आवश्यक है उसी प्रकार कोई भी कर्म बिना ज्ञान के सही नहीं होता। कहते हैं कि ज्ञान और शिक्षा नर है कर्म मादिन है धर्म और धन इसी से जन्म लेता है। कोई भी कर्म बिना शिक्षा के फलदायक नहीं होता जैसे भीतर से खाली बीज फल नहीं पैदा करता''।

(मकतूबाते दो सदी)

(70)

सत्संग के लाभ

शिक्षा की प्राप्ति के साथ-साथ सत्संग भी चरित्र निर्माण में अति आवश्यक है हज़रत मख़दूमे जहाँ फ़रमाते हैं :

''जिस प्रकार अनपढ़ों और अशिक्षा से दूर रहना आवश्यक है उसी प्रकार ज्ञान का संग ज्ञानियों का सत्संग भी अति आवश्यक है। ढेर सारे तप और साधना वहाँ नहीं पहुँचा सकते जहाँ सूफ़ी संतों के एक दिन का सत्संग पहुँचा देता है बस इस प्रकार समझो कि एक तुच्छ हीन चींटीं को मक्का पहुँचने की लालसा जगी तो वह कबूतर के पैरों से चिमट गई और वहाँ पहुँच गई। क्या यह नहीं देखते की लकड़ी और घास-फूस की प्रकृति में एक स्थान पर पड़े रहना है और जब इसी लकड़ी और तिनके को पानी का साथ और संग मिल जाता है। तो पानी की धारा के साथ यह भी बहने लगता है, इसी प्रकार चींटी उड़ने का गुण नहीं रखती परन्तु कबूतर का संग प्राप्त हुआ तो कबूतर की उड़ान के साथ चींटी भी उड़ने लगी। बहना पानी का गुण है और उड़ना कबूतर की प्रकृति, केवल संग और साथ के कारण लकड़ी और चींटी को यह बात प्राप्त हो जाती है। दूसरा उदाहरण लोहे का लो उसकी प्रकृति है कि पानी की सतह पर ठहर नहीं सकता और न चल सकता है यद्यपि एक कण ही क्यों न हो परन्तु वही लोहा जब नाव की लकड़ियों में जड़ दिया जाता है और उसी के साथ लग जाता है तो चाहे उसका वज़न एक मन या दो मन क्यों न हो, वही लोहा नाव की लकड़ी के संग रह कर पानी की सतह पर रुका भी रहेगा और तैरता भी रहेगा। सूफ़ी संतों के

सत्संग की महत्ता और उसके प्रभाव और फल को इसी से समझो, जानो और पहचानो कि मात्र दिखावे और प्रथानुसार उपासना और अराधना से बिना किसी पारंगत सूफ़ी संत का सत्संग प्राप्त किये छुटकारा नहीं मिल सकता''।

(मकतूबाते सदी)

ढाई आखर प्रेम का

प्रेम, मुहब्बत, इश्क़ सूफ़ी संतों के संदेश का मुख्य प्रसंग रहा है हज़रत मख़दूमे जहाँ ने भी इस विषय पर विभिन्न पत्रों में ध्यान आकर्षित किया है। एक पत्र में इस प्रकार लिखते हैं:-

''ए भाई, तुम्हें ज्ञात हो कि जिस तरह नमाज़ और रोज़ा आवश्यक है उसी प्रकार अन्तर्मन के लिए प्रेम, मुहब्बत और इश्क़ फ़र्ज़ और आवश्यक है। प्रेम व मुहब्बत का जन्म स्थान दुख और पीड़ा है। इश्क़ बन्दे (मनुष्य) को अल्लाह तक पहुँचाता है, इसीलिये इश्क़ को अल्लाह तक पहुँचने वाले मार्ग हेतु आवश्यक कर दिया गया है। इश्क़ जीवन है और इश्क नहीं तो मौत है कहा गया है कि इश्क़ अग्नि है और यह जिस स्थान पर पहुँचता है उसे जला कर भस्म कर देती है। अल्लाह के प्रेमियों का हृदय ढका हुआ अग्नि कुण्ड है। अगर इसमें से एक चिंगारी भी बाहर आ जाए तो समस्त ब्रह्मांणड को जला कर राख कर दे।

कहा जाता है कि सारे संसार के पाप के लिए नर्क की आग है और नरक को दण्ड देने के लिए प्रेमियों के दिल की आग है। अगर उनके हृदय पर पानी से भरी सारी नदियों को बहा दिया जाए तो

उनका सारा जल अग्नि हो जाए। यह संसार की अग्नि ईशप्रेमियों के ह्रदय की अग्नि के लिए ईंधन की तरह है। यही वह स्थान है, जिससे यह बात कही गई है :

जो प्रेम में आग की तरह न हुआ वह इश्क के स्वादों से लाभान्वित नहीं हुआ।

कल प्रलय (क़यामत) के दिन जब अल्लाह के प्रेमी अपनी क़ब्रों से बाहर आएंगे तो, अपने सर्वस्व पर विचार करेंगे और यदि अपने दुख दर्द और प्रेम की पीड़ा में तनिक भी कमी या ह्रास पाएंगे। तो इस प्रकार रोएंगे और चिल्लाएंगे तथा विनती करेंगे कि नर्क वालों को भी इनकी पीड़ा पर करुणा आएगी इसी अर्थ में यह कहा गया है :

अगर इस प्रेम की पीड़ा तुम्हारी साथी बन जाए तो फिर यही पीड़ा हमेशा के लिए तुम्हारी मार्गदर्शक बन जाए।

ऐ भाई, अगर तुम से हो सके तो इस प्रेम अग्नि की एक चिंगारी ही प्राप्त कर लो, जो तुम्हारे साथ कब्र में जाए।

ऐ भाई, आशिकों का मार्ग आश्चर्यजनक और विस्मयजनक है और अल्लाह के प्रेमियों के कार्य भयभीत करने वाले और कठिन है। न हर एक मनुष्य इसे सुन सकता है और न ही नपुंसक इसे अपना सकता है। इसके लिए ऐसे दीवाने और मजनूँ की आवश्यकता है जो लोगों के पत्थर खा सके और उनके तीखे बोल सुन सके। ऐसे फ़रहाद की आवश्यकता है जो पहाड़ काट सके और ऐसी ज़ुलेख़ा की आवश्यकता है जो युसुफ़ के नाम की रट

लगा सके इसीलिए कहा जाता है कि

''जाओ खेलो कूदो आशिक़ी तुम्हारे बस की नहीं''

ऐ भाई! जिस दिन आशिकों के नेता (हुसैन बिन मनसूर हल्लाज) को सूली पर चढ़ाया गया उसी दिन हज़रत इमाम शिबली ने अल्लाह पाक के दरबार में यह अनुरोध किया किया कि ऐ अल्लाह! तू अपने मित्रों की हत्या कैसे कर देता है? उत्तर मिला ऐसा मैं इसलिए करता हूँ कि उन्हें उनके खुन का पारितोषिक मिले।

फिर हज़रत शिबली ने पूछा कि उनके ख़ून का पारितोषिक क्या है? तो उत्तर मिला मेरा दर्शन और मेरा सौन्दर्य, जिसे मैं क़त्ल करता हूँ उसके रक्त का पारितोषिक भी मैं स्वंय हूँ।

ऐ भाई, वह अपने प्रेम का सौभाग्य हर किसी को नहीं देता है और न हर व्यक्ति इश्क़ के लायक़ होता है। जो प्रेम और इश्क़ के लायक़ है वही खुदा के भी लायक़ है। जो इश्क़ में ओत-प्रोत हैं वही इसके अन्त: गुणों से परिचित हैं और इश्क़ की महत्ता तो इश्क़ वाले ही जानते हैं। सारा संसार स्वर्ग का अभिलाषी है, इश्क़ का अभिलाषी एक भी नहीं मिलता। इसका कारण यह है कि स्वर्ग मनोकामना की पूर्ति का स्थाान है और इश्क़ का अभिलाषी एक भी नहीं मिलता। इसका कारण यह है कि स्वर्ग मनोकामना की पूर्ति का स्थान है और इश्क़ तो आत्मा की खुराक है। रुपये पैसे के हजारों चाहने वाले मिल जाएंगे। परन्तु मोती और जवाहरात के अच्छे पारखी खोजने से भी नहीं मिलते ।

इश्क़ एक ऐसी सवारी है जो एक ही छलाँग में दोनों

लोकों से आगे पहुँचा देती है।

ऐ भाई, अपने अहंकार से निकल जाओ और स्वंय को इश्क़ के हवाले कर दो, जैसे ही तुम ने अपने आपको इश्क़ के हवाले किया वैसे ही परम लक्ष्य प्राप्त कर लोगे! जानते हो इस मार्ग में जो इतने सारे पर्दे पड़े हुए हैं उनका तात्पर्य क्या है? उनका तात्पर्य यह है कि आशिक़ की आँखों की ज्योति दिन प्रतिदिन तीव्र से तीव्र होती जाए ताकि उस परममित्र परमात्मा की तेजपूर्ण सुन्दरता को बिना किसी अवरोध के देख सके।''

(फ़वायदे रुकनी)

मानव की परिणति उसके लक्ष्य के अनुसार

''ऐ भाई, परमात्मा के विधान का निर्णय है कि प्रलय के दिन हर व्यक्ति का निर्णय उसके कर्मों के लक्ष्य के अनुसार होगा। यदि तुम्हारे हृदय में परमात्मा की चाह और उसका प्रेम भरा हुआ है तो परमात्मा के प्रेमियों और उसे आशिकों के संग तुम्हारा अंजाम होगा। जानते हो उनके लिए पारितोषिक और पुरस्कार क्या है? हुजूर पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया-

''निस्संदेह परमात्मा का एक ऐसा स्वर्ग है, जिसमें न तो स्वर्ग की सुन्दरियाँ हैं और न भव्य भवन हैं बल्कि हमारा पालनहार उस स्वर्ग में हँसते हुए दर्शन देता है। यह वह स्थान है जहाँ न स्वर्ग की की पहुँच है और नर्क की। अगर तुम्हारे मन में स्वर्ग का मोह और लक्ष्य प्रभावी है तो पुण्यात्माओं के संग तुम्हारी सदगति होगी और ऐसे लोगों के लिए पवित्र क़ुरआन के अनुसार फ़िरदौस नामी स्वर्ग, जो सज-सजाकर आतिथ्य के लिए तैयार है, का शुभ

संदेश प्राप्त होता है और यदि संसार का मोह और इसकी चाह तुम पर प्रभावी है तो संसार वालों के साथ ही तुम्हारा अन्त होगा। ऐसे व्यक्तियों के लिए उनकी चाह और लक्ष्य के मध्य खड़ी कर दी गई है। यह वह स्थान है जहाँ सिर पर मिट्टी डालने और अपना मातम करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं अब तुम स्वंय विचार करो कि तुम्हारे मन में लक्ष्य क्या है और किस का मोह है?
परमात्मा की भक्ति और प्रेम प्रभावी है या स्वर्ग का मोह और प्रेम या फिर दुनिया का मोह और लक्ष्य है। तुम्हारे दिल पर जो प्रभावी होगी उसी के अनुसार तुम्हारा अन्त होगा।
अगर किसी पर परलोक का प्रेम और मोह प्रभावी है तो परलोक पूरी सुन्दरता और वैभव के साथ इस प्रकार सामने आएगा कि इसका प्रेमी इसे इसे देखकर हज़ारों प्राण और जान और सुख चैन की बलि देने लगेगा। जैसा कि किसी ने कहा है:
''इस संसार में जिस वस्तु के तुम दीवाने हो प्रलय के दिन वही वस्तु तुम्हारे समक्ष होगी।''
अगर संसार का प्रेम और मोह तुम पर सवार है तो दुनिया अपनी समस्त बुराइयों और खोट के साथ तुम्हारे सम्मुख लाई जाएगी और दुनिया का चाहने वाला इसे देखकर हज़ारों कठिनाइयों और कष्ट के साथ इस पर जान देने के लिए मजबूर होगा जैसा कि कहा गया है:
''संसार में तुम्हारा जीवन जिन विचारों और जिन लक्ष्यों के लिए व्यतीत हुआ प्रलय तक तुम्हारा पहुंचने का मार्ग वही रहेगा।''

ऐ भाई, जब यह बात निश्चित है, तो तुम्हें यह भी ज्ञात होना चाहिए कि संसार में जितने जंगली पशु हैं, उनमें कोई न कोई विशेष गुण होता है और मनुष्य में भी वे गुण विद्यमान होते हैं। संसार में मनुष्य के भीतर जिस गुण का प्रभाव होगा कल प्रलय के दिन उसी गुण का आदेश उस पर लागू होगा, अर्थात् उसी गुण वाले पशु के शरीर में उसको फल मिलेगा। उदाहरण स्वरूप यदि यहाँ किसी पर क्रोध का गुण प्रभावी है तो कल प्रलय के दिन कुत्ते के रूप में अन्तिम फल मिलेगा। अगर किसी पर वासना का भूत सवार है तो सुअर के रूप में उसका अन्त होगा। इसी प्रकार अगर किसी में अहंकार का गुण प्रभावी है तो बाघ के रूप में उसका अन्त होगा और चापलूसी और चमचागिरी का गुण रखने वाले का अन्तिम रूप लोमड़ी का होगा। इसी प्रकार और दूसरे गुणों को समझना चाहिए।

ऐ भाई, बहुत सारे मनुष्य ऐसे हैं कि जिनको तुम मानव रूप में देख रहे हो लेकिन प्रलय के दिन वे जंगली पशू के रूप में उठाए जाएगें और बहुत सारे जंगली पशु ऐसे हैं जो प्रलय के दिन मानव की पंक्ति में खड़े किए जाएंगे। यह कठिन और दुर्गम घाटी है और बड़ा कठोर प्रसंग है। चिन्तन मनन में डूबे रहने वालों के अतिरिक्त किसी को भी इसकी चिन्ता नहीं।

देखो, सुस्ती और लापरवाही ठीक नहीं। धीरे-धीरे इस बात की आदत डालनी चाहिए कि इन बुरे गुणों में कमी आती जाए क्योंकि यदि परमात्मा की दया दृष्टि का सहयोग रहा तो अवगुण पूर्णरूप से दूर हो

जाएंगें और यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। हाँ, जो यह जानना चाहता है कि कल उसके साथ क्या बर्ताव होगा और किस गुण पर उसका अन्त होगा तो उसे चाहिए कि आप ही अपने कर्मो और गुणें का निरीक्षण करे कि उसमें कौन सा गुण प्रभावी है, इसीलिए कि कल प्रलय के दिन उसी के अनुसार परिणति होगी, और यह मालूम करना कोई कठिन कार्य नहीं है।

इसी प्रकार अगर कोई यह जानना चाहता है कि अल्लाह पाक उससे प्रसन्न है या अप्रसन्न तो उसे अपने कर्मो का निरीक्षण करना चाहिए यदि उसके सारे कर्म परमात्मा के आदेशानुसार हैं तो समझ जाए कि परमात्मा की प्रसन्नता उसके संग है क्योंकि आदेशों का पालन प्रसन्नता की पहचान है और यदि उससे सारे कार्य पाप के हो रहे हैं तो समझना चाहिये कि परमात्मा उससे खुश नहीं है। इसलिएये कि पाप और अधर्म परमात्मा की अप्रसन्नता की पहचान हैं और यदि पाप और पुण्य दोनों हो रहा है तो ऐसी परिस्थिति में जो प्रभावी होगा उसी के अनुसार निर्णय होगा। आज का यह जीवन स्थायी जीवन नहीं है। यहाँ के जो कार्य हैं अगर यहाँ न हो सके तो फिर वहाँ उस लोक में कैसे पूरे होंगे। यदि किसी में बुरे गुण है और वह उन्हें दूर नहीं कर सका तो कल प्रलय के दिन उसे स्वर्ग में प्रवेश देकर समस्त विलास और पुरस्कार उसको प्रदान कर दिये जाएं तब भी वह बुरे गुण उससे दूर नहीं होंगे। जो इस संसार में साथ लगे रहे वे लगे ही रहेंगे। ऐसा मनुष्य सम्पूर्ण पुरस्कारों के बावजुद भी भिखारी

ही रहेगा और परम मित्र (अल्लाह) तक पहुँचने से असमर्थ ही रहेगा। इसीलिए इसी संसार में परिवर्तन लाना चाहिए अगर यहाँ नहीं हो सका तो वहाँ भी न होगा''। **(फ़वायदे रुक्नी)**

क्षमायाचक निष्पाप व्यक्ति के समान है

सूफ़ी संतों का प्रमुख कार्य यह होता है कि वे लोगों को पापों से पुण्य की ओर लाते हैं। भौतिक सुखों से मन को उचाट कराते हैं और अलौकिक सुख चैन की लालसा जगाते हैं। जीवन से दुष्टता, बर्बरता और अकर्मन्यता को दूर कर शिष्टता, नम्रता और कर्म प्रेमी होने के गुण जगाते हैं। प्रत्येक सूफ़ी संत समाज में चेतना, कर्त्तव्यनिष्ठा और मानवता का संचार करने वाला होता है। हज़रत मख़दूमे जहाँ एक महान सूफ़ी संत होने के कारण बड़ी सुन्दरता के साथ इस ओर विशेष ध्यान देते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन इसी लालसा में बीता कि लोग परमात्मा के समीप आएं, पापों से मुक्ति प्राप्त करें, मानवता के गुणों से सुशोभित हों और मोक्ष प्राप्त करें। लोगों की पिशाचता और परमात्मा से अनभिज्ञता उनकी नींद उचाट गई थी इसलिए उनके संकलित प्रवचनों में, पत्रों के संग्रह में और दूसरी पुस्तकों में जो विशेष और प्रमुख संदेश मिलता है उसकी एक झलक फ़वायदे रुकनी नामक पुस्तक के छठे फ़ायदे में इस प्रकार मिलती है:-

''ऐ भाई! जन्म से मृत्यु तक पापों से एक दम बचा रहना फ़रिश्तों और ईश-दूतों की विशेषता है और आदि से अन्त तक पापकर्म में लगे रहना शैतान की विशेषता है तथा पाप करना फिर उससे क्षमा और पुण्य की ओर वापस लौटना (तौबा करना) आदम और उसकी समस्त सन्तान अर्थात् मानव की विशेषता है।

मानव केवल पाप के कारण दण्डित नहीं किया जाएगा बल्कि पाप के उपरांत तौबा (क्षमा) न

मांगने अर्थात् पुणः पुण्य की ओर न लौटने के कारण पकड़ा जाएगा। क्या तुम यह नहीं देखते कि यदि मानव ने पाप किया और फिर उस पाप से मुँह मोड़ कर क्षमायाचना करते हुए पुण्य की ओर लौट गया तो सारे लोग इस पर एकमत हैं कि वह पकड़ा नहीं जाएगा। पाप से क्षमा माँगने वाला उस व्यक्ति के समान है, जिसने पाप किया ही नहीं। मानव से पाप हो, इसमें आश्चर्य क्यों है? अरे भाई आदमी वासनाओं और इच्छाओं का मिश्रण है। शैतान पीछे पड़ा है उद्दण्ड मन उसके भीतर छिपा हुआ है।

ऐ भाई, जैसे भी रहो और जिस काम में भी व्यस्त रहो क्षमा याचना से अचेत मत रहो इसलिए कि अल्लाह पाक के कार्य आज्ञाकारी लोगों की आज्ञाकारिता से परे और पापियों के पापों से अधिक पवित्र और पावन हैं। वह जो चाहता है करता है। उसके कार्यों में कारण का प्रवेश नहीं। इसीलिए महात्माओं ने कहा है :

''अनुकम्पा तो मात्र अल्लाह की कृपा पर आधारित है, उसका सम्बन्ध न तो कर्म से है और न किसी के गुणों से है''।

ऐ भाई! मानव को चाहिए कि वह स्वयं पाप में दूषित न हो और यदि उससे पाप हो जाए तो जल्दी से जल्दी उस पाप से मुक्त हो जाए, धर्म विधान का निर्णय है कि छोटे से छोटा पाप भी बार-बार करने से छोटा नहीं रहता बल्कि बड़ा पाप हो जाता है और बड़े-बड़े पाप को करने के बाद सच्चे दिल से क्षमा याचना (तौबा) कर लेने के बाद वह पाप समाप्त हो जाता है।

ऐ भाई! मृत्यु ताक में है, समय भी कम है, अचानक कहीं यमदूत का ललाट दिख गया तो फिर क्या होगा? इसलिए कि काम भी अधूरा है। देखो, यदि तुम पापों में लिप्त और संलग्न हो तो क्षमा याचना का मार्ग मत छोड़ो और उसकी कृपा और अनुकम्पा के उम्मीदवार रहो। तुम फ़िरऔन के जादूगरों से अधिक पापों में लिप्त तो नहीं हो। गुफ़ा वालों (अहसाबे कहफ़) के कुत्ते से अधिक अपवित्र तो नहीं हो, सीना पर्वत की चोटी (तूरे सीना) के पत्थरों से अधिक निर्जीव और शिथिल तो नहीं हो और हन्नाना की लकड़ी से अधिक मूल्यहीन तो नहीं हो। यदि कोई हबशा से (काले) दास को लाए और उसका नाम कपूर रख दे तो इसमें किसी का क्या बिगड़ता है।

(फ़वायदे रुक्नी)

अगर अल्लाह साथ हैं तो यह दिल मसजिद है

पापों से मुक्ति और पुण्य से मित्रता तभी हो सकती है जबकि मनुष्य ईश प्रेम में रम जाये और अल्लाह की प्रसन्नता और इच्छा को अपना परम धर्म स्वीकार ले। इसीलिए हज़रत मख़दूम जहाँ ईश-प्रेम जगाने पर विशेष ध्यान देते थे। इसी ओर रुचि दिलाते हुए लिखते हैं:

"ऐ भाई, तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि इस मार्ग के लिए तजरीद और तफ़रीद आवश्यक है। सम्पूर्ण सम्बन्धों और जीवों से कट जाना तजरीद है और स्वंय अपने आपसे जुदा हो जाना तफ़रीद है, वह भी इस प्रकार कि न दिल में कोई मैल हो, न पीठ पर कोई बोझ हो, न किसी प्रसिद्धि की खोज हो, न मन में इच्छाओं का भण्डार हो और न किसी वस्तु से कोई सरोकार हो। सर्वोच्च आकाश की चोटी से भी

बुलन्द हो। दोनों लोक से उसे घबराहट हो। केवल अपने लक्ष्य (परम मित्र) से अनुराग हो।

यदि दोनों लोक सौंप दिये जाएं और परम मित्र का मिलन न हो तो कोई ख़ुशी, खुशी न रहे और यदि दोनों लोक छीन लिये जाएं और परम मित्र मिल जाएं तो कोई दुख, दुख न रहे। किसी महात्मा ने कहा है:

"अल्लाह के संग कोई घबराहट नहीं और अल्लाह के अतिरिक्त किसी के भी साथ कोई प्रसन्नता और आराम नहीं"

जिसने भी कहा है बहुत सुन्दर कहा है :

"यदि आप साथ हैं तो यह दिल मसजिद है और यदि आप नहीं तो यही दिल अग्नि-कुण्ड है और यदि आप मिल गए तो फिर यही दिल स्वर्ग है।"

ऐ भाई, अल्लाह के अतिरिक्त जितनी वस्तुएं हैं, उनके बिना तो गुज़ारा हो सकता है परन्तु उसके बिना किसी हाल में भी नहीं रहा जा सकता। ----

जब इस स्थान तक मानव पहुँच जाता है तो उस समय स्वत्व की इमारतें ढा देता है, मैं और तू की आखें निकाल देता है, उसकी दृष्टि में मृत्यु और जीवन एक हो जाते हैं ---- खान-पान और वस्त्र के लिए किसी प्राणी का आभारी नहीं होता, वह महान हिम्मत वाला गोताखोर अथाह समुद्र में जान पर खेल जाता है और उसके बदले में रात के अन्धेरे को दूर कर देने वाला मोती प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति बूढ़ी औरत (संसार) के तुच्छ दीये के धुएं पर क्या जान देगा, उसका लक्ष्य तो सर्वशक्तिमान अल्लाह का दरबार होता है, उसका हाथ अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरी की ओर बढ़ता ही नहीं।

उसी की प्राप्ति के लिए पाँव हमेशा आगे की ओर बढ़ाता रहता है। मान सम्मान और पद की सवारी को वह पीछे छोड़ देता है''।

(फ़वायदे रुक्नी)

मेरे पत्रों को कहानी और कथा के जैसे मत पढ़ो

हज़रत मख़दूमे जहाँ अपने लिखे पत्रों को पढ़ने और समझने तथा मार्ग दर्शन के लिए प्रयोग में लाने की विधि इस प्रकार बताते हैं :

''(सर्वशक्तिमान अल्लाह के सही परिचय तक पहुँचने के लिए) एक ऐसी भयानक नदी को पार करना होगा जिसकी लहरें आदमखोर हैं, न कोई नाव है और न कोई नाविक केवल इश्क़ (प्रेम) इस नदी की नाव है। ईश्वर की कृपा नाविक है और इस नदी में भिन्न-भिन्न प्रकार के भय हैं। ऐसे में क्या करोगे? इस सन्यासी के शब्दों को सामने रखो, आशा है कि इस नदी की आदमख़ोर लहरों के भंवर से इनके अध्ययन के कारण सही सलामत पार लग जाओगे। इस नदी को पार करने में जो-जो कठिनाइयाँ आएं, उनका उपचार इन्हीं शब्दों में खोजो, इसलिए कि तुम्हें इन शब्दों के अर्थो का ज्ञान हो चुका है। इस कल्पना के साथ अध्ययन करो कि मानो इसी संन्यासी के मुख से सुन रहे हो।

ऐ भाई, मेरे जो भी लेख तुम तक पहुँचे हैं उन्हें पूरी तन्मयता और हृदय की एकाग्रता के साथ बराबर अध्ययन करते रहो, जिस प्रकार कहानी और कथा पढ़ते हैं उस प्रकार मत पढ़ो।

एक महात्मा से लोगों ने पूछा कि जब ऐसा समय आ जाए कि सदगुरु का सत्संग उपलब्ध न हो तो

उस समय क्या करना चाहिए? उन्होंने उत्तर दिया कि महापुरुषों की रचनाओं में से थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन पढ़ लिया जाए, क्योंकि जब सुर्यास्त हो जाता है तो दीये से प्रकाश लिया जाता है।''

एक और स्थान पर अपने पत्रों के अध्ययन की ओर इस प्रकार ध्यान दिलाते हैं:

तुम भली-भाँति जान लो कि परलोक का ज्ञान सूफ़ी संतों और परलोक के ज्ञानियों की बराबर सेवा करने से ही प्राप्त होता है और ये महात्मा और महापुरुष दुर्भाग्यवश हम लोगों के समय में लाल गंधक (दुर्लभवस्तु) हो गये हैं। ऐसे में क्या करोगे बस यह करना है कि जो पत्र तुम को भेजे गए हैं उन में एक दो पत्र प्रतिदिन चिन्तन-मनन के साथ अध्ययन में रखो, यदि एकांत में पढ़ो तो सर्वश्रेष्ठ है और यह पद्य पढ़ो:

''अगर शक्कर का बोरा नहीं खरीद सकता तो इतना तो कर सकता हूँ कि शक्कर की बोरी पर से मक्खियाँ उड़ाऊँ।''

(**फ़वायदे रुक्नी**)

हज़रत मख़दूमे जहाँ के अनमोल वचन (मकतूबाते सदी से)

- गुनाह से दिल काला हो जाता है। यानी, पाप का डर समाप्त हो जाए, उपासना और भक्ति में मन न लगे और किसी की अच्छी बात बुरी लगे। (पत्र-3)
- गुमनामी हालांकि मन की शांति और आराम का कारण है फिर भी कोई इसे पसंद नहीं करता और प्रसिद्धि में संकट ही संकट है मगर पूरा संसार इसे ही चाहता है। (पत्र-11)
- उस महानतम ख़ुदा की दृष्टि में कोई चीज़ आपने ऊपर ध्यान

देने से अधिक प्रिय नहीं। (पत्र-12)

- सूफ़ी और दिखावे वाले विद्वान में यह अन्तर है कि सूफ़ी का दिल ज़ुबान के आगे होता है और विद्वान की ज़बान दिल के आगे होती है। (पत्र-24)
- जिस प्रकार शारीरिक बल खाने-पीने पर निर्भर है उसी प्रकार आत्मिक बल भूखे प्यासे रहने पर पैदा होता है। (पत्र-33)
- गिद्ध बहुत ऊँचा उड़ता है मगर मुर्दा देखकर नीचे आ जाता है। बाज़ इतना ऊँचा नहीं उड़ता लेकिन जो शिकार करता है जीवित का ही करता है। (पत्र-41)
- साँप और बिच्छू अपने स्थान से इधर उधर कहीं नहीं जाते और किसी को नहीं डसते। ऐसा उनकी भलाई और परोपकार के कारण नहीं है बल्कि मौसम की ठंडक उनको शरारत का अवसर नहीं देती। मौसम बदलते ही उनके लक्षण भी बदल जाते हैं। (पत्र-51)
- लोहे का एक कण भी पानी में डाला जाए तो डूब जाएगा मगर दो चार मन लोहे को लकड़ी में जड़ कर नाव बना ली जाए तो लकड़ी की संगत का प्रभाव यह होगा कि कभी नहीं डूबेगा। (पत्र-55)
- जब खुदा किसी बन्दे के साथ भलाई करना चाहता है तो उसके दुर्गुण उसपर प्रकट कर देता है। (पत्र-64)
- नाखुन से पहाड़ खोदना आसान है मगर मन की इच्छाओं का विरोध करना बहुत कठिन है। (पत्र-82)
- कृपालु की पहचान यही है कि बिना पात्रता के देता है। पात्रता होने पर जो देता है वह कृपालु नहीं कहलाता क्योंकि पात्रता तो दिये जाने का औचित्य साबित करती है और जब मिलने का औचित्य हो तो जो मिला वह देय था। देय की अदायगी कृपा नहीं और न यह कृपालू का गुण है। (पत्र-5)

- जबतक तुझे स्वर्ग और नर्क की चिंता रहेगी तब तक तू सत्य के रहस्य तक नहीं पहुँच सकता जब तू दोनों से बाहर आ जाएगा तब रात की कालिमा से सुबह का उजाला प्रकट होगा। (पत्र-7)
- बन्दगी करने का अर्थ यह है कि जिस काम का आदेश हो उसे करने के लिये दिल बेचैन हो कर तुरंत उसे करने को तैयार हो जाए और बन्दा होना इसको कहते हैं कि जिस हाल में रहो खुश रहो, क्यों? कैसे? इत्यादि मुंह से न निकले। (पत्र-29)
- हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद से लोगों ने पूछा कि खुदा तक पहुँचने का रास्ता कौन सा है? आपने कहा, जब तुम अपने अस्तित्व के रास्ते से हट जाओगे तो खुदा तक पहुँच जाओगे। (पत्र-51)
- एक पीर अपने मुरीदों के साथ किसी रास्ते से पैदल गुज़र रहे थे कि कुछ कुत्ते उनके सामने आ गए। उन कुत्तों को देख कर मुरीदों ने अपने-अपने दामन उठा लिये। पीर साहब ने भी अपना दामन समेट लिया। पीर साहब ने मुरीदों से पूछा कि दामन उठाने के पीछे उनका उद्देश्य क्या था? मुरीदों ने कहा कि कहीं हमारे कपड़े गंदे न हो जाएं और हम नमाज़ के योग्य न रहें। इसपर पीर साहब ने कहा मेरा उद्देश्य तो यह था कि कहीं मेरे दामन से कुत्ते नापाक न हो जाएं। (पत्र-52)
- अपने वलीयों (दोस्तों) को अल्लाह ने संसार से विमुख कर दिया है यानी लोगों की ओर न देखें ताकि प्रसिद्धि से बचे रहें और किसी कठिनाई में न पड़ जाएं। यानी, लोगों को देखने में कहीं खुद न गिर पड़ें। धर्म का नाश करने वाली दो चीज़ें हैं, प्रशंसा और निन्दा। निन्दा से आदमी को दुख होता है और वह प्रशंसा से खुश होता है। (पत्र-9)

(मकतूबाते दो सदी से)

- जनाबे सिद्दीके अकबर (हज़रत अबू बक्र) [रज़ी अल्लाह अन्हो] पत्नी व बेटे को मक्का में छोड़ कर हुज़ूर [सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम] के साथ मदीने को प्रस्थान कर जाते हैं और हज़रत ख़्वाजा ओवैस क़रनी अपनी माँ को छोड़कर हुज़ूर [सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम] के पास कभी नहीं आए। लेकिन दोनों के दिल का मामला और नीयतें उचित, सही और शत-प्रतिशत सच्चाई पर आधारित हैं। (पत्र-3)
- अगर तुम सच्चे प्रेमी हो तो बड़े जनसमूह में प्रेम के रहस्य कभी उजागर मत करो। तुमने देखा नहीं कि प्रेम के मद में डूबकर एक रहस्य मन्सूर ने प्रकट कर दिया तो सूली पर चढ़ा दिये गए। (पत्र-7)
- हज़रत आयशा सिद्दीक़ा से किसी ने पूछा कि आदमी बुरा कब होता है? कहा कि जब अपने आपको अच्छा समझने लगे। (पत्र-8)
- कहते हैं कि एक विद्वान था। चार सौ सन्दूकों में भरी विद्वतापूर्ण किताबें उसे कंठस्थ थीं। उसका काम घूम-घूम कर ज्ञान गोष्ठियों को सम्बोधित करना और पूजा उपासना के अतिरिक्त कुछ और न था। परन्तु उसका मन संसार के प्रेम से भी ग्रस्त था। उस समय से पैग़म्बर को आदेश हुआ कि उस सांसारिक विद्वान से कह दीजिये कि हालांकि तुम दिन रात ज्ञानमूलक गतिविधियों और तप-जप में लगे रहते हो और चार सौ ज्ञान ग्रंथ तुमने याद कर रखे हैं फिर भी अगर तुम्हारे मन में संसार का प्रेम भरा है तो तुम्हारा कोई कर्म स्वीकार्य नहीं। (पत्र-53)
- ख़्वाजा बायज़ीद ने सपने में दर्शन किये तो पूछा कि ऐ ख़ुदा तुझ तक पहुँचने का मार्ग कौन सा है? उत्तर मिला अपने अहं को छोड़ दो और चले आओ। यह नहीं कहा गया कि संसार को छोड़ दो और आ जाओ, लोगों को छोड़कर आ जाओ,

बीवी बच्चों को छोड़ दो और आ जाओ या धन सम्पत्ति को छोड़ दो और आ जाओ और यह भी नहीं कहा गया कि रोज़े रखो, नमाज़ें पढ़ो और चले आओ। इसी से मालूम हुआ कि उस पाक ख़ुदा की कामना करने वाले के लिये अपने अहंकारी अहं को छोड़ना सबसे पहले अनिवार्य है। (पत्र-18)

❂ लोगों ने अपनी इच्छाओं को ख़ुदा बना रखा है और घमंड में हैं कि ख़ुदा को पूज रहे हैं। (पत्र-111)

हज़रत मख़दूमे जहाँ का कविता प्रेम

हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों, प्रवचनों और पुस्तकों में फ़ारसी भाषा की उत्तम कविताओं की पंक्तियाँ बहुत बड़ी संख्या में मिलती हैं जिन्हें अर्थ को स्पष्ट करने और मनमोहक बनाने के लिए गद्य के साथ बड़ी सुन्दरता और दक्षता से हज़रत मख़दूमे जहाँ ने प्रयोग में लाया है। इनमें अधिकतर विख्यात फ़ारसी कवियों या सूफ़ी-संतों की रचनाएं हैं परन्तु कुछ ऐसे पद्य भी हैं, जो किसी भी प्रसिद्ध कवि की कविताओं के संग्रह में नहीं हैं, उनके बारे में विद्वानों का मत है कि यह स्वंय हज़रत मख़दूमे जहाँ द्वारा रचित पद्य हैं। फ़ारसी की तुलना में अरबी भाषा के पद्य कम प्रयोग में आए हैं।

ऐसे अवसर की भी चर्चा मिलती है कि हज़रत मख़दूमे जहाँ के समक्ष किसी ने कोई पद्य सुनाया तो आप उसे सुनकर व्याकुल हो उठे और आप असामान्य रूप से चिंतन में लीन हो गए।

फ़वायदे रुक्नी में एक सम्पूर्ण अध्याय सूफ़ी मार्ग के विभिन्न स्तरों के अनुरूप केवल पद्यों पर आधारित है जिसमें हज़रत मख़दूमे जहाँ ने विभिन्न कवियों की चयनित पंक्तियाँ एकत्र कर दी हैं।

हज़रत मख़दूमे जहाँ कविता के उत्तम पारखी थे और कविता में कवि के मूल विचार तक पहुँच कर उसका आनन्द लेते थे। यही कारण था कि आपके शिष्य और आगन्तुक आपसे किसी-किसी कविता का सही अर्थ जानने का प्रयास भी करते थे और इस सम्बन्ध में भी आप उनका मार्गदर्शन करते थे।

हज़रत मख़दूमे जहाँ को अनगिनत पद्य और कविताएं कन्ठस्थ थीं और आप उनका बड़ी दक्षता के साथ बोलने और लिखने में प्रयोग करते थे। आपके कविता प्रेम का सबसे प्रबल प्रमाण तो यह है कि आप न केवल प्राचीन कवियों की रचनाओं के ज्ञाता थे बल्कि समकालीन कवियों की रचनाएं भी आपके मुख पर रहा करती थीं शेख़ सादी, मौलाना जलालुद्दीन रूमी, शेख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार, अमीर खुसरो, शैख़ शर्फुद्दीन बूअली शाह क़लन्दर पानीपती इत्यादि की रचनाएं विशेष रूप से आपको स्मरण थीं।

अहमद अली सन्देल्वी ने फ़ारसी भाषा के कवियों की चर्चा पर आधारित अपनी पुस्तक '**मख़ज़नुल ग़राएब**' में आपकी रुबाई उद्धृत की हैं:-

ऊदम चूनबवद चोबे बीद आवुरदम
रूए सेयहो मुए सपीद आवुरदम
तु ख़ुद गुफ़्ती के नाउम्मीदी कुफ़्रस्त
फ़रमाने तो बुरदमो उम्मीद आवुरदम

एक प्रसिद्ध अरबी पद्य का फ़ारसी अनुवाद आप इस तरह करते हैं:

अज़ मारे ग़मत गज़ीद: दारम जिगर
कोरा नकुनद, हेच फ़सूने असरे
जुज़ दोस्त के मन शेफ़तए रूए वयम
अफ़सूनो एलाजे मन नदानद दिगरे

हज़रत मख़दूमे जहाँ और मौलाना रूमी

विश्वविख्यात मौलाना जलालुद्दीन रूमी हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रिय कवि रहे हैं। उनकी सुविख्यात मसनवी मौलाना रूम राजधानी दिल्ली से पहले बिहारशरीफ़ की ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में लोकप्रिय हो चुकी थी। ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया और ख़्वाजा नसीरुद्दीन चिराग़ दिल्ली के मलफ़ूज़ात (प्रवचन संग्रहों) में मसनवी मौलाना रूम की चर्चा न के बराबर है जबकि हज़रत मख़दूमे जहाँ के मलफ़ूज़ात मादनुल मआनी में पूरा एक अध्याय मसनवीए मानवी पर है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ दीवान और मसनवी रूमी के बड़े प्रशंसक के और उनकी पंक्तियों पर आप भावविभोर भी हो उठते थे। मख़दूमे जहाँ के प्रिय मुरीद और ख़लीफ़ा मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी तो मौलाना रूम ही की भाँति मख़दूमे जहाँ को अपना शम्स तब्रेज़ मानते थे और ठीक उसी प्रकार उनपर वारी फ़िदा थे जिस प्रकार मौलाना रूम।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के मुरीद और ख़लीफ़ा मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के भतीजे और ख़लीफ़ा मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद बल्ख़ी ने तो मसनवी मौलाना रूम की ही भाँति एक मसनवी '**इफ़्तख़ारे हुसैनी**' की रचना की और उसमें वही भाव परोसा जो मसनवी मौलाना रूम की विशेषता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ और हिन्दवी

भारतवर्ष में सभी सूफ़ी संतों ने जनमानस की भाषा को स्वीकार कर लिखने, बोलने का कार्य किया है और क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा दिया है, यही कारण है कि क्षेत्रीय बोलियों के उत्थान और उनके परिपक्व होने में सूफ़ियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। हज़रत मख़दूमे जहाँ भी हिन्दवी, जो कि उर्दू हिन्दी का प्रारम्भिक रूप था, स्वंय बोलते थे और दूसरों से सुन कर आनन्द भी उठाते थे।

एक बार किसी ने हज़रत मख़दूमे जहानियाँ जहाँगश्त का कथन **बाट भली पर साँकरी** आपके आगे दुहराया तो आप भी बोले **देस भला पर दूर** ।

हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी अपने एक पत्र में लिखते हैं कि एक बार एक कमान्ची (इकतारा वादक) मख़दूमे जहाँ के समक्ष आया और कमान्चा रख कर दोहरा पढ़ने लगा:

एकत कन्दी बेधा बहुतर मरके गर्दन
चिन्ता हीं मा इच्छा मरण तेतहीं नहीं

मख़दूम इस दोहरे को सुनकर बड़े भावविभोर हो उठे और आपकी आँखों में पानी भर आया।

मख़दूमे जहाँ के एक कथन में "**भत**" का शब्द उसी अर्थ

में प्रयोग में आया है जिस अर्थ में आज भी प्रयोग में है। बिहार में पके चावल के लिए "**भात**" का शब्द प्रयोग में लाया जाता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के निम्नलिखित दोहरे बड़े प्रसिद्ध हुए

जी मगन में है कि आई हैं सुहानी रतियाँ
जिनके कारण थी बहुत दिन से बनाई गतियाँ
शरफ़ा गोर डरावन निस अँधियारी रात
वाँ ने पूछे कोई कौन तुम्हारी जात

हज़रत अहमद लंगर दरिया बल्ख़ी बताते हैं कि जिस रात हज़रत मख़दूमे जहाँ की मृत्यु हुई, हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने जो कि अदन (सऊदी अरब की एक प्रसिद्ध बन्दरगाह) में थे, स्वप्न में देखा कि हज़रत मख़दूमे जहाँ यह दोहरा पढ़ रहे हैं:

आई रात सुहाईयाँ
जिन कारन ढइया खाइयाँ

हज़रत मख़दूमे जहाँ के इसी भाषा में कई देसी नुस्खे भी मिलते हैं जिनमें से कुछ यहाँ लिखे जाते हैं:

(1)

पात कसैंजी बिख हरे, और फूल रतौंधी जाय
जड़ कसैंजी बाघ रोइन, बीज से हीज न साय

(2)

तिल तीसी दाना तीखुर ताल मखाना
घी शक्कर में साना खाये जनाना हो मरदाना

(3)

लोध फिटकिरी मुर्दा संग हल्दी, जीरा एक एक रंग
अफ़ीम चने भर मिर्चें चार करो बराबर थोथा डार
पोस्त के पानी से पोटरी करे नीन का बीद उतरते हरे

(4)

नून मिरिच मजीठ ले आवे नीला थोथा आग जलावे
लोध पैठानी कथ पापड़या पीस बराबर मंजन करया
मंजन करके पान चबावे दाँत का पीरा कभू न पावे

(5)

हर्र बहेड़ा आँवला जीता तनिक सोंठ मिलादे मीता
खाँसी साँसी सब जर जाय अन्न न जानूँ कितना खाय

हज़रत मख़दूमे जहाँ की हिन्दी कविताओं की चर्चा करते हुए प्रसिद्ध शोधकर्मी अब्दुल हक लिखते हैं:

> ''वे पूरबी और हिन्दी भाषा के कवि थे। अब तक उनके बताए हुए मंत्र साँप बिच्छू और साये के उतारने और रोग से मुक्ति के लिए झाड़-फूँक में पढ़ते हैं, जिनके अन्त में उन की दुहाई होती है। प्रोफ़ेसर शीरानी ने अपनी पुस्तक में मौलाना महबूब आलम साहब की ब्याज़ से एक कजमुन्दरा अनुकृत किया है। मेरे एक मित्र को भी इस प्रकार के साँप का विष उतारने का मन्त्र याद है उसमें भी शाह साहब (हज़रत मख़दूमे जहाँ) की दुहाई है। इन मंत्रों और कजमुन्द्रों से उस समय की पूरबी बोली का कुछ अनुमान होता है अलबत्ता उसमें दो दोहरे आ गए हैं वे ध्यान देने योग्य हैं वे यह हैं:
>
> **काला हन्सा निर्मला बसे समुन्दर तीर**
>
> **पंख पसारे बिख हरे निर्मल करे सरीर**
>
> **दर्द रहे न पीर**
>
> **शरफ़ हरफ माएल कहीं दर्द कुछ न बसाय**
>
> **गर्द छुएं दरबार की सो दर्द दूर हो जाय''**

(उर्दू की इब्तेदाई नश्वोनुमा में सुफ़ियाए केराम का काम)

आपके प्रवचनों के अध्ययन से पता चलता है कि आप योग विद्या से भी भली भाँति परिचित थे और उस विद्या की शब्दावली को अच्छी तरह जानते थे।

मख़दूम जहाँ के अंतिम क्षण

5 शव्वाल 782 हि॰ बुध का दिन था, मैं सेवा में हाज़िर हुआ। सुबह की नमाज़ के बाद उस नये कमरे में सज्जादा (गद्दी) पर तकिया लगाए बैठे थे, जिसे मलिकुश्शरक़ निज़ामुद्दीन ख़्वाजए मुल्क ने निर्माण कराया था। शैख़ जलीलुद्दीन (अपने भाई और खास ख़ादिम) और कुछ दूसरे मित्र और ख़ादिम जो कई रातों से आपकी सेवा में जागते रहे थे मौजूद थे, उनमें काज़ी शमसुद्दीन, मौलाना शहाबुद्दीन (ख़्वाजा मीना के भाँजे), मौलाना इबराहीम, मौलाना आमूँ, काज़ी मियाँ, हिलाल, अक़ीक़ और दूसरे प्रियजन उपस्थित थे।

आप ने पढ़ा :

ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिलअज़ीम

फिर सभी उपस्थित जनों को सम्बोधित करके फ़रमाया :

तुम भी कहो!

सभी लोगों ने इसे पढ़ा, फिर आपने मुस्कुराते हुए आश्चर्य के साथ कहा

सुब्हान अल्लाह! वह शैतान इस समय भी मसलए तौहीद (एकेश्वरवाद) में भटकाना चाहता है परन्तु खुदा की दया और कृपा है, उसकी ओर क्या ध्यान जा सकता है? फिर आप 'लाहौल' पढ़ने लगे और लोगों से भी कहा, तुम भी पढ़ो। इसके बाद आप अपने दुआ और वज़ीफ़े (दैनिक जाप) में तल्लीन हो गए। चाश्त के समय (कुछ दिन चढ़े) उन्हें पूरा कर लिया। कुछ देर के बाद अल्लाह की हम्द (स्तुति) ऊँची आवाज में करने लगे :

अल्हम्दु लिल्लाह अल्हम्दु लिल्लाह

अल्लाह ने बड़ी कृपा की, अल्लाह का एहसान है।

कुछ देर तक हार्दिक प्रसन्नता और मोह से इसी [illegible] -ार जपते रहे।

इसके बाद कमरे से बरामदे में तशरीफ़ लाए और तकिये का सहारा लिया। थोड़ी देर बाद दोनों हाथ फैलाए, जैसे मुसाफ़िहा (हाथ मिलाना) चाहते हों और आपने काज़ी शमसुद्दीन का हाथ अपने हाथ

में ले लिया और देर तक लिये रहे फिर उनका हाथ छोड़ दिया। सेवकों को विदा करने का आरम्भ उन्हीं से हुआ। फिर काज़ी ज़ाहिद का हाथ पकड़ कर अपनी पवित्र छाती पर रखा और फ़रमाया :

"हम वही हैं, हम वही हैं।"

फिर कहने लगे :

"हम वही दीवाने हैं, हम वही दीवाने हैं।"

फिर विनम्रता और विनयशीलता का विशेषभाव आप पर परिलक्षित हुआ और कहने लगे :

"नहीं बल्कि हम उन दीवानों की जूतियों की ख़ाक हैं!"

फिर उपस्थित लोगों में से हर एक की ओर इशारा करके हर एक के हाथ और दाढ़ी को चूमा और अल्लाह तआला की रहमत और मग़फ़िरत (माफ़ी) के उम्मीदवार रहने पर ज़ोर दिया और ज़ोर से पढ़ा :

ला तक़नतू मिर्ररहमतिल्लाह इन्नल्लाहा यग़फ़िरुज़्ज़ुनूब जमीआ (अल्लाह की रहमत से मायूस न हो निश्चित रूप से अल्लाह सभी पापों को माफ़ फ़रमाने वाला है)

फिर फ़ारसी भाषा की यह दो पंक्तियाँ पढ़ीं:

ख़ुदाया रहमतत दरयाए आम अस्त
अज़ आँजा क़तरए बर मा तमामस्त

(ऐ ख़ुदा तेरी रहमत का दरिया सबके लिए है, उससे एक बूँद मेरी लिए भी पर्याप्त है।)

इसके बाद उपस्थित लोगों से फ़रमाया :

"कल तुम से प्रश्न करें तो कहना

ला तक़नतू मिर्ररहमतिल्लाह

अगर मुझ से भी पूछेगें तो मैं भी यही कहूँगा।"इसके बाद कलमए शहादत ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगे :

अशहदो अल्ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीक लहू व अशहदो अन्ना मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुहू

ये भी कहा कि :

मैंने अल्लाह को रब (पालन्हार, मालिक) माना, इसलाम को धर्म, मुहम्मद[सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम] को नबी, क़ुरआन को अपना मागदर्शक, काबे को क़िबला माना। अहले ईमान को अपना भाई, स्वर्ग को अल्लाह का इनाम और नरक को सज़ा और दण्ड मानता हूँ और इस आस्था पर संतुष्ट हूँ।

इसके बाद मौलाना तक़ीउद्दीन अवधी की ओर घूमे और अपना हाथ फैलाया और फ़रमाया:

''आक़बत बख़ैर हो''

(अन्त भला हो)

फिर आवाज़ दी :

''आमूँ !''

मौलाना आमूँ हुजरे के भीतर थे, वह सुनकर हाज़िर हूँ कहते हुए दौड़े आए। आपने उनका हाथ पकड़ लिया और मुखमण्डल पर मलने लगे और कहा :

''तुमने बड़ी सेवा की, तुम्हें नहीं छोडूँगा, संतुष्ट रहो, एक ही जगह रहेंगे। अगर प्रलय के दिन पूछें, क्या लाए, तो कहना ''ला तकनतू मिर्ररतिल्लाह!'' अगर मुझसे पूछेंगे तो मैं भी यही कहूँगा। दोस्तों से कहो निश्चिंत रहें, अगर मेरी लाज रहेगी तो मैं किसी को न छोडूँगा।

तीन बार अपना हाथ हिलाल की पीठ पर रखा और कहा:

''अपनी मुराद पाओगे।''

उस समय आपके दोनों पाँव हिलाल की गोद में थे और उनके हाल पर बड़ी कृपा थी।

इसी बीच मौलाना शहाबुद्दीन नागौरी आए। आपने कई बार उनके सिर, चेहरे, दाढ़ी और पगड़ी को चूमा। आप आह-आह करते

जाते थे और अलहम्दुलिल्लाह अलहम्दुलिल्लाह कहते जाते थे। आपने हाथ नीचे कर लिया और दरूद पढ़ने लगे। मौलाना शहाबुद्दीन की भी दृष्टि आपके चेहरे पर थी और वह दरूद पढ़ रहे थे। इसके बाद आपने ख़्वाजा मुईन के भांजे मौलाना शहाबुद्दीन का नाम लिया और कहा:

"मेरी बड़ी सेवा की। मुझसे बहुत अच्छे संबंध थे। बड़े अच्छे ढंग से मेरी संगत में रहा। उसका अंत भला हो।"

उसी समय मौलाना शहाबुद्दीन ने मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी और मौलाना नसीरुद्दीन जौनपुरी का नाम लिया और पूछा:

"इन दोनों के बारे में क्या कहते हैं ?"

आपने बड़ी प्रसन्नता से मुसकुराते हुए और अपनी सभी अंगुलियों से अपने पवित्र सीने की ओर इशारा करते हुए कहा:

"मुज़फ़्फ़र मेरी जान है, मेरा प्यारा है। मौलाना नसीरुद्दीन भी इसी तरह हैं। ख़िलाफ़त और नेतृत्व के लिये जो गुण और शर्तें ज़रूरी हैं वो इन दोनों में मौजूद है। मैंने जो कुछ कहा इसका उद्देश्य इन गरीबों को लोगों के षडयंत्र से सुरक्षित रखना था।"

इस अवसर पर मौलाना शहाबुद्दीन ने कुछ प्रस्तुत किया और अनुरोध किया :

"मख़दूम इसे स्वीकार करें।"

कहा :

"मैने स्वीकार किया। यह क्या है मैंने तो तुम्हारा सारा घर स्वीकार किया।"

इसके बाद उन्हें विशेष टोपी प्रदान हुई। उन्होंने फिर से मुरीद करने का अनुरोध किया। आपने स्वीकार किया। इसी बीच क़ाज़ी मीना उपस्थित हुए। हिलाल ने बताया:

"क़ाज़ी मीना आए हैं।

फ़रमाया :

''क़ाज़ी मीना, क़ाज़ी मीना!''

क़ाज़ी मीना ने कहा कि हज़रत हाज़िर हूँ और मख़दूम के हाथों को चूमा। आपने उनका हाथ अपने चेहरे और पवित्र दाढ़ी पर फेरा और फ़रमाया:

''खुदा की तुम पर रहमत हो, ईमान वाले रहो और
साथ ईमान के इस संसार से जाओ।''

फिर स्नेहपूर्वक यह भी फ़रमाया :

''मीना हमारे हैं।''

इसी बीच मौलाना इबराहीम आए। आपने अपना दाहिना हाथ उनकी दाढ़ी पर फेरा और फ़रमाया :

''तुमने मेरी अच्छी सेवा की और पूरा साथ दिया,
प्रतिष्ठित रहोगे''।

मौलाना इबराहीम ने अर्ज़ किया कि मख़दूम मुझ से राज़ी और खुश हैं? फ़रमाया :

''हम सबसे प्रसन्न हैं। तुम्हें भी हमसे राज़ी होना
चाहिए। जो कुछ है मेरी ओर से है।''

इसके बाद क़ाज़ी शमसुद्दीन के भाई क़ाज़ी नूरुद्दीन पधारे। आपने क़ाज़ी नूरुद्दीन का हाथ अपने हाथ में ले लिया और बड़े स्नेह के साथ उनकी दाढ़ी, चेहरे, गाल और हाथ भी कई बार चूमा। आप आह-आह करते जाते थे। आपने उनसे कहा :

''तुम हमारी संगत में बहुत रहे हो और हमारी बहुत
सेवा की है। इंशाअल्लाह कल एक ही जगह रहेंगे।''

इसके बाद मौलाना निज़ामुद्दीन कोही उपस्थित हुए। आपने कहा:

''बेचारा अपना वतन छोड़ कर हमारे क्षेत्र में आया
था।''

यह कह कर अपनी पवित्र टोपी अपने सिर से उतार कर

उनको देने की कृपा की और सदगति की दुआ की और कहा :

"अल्लाह तुम्हें तुम्हारे गंतव्य तक पहुंचाए"।

फिर सभी उपस्थितजनों को सम्बोधित करते हुए कहा :

"दोस्तो! जाओ अपने धर्म और अपने ईमान की
चिंता करो और इसी में व्यस्त रहो!"

इसके बाद इन पंक्तियों के लेखक (ज़ैन बदरे अरबी) ने आपके पवित्र हाथ को चूमा, अपनी आँख, सिर और शरीर पर फेरा। पूछा:

"कौन है?"

मैंने आग्रहपूर्वक कहा :

"इस द्वार का भिखारी अपने आपको प्रस्तुत करता
है और अनुरोध करता है कि मुझे नये सिरे से एक
दास के रूप में स्वीकार किया जाए।"

कहा:

"जाओ तुमको भी स्वीकार किया। तुम्हारे घर और
सारे घरवालों को स्वीकार किया। धैर्य रखो, अगर
मेरी लाज रह गई तो मैं किसी को भी छोड़ने वाला
नहीं।"

मैंने कहा :

"मख़दूम तो मख़दूम हैं, मख़दूम के ग़ुलामों की भी
लाज है।"

कहने लगे :

"आशाएं तो बहुत हैं।"

क़ाज़ी शमसुद्दीन आए और हज़रत मख़दूम की बग़ल में बैठ गए। मौलाना शहाबुद्दीन, हेलाल व अक़ीक़ ने अनुरोध किया :

"मख़दूम, क़ाज़ी शमसुद्दीन के बारे में क्या कहते हैं?"

बोले :

"क़ाज़ी शमसुद्दीन के बारे में क्या कहूँ, क़ाज़ी

शमसुद्दीन मेरा आध्यात्मिक पुत्र है। पत्र में कई स्थान पर मैं इसको पुत्र लिख चुका हूँ। पत्र में मैंने इसको भाई भी लिखा है। इनको संतज्ञान के प्रकट करने की आज्ञा मिल चुकी है। इन्हीं के लिए इतना कहने और लिखने का मन हुआ, नहीं तो कौन लिखता?''

इसके बाद उनके भाई और उनकी सेवा में विशेष रूप से तत्पर रहने वाले शैख़ ख़लीलुद्दीन ने, जो पास ही बैठे हुए थे, आपका हाथ पकड़ लिया। आप उनकी ओर मुड़े और कहा:

''ख़लील, धीरज रखो। तुमको विद्वान और संतजन छोड़ेंगे नहीं। मलिक निज़ामुद्दीन ख़्वाजा मुल्क आएगा। उसको मेरा सलाम, दुआ पहुँचाना। मेरी ओर से बहुत क्षमा मांगना और कहना कि मैं तुमसे राज़ी हूँ और राज़ी जा रहा हूँ, तूम भी राज़ी रहना।''

कहा कि जब तक मलिक निज़ामुद्दीन है तुमको न छोड़ेगा।

शैख़ ख़लीलुद्दीन बहुत द्रवित थे। आँखों में आँसू थे। हज़रत मख़दूम ने उनकी मन:स्थिति देखी तो बड़े स्नेह से बोले :

''धीरज रखो और दिल को मज़बूत रखो।''

उसके बाद पूछा कि कौन हैं तो हेलाल ने बताया कि मौलाना महमूद सूफ़ी हैं। आपने बड़े गहरे अफ़सोस के साथ कहा :

''बेचारा ग़रीब है, मुझे इसकी बड़ी चिंता है, बेचारे का कोई नहीं।''

इसके बाद दुआ की कि उनका अंत भला हो। इसके बाद क़ाज़ी ख़ाँ ख़लील सेवा में उपस्थित हुए। आपने कहा :

''बेचारा क़ाज़ी हमारा पुराना दोस्त है, हमारी संगत में बहुत रहा है। अल्लाह इसे अच्छा बदला दे और अंत भला करे। इसके बेटे भी हमारे दोस्त हैं। सब की सदगति हो और अल्लाह नर्क से छुटकारा दे।''

इसके बाद ख़्वाजा मुइज़्ज़ुद्दीन सेवा में उपस्थित हुए। आपने

फ़रमाया :

"आक़बत बख़ैर हो (अंत भला हो)"

फिर मौलाना फ़ज़लुल्लाह ने चरण स्पर्श किये तो फ़रमाया :

"भले भले, अल्लाह अन्त भला करे"

फ़तूहा बावर्ची रोता हुआ आया और चरणों में गिर गया। फ़रमाया:

"बेचारा फ़तूहा जैसा कुछ था मेरा ही था।"

उसके लिए भी अन्त के भले होने की दुआ की। उसके बाद मौलाना शहाबुद्दीन ने चरणस्पर्श का सौभाग्य प्राप्त किया। हेलाल ने बताया कि हाजी रुक्नुद्दीन के भाई मौलाना शहाबुद्दीन हैं।

फ़रमाया :

"अन्त भला हो, ईमान की चिंता करो और अल्लाह
की रहमत चाहते हुए पढ़ो :

ला तक़नतू मिर्रहमतिल्लाह............... ।

कुछ देर बाद ज़ुहर की नमाज़ के आस-पास सैयद ज़हीरुद्दीन अपने चचरे भाई के साथ सेवा में पधारे। आपने सैयद ज़हीरुद्दीन को बग़ल में बिठा लिया और बड़े स्नेह और प्रेम-भाव से फ़रमाया :

"मैं जो अन्त के भले और सदगति की बात कहता
था, यही है !"

इसके बाद तीन बार उनको लिपटाया और अंतिम बार यह आयत पढ़ी:

ला तक़नतू मिर्रहमतिल्लाह.............. ।

और उपस्थित लोगों में अल्लाह से उसकी रहमत और क्षमाशीलता की आशा जगाई।

फिर वहाँ से उठकर हुजरे में पधारे और सैयद ज़हीरुद्दीन के साथ कुछ देर बैठे और उनसे कुछ बातें कीं। उसके बाद सुल्तान शाह परगनादार राजगीर अपने बेटे के साथ हाजिर हुआ और एक दवा भेंट की। उन्होंने कहा कि मौलाना निज़ामुद्दीन भी यही लाए थे, फिर

शरबत और पान देकर विदा किया। इसके बाद ख़लील के भाई मुनव्वर ने आग्रह किया कि तौबा करके मुरीद होना चाहता है। फ़रमाया : आओ। उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया और उसे मुरीद किया। फिर कैंची माँगी और उसके सर के कुछ बाल काटे और विशेष टोपी पहनाई और फ़रमाया :

"जाओ दो रिकअत नमाज़ पढ़ो"

इसी तरह उसका बेटा भी मुरीद हुआ और उसे भी यही आदेश हुआ।

इसी बीच काज़ी आलम अहमद मुफ़्ती, मौलाना निज़ामुद्दीन मुफ़्ती के भाई, जो विशिष्ट मुरीदों में से हैं, आए और आदर के साथ आपके आगे बैठ गए। इसी बीच मलिक हुसामुद्दीन के भाई अमीर शहाबुद्दीन अपने लड़के के साथ सेवा में हाजिर हुए और आ कर बैठ गए। आपने लड़के को देख कर पूछा:

"पाँच आयतें पढ़ सकते हो?"

उपस्थित लोगों ने कहा अभी छोटा है। सैयद ज़हीरुद्दीन मुफ़्ती का लड़का भी उपस्थित था। मियां हिलाल ने जब यह देखा कि आपको इस वक़्त कलामे रब्बानी (क़ुरआन) सुनने की इच्छा है, तो उन्होंने उस लड़के को बुलाया और पाँच आयतें पढ़ने की हिदायत की। सैयद ज़हीरुद्दीन ने भी जब यह महसूस किया कि आपको पवित्र क़ुरआन सुनने का मन है, तो सुपुत्र से कहा 5 आयतें पढ़ो। लड़का सामने आया और शालीनता के साथ बैठकर सुरए फ़तह के अंतिम भाग की आयतें पढ़नी प्रारम्भ कीं :

मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह वल्लज़ीना..........।

हज़रत मख़दूम तकीये के सहारे से लग कर बैठे थे, उठ बैठे और अपनी आदत के अनुसार दोनों पैरों पर उस प्रकार बैठ गए जैसे नमाज़ में बैठते हैं और बड़े ध्यान से पवित्र क़ुरआन सुनने लगे। लड़का जब

"लेयग़ीज़ा बेहेमुल्कुफ़्फ़ार"

तक पहुँचा तो लड़का घबरा कर गड़बड़ा गया और उससे पढ़ा न जा

सका। आपने उसको आगे के शब्द का मार्गदर्शन फ़रमाया। जब लड़के ने पढ़ना समाप्त किया तो आपने फ़रमाया :

> ''अच्छा पढ़ता है और सुन्दर ढंग से परन्तु लोगों की
> उपस्थिति से घबरा जाता है।''

इस अवसर पर आपने एक पश्चिमी संत की चर्चा की कि कभी उसका मन लगता था तो पवित्र क़ुरआन सुनने की इच्छा होती थी और मन उचाट होता तो पवित्र क़ुरआन सुनने की ओर झुकाव नहीं होता।

इसके बाद क़ाज़ी आलम को शरबत और पान देने को कहा और विदा कर दिया। फिर आपने ऊपरी पोशाक उतारना चाहा और वज़ु के लिए पानी माँगा और आस्तीन समेटी, दातून भी माँगा।

बिस्मिल्लाह पढ़ी और वुज़ु करना प्रारम्भ किया और इस समय की दुआएं उनके स्थान पर पढ़ते गए। किहुनी तक हाथ धोए, मुँह धोना भूल गए। शैख़ फ़रीदुद्दीन ने याद दिलाया कि मूँह धोना रह गया। आपने फिर से वुज़ु करना प्रारंभ किया और बिस्मिल्लाह और वुज़ू की दुआएं, जिस प्रकार आई हैं पूरी तन्मयता से पढ़ते थे। मुफ़्ती सैयद ज़हीरुद्दीन और उपस्थितगण देखते थे और आश्चर्य करते थे और आपस में कहते थे कि ऐसी हालत में यह सावधानी।

क़ाज़ी ज़ाहिद ने [illegible]त्र धोने में मदद करनी चाही, हज़रत मख़दूम ने उनको रोक दिया और फ़रमाया खड़े रहो। इसके बाद ख़ुद से वुज़ू पूरा किया। वुज़ू करने के बाद कंघी माँगी और दाढ़ी में कंघी की। इसके बाद नमाज़ पढ़ने की जानमाज़ माँगी। नमाज़ पढ़नी प्रारम्भ की और दो रिकअत में सलाम फेरा। थकान हो जाने के कारण कुछ देर आराम किया। शैख़ जलीलुद्दीन ने आग्रह किया :

> ''हज़रत सलामत हुजरे में चलने का कष्ट करें,
> ठण्डक का समय हो गया है।''

आप खड़े हुए जूतियाँ पहनीं और हुजरे की ओर चले। आपका एक हाथ मौलाना ज़ाहिद के कंधों पर दूसरा मौलाना

शहाबुद्दीन के कंधों पर। हुजरे में आप शेर की खाल पर लेट गए। मियाँ मनव्वर ने मुरीद करने का आग्रह किया। आपने उनकी ओर हाथ बढ़ा दिया और उनको मुरीद किया। फिर उनके सर के बाल दोनों ओर से थोड़े-थोड़े काटे, उनको टोपी पहनाई और फ़रमाया,

"जाओ दो रिकअत नमाज़ अदा करो।"

यह अंतिम मुरीदी थी जो आपने स्वीकार की।

इस अवसर पर एक महिला अपने दो बच्चों के साथ हाज़िर हुई और चरणस्पर्श किया।

अस्र की नमाज़ के बाद मग़रिब (संध्या) की नमाज़ के आस-पास सेवकों ने आग्रह किया कि हज़रत चारपाई पर विश्राम करें। आप चारपाई पर लेट गए।

नमाज़े मग़रीब के बाद शैख़ जलीलुद्दीन, क़ाज़ी शमसुद्दीन, मौलाना शहाबुद्दीन, क़ाज़ी नूरुद्दीन, हिलाल, अक़ीक़ और दूसरे मित्र और सेवक जो सेवा में व्यस्त थे, चारपाई के चारों ओर बैठे हुए थे। हज़रत मख़दूम ने कुछ देर के बाद ज़ोर से कहना प्रारम्भ किया बिस्मिल्लाह और कई बार कहने के बाद ज़ोर-ज़ोर से पढ़ा :

ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालेमीन

इसके बाद ज़ोर के साथ फिर कहा :

बिस्मिल्लाह ....।

फिर कलमए शहादत फिर लाहौल, फिर कुछ देर तक कलमए शहादत पढ़ते रहे। फिर कई बार कहा :

बिस्मिल्लाह ....। ला ईलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

इसके बाद बड़े आदर और हार्दिक भाव के साथ प्रेम-पूर्वक - मुहम्मद, मुहम्मद, मुहम्मद, सल्ले अला मुहम्मद व अला आले मुहम्मद - कहा फिर यह आयत पढ़ी :

रब्बना अनज़िल अलैना मायदतम्मिनस्समाए..........।

फिर पढ़ा :

रज़ितो बिल्लाहे रब्बा....................।

इसके बाद तीन बार कलमए तैय्यबा का जाप किया और आकाश की ओर हाथ उठाए और बड़े प्रेम से जैसे कोई दुआ करता है कहने लगे:

अल्लाहुम्मरहम उम्मतो मुहम्मद
अल्लाहुम्मग़्फ़िर लेउम्मते मुहम्मद
अल्लाहुम्मा तजावज़ उम्मते मुहम्मद
अल्लाहुम्मा अग़िस उम्मते मुहम्म्द
अल्लाहुम्मन्सुर मन नसर दीन मुहम्मद
अल्लाहुम्मा फ़र्रिज़ अन उम्मते मुहम्मद फ़रज़न आजेला
अल्लाहुम्मा मन ख़ज़ल दीन मुहम्मद
बेरहमतेका या अरहमर्राहेमीन।

जिन शब्दों पर आवाज़ बंद हो गई उस समय आप यह कर रहे थे :

ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यहज़नून। ला इलाहा इल्लल्लाहो।

इसके बाद एक बार :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कहा और आपकी आत्मा परमात्मा की ओर प्रस्थान कर गई। यह घटना जुमे की रात 6 शव्वाल 782 हि० ईशा की नमाज़ के समय की है। अगले दिन जुमे के दिन चढ़े (चाशत के समय) आप को दफ़न किया गया।

बड़ी दरगाह

हज़रत मख़दूमे जहाँ की मृत्यु से 6 वर्ष पहले आपके सगे मौसेरे भाई और प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत मख़दूम अहमद चिरमपोश की मृत्यु हुई तो उनके दफ़न के समय हज़रत मख़दूमे जहाँ भी अम्बेर गए और उस समय वहाँ उपस्थित रहे। हज़रत मख़दूमे जहाँ जब वहाँ

से लौटे तो नगरीय क्षेत्र को छोड़कर आबादी से बाहर अपनी माताश्री के मज़ार पर आए और अपनी कब्र का स्थान स्वंय सबको बताया और अपने शिष्यों में से भी जो साथ थे, उन्हें भी अपने समीप कब्र के लिए स्थान बाँट दिया। उस समय आपकी माताश्री के मज़ार पर एक गुम्बद निर्मित था, जिसे 775 हि० में हज़रत इबराहीम मलिक बया के सुपुत्र मलिक दाऊद ने एक चबूतरे के साथ निर्माण कराया था।

782 हि०/1380 ई० में हज़रत मख़दूमे जहाँ के इस स्थान पर दफ़न होने के बाद से ही यह स्थान विशेष महत्व और श्रद्धा का अनुपम केन्द्र बन गया और बड़ी दरगाह कहलाने लगा। यह पावन स्थल नगरीय क्षेत्र से बाहर दक्षिणी छोर पर स्थित है, जिसे पश्चिम से पूर्व की और बहती हुई पंजानी नदी नगर से काटती थी। अब यह नदी सूख सी गई है। यह इलाक़ा दस्तावेज़ों के अनुसार हुज़ूरपूर मेंहदौर कहलाता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ का पवित्र मज़ार बड़ी दरगाह क्षेत्र के केन्द्र में स्थित है। और चारों ओर कच्ची पक्की अनगिनत कब्रें स्थित हैं। मौलाना सैयद शाह अबूसालेह मुहम्मद यूनस शुऐबी के अनुसार कब्रों का सिलसिला जिन जमीनों में फैला हुई है यह लगभग 64 एकड़ होगी। इसीसे बड़ी दरगाह के विशाल क्षेत्र का अनुमान लगाया जा सकता है। अपनी माताश्री की क़ब्र बनने के बाद से हज़रत मख़दूमे जहाँ यहाँ बराबर आते थे। एक बार वृद्धावस्था और अस्वस्थता के कारण डोली पर सवार होकर शबे बराअत में वहाँ आपके आने की चर्चा '**मूनिसुलमुरीदीन**' में भी मिलती है। आप वहाँ नमाज़ भी पढ़ते थे और आप के नमाज़ पढ़ने का एक विशेष स्थान भी था। आज तक वह स्थान मख़दूमे जहाँ के मुसल्ले के नाम से मौजूद है और वर्तमान मस्जिद के बरामदे में बायें किनारे पर है।

मख़दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार के ठीक सामने, पश्चिम ओर, मस्जिद के बरामदे से सटे दक्षिण, खुले प्रांगण में एक पत्थर है जिस

पर बैठकर हज़रत मख़दूमे जहाँ वज़ू (धर्म विधान के अनुसाार पवित्र होने के लिए मुँह-हाथ धोना) करते थे और कभी-कभी पत्थर से सटकर बैठ कर जाते ही थे। यही कारण है आज तक आपके वार्षिक उर्स के मुख्य आयोजन में जो ईद के मास में पाँचवी तिथि को 12 बजे रात्रि में आपकी दरगाह पर सम्पन्न होता है, आपके सज्जादानशीन उसी पत्थर से उसी प्रकार सटकर आपकी दरगाह की ओर मुख करके बैठते हैं और कुल पढ़ा जाता है। इस पत्थर की विशेषता बताते हुए मौलाना अबूसाएम मुहम्मद यूनुस लिखते हैं:

> ''इसकी विशेषता अभी भी है कि गर्मीयों के मौसम में कड़ी धूप में, बारह बजे दिन में यह पत्थर खुले प्रांगण में पड़ा रहता है और गर्म नहीं होता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के पवित्र चरणों के पास थोड़ा स्थान छोड़ कर आपके सगे भाई हज़रत ख़लीलुद्दीन का मज़ार है और उनके मज़ार के समान्तर हज़रत मख़दूमे जहाँ के दूसरे शिष्यों के मज़ार बने हुए हैं, जिनमे पूर्व की ओर हज़रत ज़ैन बदरे अरबी और उनकी माता की क़ब्रें भी स्थित हैं। हज़रत ख़लीलुद्दीन के चरणों के पीछे मज़ारों की पंक्ति में हज़रत मख़दूमे जहाँ के सज्जादानशीनों की क़ब्रे हैं, जिन्हें लोहे की रेलिंग से घेर कर स्पष्ट कर दिया गया है। इनमें हज़रत शाह वलीउल्लाह, हज़रत शाह अमीरुद्दीन, जनाब हुज़ूर शाह अमीन अहमद, हज़रत शाह बुरहानुद्दीन, जनाब हुज़ूर शाह मुहम्मद हयात, जनाब हुज़ूर शाह मुहम्मद सज्जाद के मज़ार पूर्व से पश्चिम की ओर क्रमानुसार हैं। इस पंक्ति के पीछे की पंक्ति में दिवंगत सज्जादानशीन जनाब हुज़ूर सैयद शाह मुहम्मद अमजाद और उनके सटे पूरब हज़रत शाह वलीउल्लाह के पिता हज़रत शाह अलीमुद्दीन दुरवेश का मज़ार है। यह सभी अपने अपने काल में हज़रत मख़दूमे जहाँ की गद्दी की शोभा बढ़ा चुके हैं। इस क्षेत्र मे मख़दूम के शिष्य ओर प्रिय सेवक शैख़ चुल्हाई और शिष्यों तथा रसोइये फ़तूहा के मज़ार भी स्थित हैं। हेलाल और अक़ीक़ के भी मज़ार इसी आस-पास घेरे हुए मौजूद हैं।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के कुछ दूसरे शिष्य और सगे सम्बन्धियों के मज़ार भी इसी क्षेत्र में हैं। बड़े-बड़े सूफ़ी-संत, महात्मा और अपने-अपने काल के विशिष्ट व्यक्ति इस क्षेत्र में चिरनिद्रा में लीन हैं। हज़रत मख़दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार के उत्तर सिरहाने में तोशाख़ाना है, जिसमें दरगाह पर चढ़ने वाली भेंट रखी जाती है। इसी तोशाख़ाने में हज़रत मख़दूमे जहाँ के 23वें सज्जादा हज़रत शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी के समय से, (उनके आदेशानुसार) मख़दूमे जहाँ के प्रयोग में लाई गई और दूसरी पवित्र वस्तुएं (तबर्रुकात) रखी हुई हैं। पहले यह तबर्रुकात ख़ानकाह मुअज़्ज़म में रहते थे। हर वर्ष वार्षिक उर्स के अवसर पर ईद की 8 तारीख को सज्जादानशीन के प्रतिनिधि द्वारा इन्हें आम दर्शन के लिए रखा जाता है। हज़रत मख़दूम जहाँ की दरगाह शरीफ़ लगभग 600 वर्षों तक आकाश की नीली छत्री में जगमगाती रही अब सुन्दर भव्य गुम्बद बन गया है। हजरत मख़दूम जहाँ की दरगाह शरीफ़ की सुन्दरता देखते बनती है। हर समय प्रातः हो या संध्या, दोपहर हो या रात्री यहाँ आश्चर्यजनक रूप से हार्दिक शांति और अलौकिक छत्रछाया का आभास होता है। देर रात में आपके मज़ार के दर्शन का तो पूछना ही क्या। शांत वातावरण में आपकी महिमा तनिक और उजागर होकर चमकती है और हृदय को छू जाती है। बड़े-बड़े संत महात्माओं और ज्ञानियों ने आपकी दरगाह शरीफ़ पर अपनी उपस्थिति दर्ज करके आत्मलाभ और अलौकिक सुख प्राप्त किया और तृप्त हुए हैं। राजा से लेकर रंक तक की मनोकामना यहाँ पूरी होती आई है। सुबह से रात तक यहाँ श्रद्धालुओं का मेला सा लगा रहता है। दूर-दूर से हर धर्म और जाति के लोग बड़े आदर और श्रद्धा के साथ यहाँ का दर्शन कर धन्य होते हैं।

901 हि०/1495-96 ई० में सिकन्दर लोदी आपकी दरगाह शरीफ़ में श्रद्धांजली अर्पित करने बिहारशरीफ़ आया और दरगाह के बाहर दीन-दुखियों, निर्धनों को दान-दक्षिणा दे कर लौटा।

हर काल में यहाँ राजा, महाराजाओं और प्रशासन ने श्रद्धा

स्वरूप और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए निर्माण कार्य करवाया है। सूरवंश के शासकों ने अपने शासन काल में दरगाह शरीफ़ के चारों ओर मकान, मुसाफ़िरख़ाना, मस्जिद और हौज़ का निर्माण कराया था और फ़ौवारा भी लगवाया था।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के नौवें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह अख़वन्द फ़िरदौसी के काल में स्वतंत्र शासक सुलेमान केरारानी(1) ने 977 हि०/1569-70 ई० में बड़ी दरगाह में महत्वपूर्ण निर्माण कार्य करवाया। दरगाह शरीफ़ में प्रवेश के लिए अन्तिम द्वार जो सन्दली दरवाज़ा कहलाता है वह उसी के द्वारा निर्मित है इस द्वार के शीर्ष पर 3'.11"x 9.5" का उसका शिलालेख विद्यमान है।

इसी द्वार के दाहिने ओर हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी का हुजरा(2) है। सन्दली दरवाज़े से ठीक उत्तर सतह से थोड़ी ऊँची सतह पर मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के हुजरे के सामने उनके ख़लीफ़ा शैख़ जमाल औलिया अवधी का मज़ार और हुजरा है।

---

(1) सुलेमान खाँ करारनी पठान सरदारों में से एक था। शेरशाह सूरी के पुत्र इसलाम शाह के शासनकाल में वह बिहार का गर्वनर नियुक्त हुआ। इसलाम शाह की मृत्यु के उपरांत राजनीति ने ऐसी करवट बदली कि इसने बिहार बंगाल में अपना स्वतंत्र शासन सुदृढ़ कर लिया। सुलेमान करारानी ने बंगाल और बिहार पर 1565 से 1572 ई० के मध्य शासन किया। अकबर के शासन सुदृढ़ करने पर सुलेमान ने उसे प्रसन्न करके अपने क्षेत्र पर अपने शासन को बचा लिया था और अकबर के दरबार से हज़रते आला की उपाधी भी प्राप्त कर ली थी। परन्तु उनके पुत्र और उत्तराधिकारी दाऊद ख़ाँ ने जिसकी चर्चा भी बड़ी दरगाह के शिला लेख में है, अपनी गतिविधियों के कारण अकबर से मुक़ाबला कर, न केवल शासन गंवायाँ वल्कि अपनी जान से भी हाथ धो बैठा।

(2) हुजरा एक ऐसी छोटी कुटिया को कहते हैं जो केवल आराधाना और उपासना के लिए बनाई जाती है। यह न तो ऊचाँ होता है कि खड़ा हुआ जा सके और न इतना लम्बा होता है कि लेट कर पैर फैलाया जा सके। इसका प्रवेश द्वार भी छोटा होता है और प्रकाश तथा वायु के लिए एक छोटा रोशनदान होता है।

सन्दली द्वार से पहले दरगाह शरीफ़ में प्रवेश के दूसरे द्वार का निर्माण शैख़ सलाहुद्दीन ने कराया था। इसी द्वार से सटे पूरब द्वार के निकट एक पंक्ति में बने मज़ार भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के सज्जादानशीनों के हैं।

सम्राट अकबर को भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रति श्रद्धा थी। उनके नौरत्नों में से एक अबुलफ़ज़ल ने आईने अकबरी में हज़रत मख़दूमे जहाँ और उनके पत्रों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

बादशाह जहाँगीर भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रति श्रद्धा रखता था। उसने 1033 हि० में अपने समकालीन हज़रत मख़दूमे जहाँ के 13वें सज्जादानशीन अब्दुस्सलाम फ़िरदौसी की सेवा में मौज़ा मसादिर की जागीर फ़रमान के द्वारा भेंट की थी।

बादशाह शाहजहाँ भी इस ऐतिहासिक दरगाह शरीफ़ की महत्ता के प्रति जागरूक था उसके शासन काल में बिहार के सूबेदार हबीब ख़ाँ सूर ने 1056 हि०/1646-47 ई० में हज़रत मख़दूमे जहाँ के 14वें सज्जादानशीन मख़दूम शाह ज़कीउद्दीन के काल में महत्वपूर्ण निर्माण कार्य कराए। उसने बड़ी दरगाह क्षेत्र में एक ईदगाह का निर्माण कराया और पक्की ईटों से उसके फ़र्श को पक्का बनाया तथा दरगाह शरीफ़ में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए ईदगाह के पीछे पश्चिम में एक हौज़ (तालाब) बनवाया और उसे हौज़े शरफुद्दीन नाम दिया जो आज भी मख़दूम तालाब के नाम से मौजूद है। ईदगाह की दीवार में उसके निर्माण कार्य का 4'.10'' का शिलालेख मौजूद है।

इस तालाब की एक विशेषता यह भी थी कि हज़रते मख़दूमे जहाँ के मज़ार शरीफ़ के पास से पानी की निकासी इस तालाब में ताँबे के पाईप के द्वारा की गई थी जब कभी हज़रत मख़दूमे जहाँ के मज़ार को गुस्ल दिया जाता या वर्षा होती तो उस पवित्र क्षेत्र का पानी इसी तालाब में गिरता था। वह ताँबे का परनाला मख़दूम तलाब में पहले दिखाई देता था अब नहीं देता।

शाहज़ादा अज़ीमुश्शान ने भी अपने गर्वनरी काल में हज़रत

मख़दूमे जहाँ के मज़ार शरीफ़ बड़ी दरगाह में हाज़री दी और निर्माण कार्य में विशेष रुचि दिखाई उसने मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के हुजरे का नवनिर्माण कराया। और ईद एवं बक़रईद के अवसर पर विशिष्ट भोज का प्रबन्ध कराया। इस भोज का राजकीय स्तर पर प्रबन्ध मुगल शासकों के शासन काल में बहुत दिनों तक चलता रहा।

हज़रत मख़दूम जहाँ के 15वें सज्जादानशीन हज़रत शाह वजीहुद्दीन के काल में मुगल शासक फ़र्रुख़सियर ने भी कई गाँव हज़रते मख़दूमे जहाँ की दरगाह और ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के ख़र्चे के लिए बड़ी श्रद्धा के साथ भेंट किये जिसका फ़रमान ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के पुस्तकालय में मौजूद है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के 19वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह बदीउद्दीन फ़िरदौसी के नाम से मुहम्मद शाह रंगीला ने मौज़ा हुज़ूरपूर में मेंहदौर और कई गाँव हज़रत मख़दूमे जहाँ के उर्स और ख़ानक़ाह के खर्चे के लिए भेंट किये।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के 20वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह अलीमुद्दीन दुरवेश फ़िरदौसी के काल में शाह आलम द्वितीय ने बिहारशरीफ़ बड़ी दरगाह और ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में हाज़री दी और कई गाँव हज़रत मख़दूमे जहाँ के उर्स के ख़र्चे के लिए भेंट किये और दरगाह के मार्ग में दीन, दुखियों, मजबूरों और भिखारियों पर उसने बड़ी संख्या में चाँदी के इतने फूल लुटाये कि सबके आँचल भर गए। शाह आलम के कई फ़रमान ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के पुस्तकालय में मौजूद हैं। शाह आलम द्वितीय ने मिस्टर जॉज़ेफ़ जैकेल बहादुर को तत्कालीन सज्जादानशीन हज़रत शाह अलीमुद्दीन के साथ विशिष्टता बरतने और उनका आदर सत्कार करने का भी निर्देश दिया था। जिसका फ़रमान भी मौजूद है। 1171 हि० में नवाब मीर जाफ़र भी बड़ी दरगाह में श्रद्धापूर्वक हाजिर हुआ और हयाते सबात नामी हस्तलिखित पुस्तक के अनुसार कई वस्तुएं दरगाह शरीफ़ में भेंट कीं।

उस काल के महाराजा शताब राय और महाराजा कल्याण

सिंह आशिक़ भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के वार्षिक उर्स में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्मिलित हुआ करते थे और दरगाह के समीप निर्धनों को खुल कर दान दक्षिणा देते थे।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के 20वें सज्जादानशीन हज़रत शाह अलीमुद्दीन की मृत्यु के बाद जब उनके एक मात्र अल्पायु पुत्र हज़रत शाह वलीउल्लाह मख़दूमे जहाँ के 21वें सज्जादानशीन हुए तो उनकी सज्जादानशीनी और तौलियत का सत्यापन भी शाह आलम ने एक विशेष फ़रमान के द्वारा किया और उसमें उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कड़े निर्देश दिये।

राजा बोध नारायण भी दरगाह के भक्तों में से थे उन्होंने भी कुछ गाँव दरगाह शरीफ़ और ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के खर्चे के लिए भेंट किये थे। वह भेंट पत्र भी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में सुरक्षित है।

मख़दूमे जहाँ का वार्षिक उर्स समारोह चिराग़ाँ

हज़रत मख़दूमे जहाँ के स्वर्गवास को 650 वर्ष बीत गए। अर्थात इस वर्ष 2011ई० में आपका 650वाँ उर्स समारोह आयोजित हुआ। हज़रत मख़दूमे जहाँ के वार्षिक उर्स के इस प्राचीन आयोजन का बिहार और बंगाल की संस्कृति पर गहरा प्रभाव रहा है। आपके वार्षिक उर्स में उमड़ने वाली भीड़ में हर धर्म और सम्प्रदाय के लोग बड़ी श्रद्धा और कामना के साथ सम्मिलित होते हैं। भारतवर्ष में अजमेरशरीफ़ को जो प्रसिद्धि प्राप्त है, और वहाँ के वार्षिक उर्स का जो महत्व है। वही बिहार और बंगाल में बिहारशरीफ़ को प्राप्त है।

रमज़ान शरीफ़ के पवित्र मास के बाद ईद की खुशियों के साथ-साथ मख़दूमे जहाँ के वार्षिक उर्स का भी शुभागमण हो जाता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ का वार्षिक उर्स चिराग़ाँ कहलाता है। किसी स्थान को दीयों के प्रकाश से प्रकाशित करने को चिराग़ाँ कहते हैं। चूँकि हज़रत मख़दूमे जहाँ के उर्स के अवसर पर बड़ी दरगाह और उस ओर आने वाले बिहारशरीफ़ नगर के सभी मार्ग दीयों, मशालों, फ़ानूसों इत्यादि के प्रकाश से जगमगा उठते थे। इसलिए यह आयोजन

चिरग़ाँ के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

रमज़ान के महीने से ही हज़रत मख़दूमे जहाँ के सज्जादानशीन उर्स की तैयारियो में संलग्न हो जाते हैं। दरगाह शरीफ़ की मरम्मत, चूनाकारी, पेंटींग, श्रद्धालुओं की सुविधा के उपाय होने लगते हैं। उर्स शरीफ़ का मुख्य दिवस तो ईद की पाँच तारीख़ है, लेकिन ईद के बाद से ही लोगों का समूह दरगाह शरीफ़ और ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म पहुँचने लगता है। और हर घर अतिथियों से आबाद हो जाता है। सार्वजनिक स्थानों पर ख़ेमे गाड़े जाते हैं और सरायें भर जाती हैं। पाँच तारीख़ आते-आते पूरा दरगाह क्षेत्र श्रद्धालुओं से पूर्णत: भर जाता है।

उर्स शरीफ़ के विशेष कार्यक्रम मख़दूमे जहाँ की ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में सम्पन्न होते हैं। जहाँ ईद की पाँच तारीख प्रात: से ही पवित्र क़ुरआन का जाप और क़ुल का आरम्भ होता है और लंगर बँटने लगता है। शाम 4 बजे के बाद से ख़ानक़ाह में हज़रत मख़दूमे जहाँ के अनमोल पत्रों की शिक्षा का कार्यक्रम होता है। तथा रात्रि के समय जबकि हज़रत मख़दूमे जहाँ की मृत्यु हुई थी ख़ानक़ाह मुअ़ज़्ज़म में उस समय का आँखों देखा हाल सुनाया जाता है, जिसे सुन कर हर व्यक्ति भाव-विभोर हो उठता है। फिर एशा (रात्रि) की नमाज़ के बाद मख़दूमे जहाँ का प्रसाद लंगर सभी को खिलाया जाता है।

12 बजे रात्रि के समीप सज्जादानशीन दरगाह शरीफ़ जाने की तैयारी करते हैं। और पारम्परिक वेश भूषा में डोली पर बैठकर श्रद्धालुओं की अपार भीड़ में मशालों के मध्य जब वो दरगाह शरीफ़ की ओर चलते हैं तो अजीब, अनोखा, मनमोहक दृश्य होता है। हर एक श्रद्धालु इसका प्रयास करता है कि मख़दूमे जहाँ के सज्जादाशीन के पवित्र हाथों को चूम सके नहीं तो स्पर्श करने का ही सौभाग्य प्राप्त कर ले। 12 बजे रात्रि में सज्जादानशीन दरगाह में पधारते हैं। सीधे हज़रत मख़दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार पर जाकर परम्परानुसार हाज़री देते हैं फिर गुम्बद से निकल कर खुले प्रांगण में हज़रत मख़दूमे जहाँ के स्थान पर आसीन होते हैं और पवित्र क़ुरआन का पाठ

(कुल) सम्पन्न होता है।

कुल के बाद सज्जादानशीन सभी श्रद्धालुओं की मनोकामना की पूर्ति और जनकल्याण, विश्वशांति तथा सद्भाव के लिए प्रार्थना करते हैं। फिर सभी को आर्शीवाद देते हुए डोली पर ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म लौट आते हैं। तब ख़ानक़ाह में प्रारंभ होती है सूफ़ी परम्परानुसार क़व्वाली, जिसमें ईशप्रेम जगाने वाली कविताएं, पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद[सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम] की स्तुतियाँ और हज़रत मख़दूमे जहाँ की महिमा में कही गई कविताएं लोगों को भावविभोर कर डालती हैं। यह आयोजन सुबह की नमाज़ तक चलता है। सुबह की नमाज़ के उपरांत बाँस की बनी टोकरियों में रोटी और हलवा तथा कोरे घड़े में शरबत ला कर रखा जाता है और हज़रत मख़दूमे जहाँ तथा उनके पीरो मुर्शिद शैख़ नजीबुद्दीन फ़िरदौसी की पवित्र आत्मा के लिए कुल पढ़ा जाता है।

इसके बाद सज्जादानशीन के साथ सभी उपस्थित सूफ़ी संत व श्रद्धालुगण अपने-अपने हाथों में लम्बोतरे मृदभाँड (गागर) लिये हुए ख़ानक़ाह से निकल कर समीप ही मख़दूम बाग़ में जाते हैं और वहाँ से सभी अपने-अपने गागर में मख़दूमे जहाँ के नियाज़ के लिए पकने वाले भोजन हेतु पानी भर कर लाते हैं। पानी लाने को जाने और आने के क्रम में क़व्वाल साथ-साथ यह पारम्परिक बोल विशेष राग में गाते हुए चलते हैं:

(गागर लेकर जाते समय)

शरफ़ा जहाँ के सोंधे आँचल बोर
सोने की तेरी घयलया रे रेशम पाग की डोर
सब पन्हरियाँ भर भर गैलीं अपनी-अपनी ओर

(पानी भर कर लौटते समय)

शाहे शरफ़ जी मैं तोसे माँगू
आनन्द, सुख, सम्पति, ईमाँ
शाहे शरफ़ जी मैं तोसे मागूँ

6 तारीख़ को रात में गागर में लाए पानी से बना खाना नेयाज़ होता है और सभी में बाँटा जाता है और 9 तारीख़ तक उर्स समारोह

के अन्तर्गत ख़ानक़ाह में सज्जादानशीन से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है और परम्परानुसार क़व्वाली और पवित्र जाप तथा लंगर का सिलसिला भी चलता रहता है।

मख़दूमे जहाँ के सज्जादानशीनों की स्वर्णिम शृंखला

हज़रत मख़दूमे जहाँ के परलोक सिधारने के समय मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी अदन (अरब की एक प्रसिद्ध बन्दरगाह) में थे। अपने धर्मगुरु की मृत्यु के बाद बिहार पहुँचे और हज़रत मख़दूमे जहाँ के पहले सज्जादानशीन हुए।

1

मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी

(782-803 हि०/1380-1401 ई०)

आप हज़रते मख़दूमे जहाँ के पहले सज्जादानशीन हुए और लगभग 21 वर्षों तक इस पद पर रह कर मख़दूमे जहाँ के मार्ग का अनुसरण करते रहे।

आप का पैतृक देश बल्ख़ था, जो कि अविभाजित सोवियत रूस का एक भाग था। आपके पिता शैख़ शमसुद्दीन बल्ख़ी अपने देश के राजपरिवार से सम्बन्धित थे और यहाँ किसी सम्मानित पद पर आसीन रह कर सच्चे गुरु की खोज में व्यस्त थे। बिहार के महान सूफ़ी संतों की शुभ चर्चा सुनकर बिहारशरीफ़ पधारे और हज़रत मख़दूम अहमद चिरमपोश के मुरीद हो कर यहीं के हो रहे। आपके बाद आपका परिवार भी बिहारशरीफ़ आ गया। अपने परिवार के साथ मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी भी बिहारशरीफ़ आए तब आप एक तेजस्वी छात्र थे और आपके अंन्दर असामान्य मेधा छिपी हुई थी। प्रकृति में वाद-विवाद करने और बिना प्रमाण और दलील के किसी बात को न मानने की विशिष्टता थी। इसीलिए ऐसे ज्ञानी गुरु की खोज थी जो इस कसौटी पर खरा उतरे।

अपने पिता के गुरु मख़दूम चिरमपोश के पास मन नहीं लगा तो मख़दूमे जहाँ की सेवा में पहुँचे और कुछ ज्ञान, विज्ञान की उलझी

गुत्थियाँ उनके समक्ष रखीं। मख़दूमे जहाँ ने बड़े ध्यान से उनके प्रश्नों को सुना और उत्तर देना प्रारंभ किया। मौलाना मुज़फ़्फ़र हर उत्तर को यह कहकर काटते गए कि मैं इसे स्वीकार नहीं करता हूँ परन्तु हज़रत मख़दूमे जहाँ बड़े धैर्य और स्नेह के साथ उत्तर देते गए यहाँ तक कि आप मख़दूमे जहाँ के आकर्षण के शिकार होकर मन्त्रमुग्ध हो गए और वाद-विवाद छोड़ अपने शिष्यों में सम्मिलित कर लेने की विनती करने लगे। मख़दूमे जहाँ ने जिनकी दिव्यदृष्टि आपके भविष्य को भलीभाँति देख रही थी मुस्कुराकर आपको मुरीद कर लिया और फ़रमाया :

> ''प्रिय जिस मार्ग में तुम मेरे साथ चलना चाहते हो उस मार्ग में ज्ञान अति आवश्यक है तुमने अब तक जो शिक्षा ग्रहण की उसका उद्देश्य पद और आदर सम्मान प्राप्त करना था इसलिए वह शिक्षा तुम्हें कोई विशेष लाभ नहीं पहुँचा सकेगी। अब मात्र अल्लाह के लिए शिक्षा ग्रहण करने को अपना उद्देश्य बनाओ और चिंतन में लग जाओ तब जो ज्ञान प्राप्त होगा वह इस मार्ग में बड़ा सहायक सिद्ध होगा''।

आप एक बार फिर दिल्ली गए और लगभग 2 वर्ष अहंकार और इच्छा को मार कर अध्ययन तथा शोध में व्यस्त रह कर लक्ष्य प्राप्त किया और कुछ दिनों तक फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ द्वारा स्थापित मदरसे में प्रधानाध्यापक भी रहे। फिर पीरो मुर्शिद के वियोग ने इतना सताया कि बिहारशरीफ़ आ गए और हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में रहने लगे। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उन्हें ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के लंगरख़ाने का प्रबंध सौंपा और धीरे-धीरे आप हज़रत मख़दूमे जहाँ की छत्र-छाया में रहकर तप और साधना के मार्ग को पार कर अपने गुरु के सबसे प्रिय शिष्य हो गए। स्वंय हज़रत मख़दूमे जहाँ आपका आदर करते और आप पर असामान्य कृपा और स्नेह की दृष्टि रखते।

हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के

आदर और प्रेम की प्रतिमूर्ती थे। यहाँ तक कि हज़रत मख़दूमे जहाँ जैसे पीर और मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी जैसे मुरीद का उदाहरण दिया जाने लगा। हज़रत मख़दूमे जहाँ की ही तरह पत्राचार के द्वारा ज्ञान प्रकाश फैलाने का कार्य किया। बड़े-बड़े प्रशासनिक पदाधिकारी व राजे-महाराजे आपके भक्तों में थे। सूफ़ी संतों के मध्य आपकी महिमा का गुणगाण होता था। हज़रत शैख़ नसीरुद्दीन चिराग़ देहली से आपकी मित्रता थी। उन तक हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों का संग्रह अध्ययन हेतु, आपही के द्वारा पहुँचा था। बंगाल का स्वतंत्र शासक सुल्तान ग़ेयासुद्दीन भी आपका भक्त था और आपकी सेवा में बड़े आदर के साथ पत्र लिखता था और आप भी उसके पत्रों के उत्तर देते रहते थे। हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के कुल 181 पत्र प्राप्त है। सभी पत्र उच्च कोटी की भाषा में हैं और इनकी विषयवस्तु बड़ी ही विद्वतापूर्ण है। मुझे सुल्तान ग़ेयासुद्दीन के भी कूछ बहुमूल्य पत्र प्राप्त हुए हैं, जो मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के नाम हैं।

पत्रों के अतिरिक्त आपकी निम्नलिखित रचनाएँ भी मिलती हैं :

(1) कविताओं का संग्रह (दीवान) (प्रकाशित)

(2) शरह अक़ायदे निस्फ़ी की व्याख्या

(3) रिसाला मुज़फ़्फ़रिया दर हिदायते दुरवेशी

(4) मशारेकुल अनवार का फ़ारसी रूपांतरण

आप 803 हिजरी के रमज़ान मास की तीन तारीख़ को अदन में परलोक सिधारे और जन्नतुल अदन में दफ़न हुए। नौशए तैहीद बल्ख़ी आपके संग थे आपने उन्हें अपने बाद मख़दूमे जहाँ का दूसरा सज्जादानशीन मनोनीत कर भारत जाने का निर्देश दिया।

आपके प्रमुख ख़लीफ़ा निम्नलिखित हुए :

(1) मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद

(2) मौला क़मरुद्दीन बल्ख़ी (छोटे भाई)

(3) हज़रत जमाल औलिया अवधी

मख़दूम हुसैन बिन मुइज़ नौशए तौहीद बल्ख़ी

(803-844 हि०/1401-1441 ई०)

आप हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के सगे भतीजे, प्रिय शिष्य और ख़लीफ़ा हज़रत शैख़ मुईजुद्दीन बल्ख़ी के पुत्र तथा हज़रत शम्स बल्ख़ी के पौत्र थे।

आपका जन्म ज़फ़राबाद (जौनपूर से पूर्व में 4 मील की दूरी पर स्थित एक ऐतिहासिक नगर) में हुआ। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने आपके जन्म की सूचना मिलने से पूर्व ही हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी को इसकी सूचना दी और अपनी ओर से शुभकामना व्यक्त की तो मौलाना को बड़ा आश्चर्य हुआ। परन्तु जब मौलाना मुईज़ की चिट्ठी मिली तो इस पूर्व सूचना की पुष्टि हो गई।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने आपके लिए अपना एक पवित्र परिधान इसलिए प्रदान किया कि इससे नवजात शिशु का वस्त्र बनाया जाए तथा अपने एक रूमाल से नवजात शिशु के लिए एक टोपी भी सिलवा कर भेजी जो छट्ठी के दिन मख़दूम हुसैन के सिर पर सुशोभित हुई। इस पवित्र टोपी में आश्चर्यजनक विशेषता यह थी कि हज़रत मख़दूम हुसैन ने इसे जीवन भर पहना जब सिर से उतारते छोटी प्रतीत होती और जब पहनते तो सही होती। जब मख़दूम हुसैन की मृत्यु हुई तो आपके सम्बन्धियों और शिष्यों ने कहा कि इस पवित्र टोपी को आपकी छाती पर रख दिया जाए या इसे जीवन की भाँति ही पहना दिया जाए। हज़रत मख़दूम हुसैन के एक प्रिय शिष्य हज़रत सैयद मीर कोतवाल ने अपने हाथ से वह टोपी आपके सिर पर पहनाई तो उस समय भी वह ठीक आई।

एक बार हज़रत मख़दूम जहाँ को मौलाना मुज़फ़्फ़र वज़ू करा रहे थे और हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अपनी पवित्र पगड़ी को उतार कर नमाज़ पढ़ने के स्थान पर रखा हुआ था। मख़दूम हुसैन बच्चे थे, खेलते हुए आए और पवित्र पगड़ी अपने सिर पर रख नमाज़ के स्थान

पर नमाज़ पढ़ने की भंगिमा में खड़े हो गए। जब मौलाना मुज़फ़्फ़र ने देखा तो उन्होंने आपको ऐसे खिलवाड़ से रोकने और मना करने का प्रयास किया तो हज़रत मख़दूम जहाँ ने उन्हें देख कर फ़रमाया कि मौलाना मुज़फ़्फ़र क्यों रोकते हो, वह अपने स्थान को पहचानता है। इस प्रकार हज़रत मख़दूम जहाँ ने आपके बचपन में ही आपके अपने उत्तराधिकारी होने की भविष्यवाणी कर दी थी।

एक दिन हज़रत मख़दूम जहाँ ने फ़रमाया :

> ''मौलाना मुज़फ़्फ़र हम और तुम परिश्रम करते हैं लेकिन इसका पारिश्रमिक प्रिय हुसैन को प्राप्त होगा।''

एक दिन हज़रत मख़दूम जहाँ ने फ़रमाया :

> ''मैंने तनूर (तन्दूर) को गर्म किया और मुज़फ़्फ़र ने रोटी पकाई और खाएंगे प्रिय हुसैन।''

हज़रत मख़दूम हुसैन को बचपन से ही हज़रत मख़दूम जहाँ का सत्संग प्राप्त रहा। फिर हज़रत मख़दूम जहाँ से ही मुरीद होने का भी सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत मख़दूम जहाँ के चरित्र का आप पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। आपने सूफ़ीवाद की एक प्रमुख पुस्तक **अवारिफुल मआरिफ़** के आधे भाग की शिक्षा के लिए हज़रत मख़दूम जहाँ ने फ़रमाया था :

> ''मेरा अन्तिम समय समीप है पर तुम चिंता मत करो शेख़ बदीउद्दीन शाह मदार इस देश में पधारने वाले हैं, तुम इस पुस्तक का शेष भाग उनकी सेवा में जा कर पूरा कर लेना।''

जब शाह मदार भारत वर्ष पधारे और जौनपुर पहुँचे तो मख़दूम हुसैन उनकी सेवा में गए। उन्होंने आप पर बड़ी कृपा की और उन्होंने ही आपको 'समन्दरे तौहीद' की उपाधि दी और शेष पुस्तक की शिक्षा पूर्ण की तथा अपनी ओर से आपको ख़िलाफ़त भी प्रदान की।

आपकी शिक्षा और दीक्षा हज़रत मख़दूम जहाँ के आदेशानुसार मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के देख-रेख में हुई। हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने आपकी शिक्षा-दिक्षा में कोई कसर नहीं उठा रखी साथ ही इतना प्रिय रखते कि किसी को इसका आभास नहीं हो पाता कि यह आपके सगे पुत्र नहीं बल्कि भतीजे हैं।

हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी जब अरब गए तो मख़दूम हूसैन को साथ ले गए। चार साल पवित्र मक्का नगर में रह कर मख़दूम हूसैन ने प्रसिद्ध विद्वान शैख़ शमसुद्दीन ख़्वारिज़्मी से क़ुरआन के पाठ की शिक्षा ली। काबा के पवित्र और पावन क्षेत्र में ठीक काबा के सामने मुक़ामे इबराहीम के पास पवित्र क़ुरआन के पठन की सातों शैलियों में इस विद्या के प्रकाण्ड विद्वान शैख़ शमसुद्दीन हलवाई से दक्षता प्राप्त की। इसके अतिरिक्त पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद[सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम] के प्रवचनों के पवित्र संग्रह सही मुस्लिम और सही बुख़ारी की प्रारम्भ से अंत तक शब्दश: शिक्षा अपने चाचा हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी से प्राप्त की। पवित्र मक्का के दूसरे विद्वानों से भी लाभान्वित हो कर स्वंय भी शिक्षा जगत में प्रसिद्ध हो गए तो मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने अपनी ओर से दूसरों के मार्गदर्शन के लिए अधिकृत करते हुए ख़िलाफ़त भी प्रदान कर दी।

मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी की मृत्यु के समय आप उनके साथ अदन में ही थे और उनकी मृत्यु के बाद आदेशानुसार बिहार लौटे और हज़रत मख़दूमे जहाँ के दूसरे सज्जादानशीन का पदभार संभाला और लगभग 41 वर्ष तक हज़रत मख़दूम जहाँ की गद्दी की शोभा बढ़ाते रहे।

हज़रत मख़दूम हुसैन बड़े शक्तिशाली, महान और लोकप्रिय सूफ़ी संत गुज़रे हैं। आपके पौत्र शैख़ अहमद का कथन है कि हज़रत मख़दूम हुसैन के तेजस्वी मुखमंडल और दिव्यशक्ति परिपूर्ण काया जैसा कोई दूसरा संत देखने में नहीं आया। तेज और दिव्य प्रकाश के कारण सामने से आपके मुखमंडल को देखने की हिम्मत न होती थी।

जब आप किसी दूसरी ओर देखते या पवित्र सिर को झुकाए रखते तो अच्छी तरह दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता था।

हज़रत मख़्दूम हुसैन फ़रमाते थे कि लोग मुझको समझते हैं कि मैं दीवारों के भीतर बैठा हूँ लेकिन सम्पूर्ण संसार मेरे समीप एक प्याले पानी के बराबर है कि जो कुछ इसके भीतर है मुझे स्पष्ट दिखता है।

हज़रत मख़्दूम हुसैन ने मक्का के पवित्र नगर में निवास करते हुए एक दरुद* की रचना की जो कि इस प्रकार था-

"अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिन बे अददे ख़लक़ेका व रेज़ाअ नफ़सेका व ज़ेनता अर्शेका व मेदादा कलेमातेका"

इस दरूद की रचना के बाद आपके गुरु और चाचा, हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने आधी रात को स्वप्न में पैग़म्बर हज़रत

(*) इस्लाम धर्म के सलात या दरूद की बड़ी महत्ता और लाभ है। दरूद ऐसी विनती का नाम है, जिसमें परमात्मा से यह निवेदन किया जाता है। कि आप प्रिय चयनित पैग़म्बर (दूत) हज़रत मुहम्मद और उनकी सन्तान पर अपनी अपार कृपा और दयादृष्टि की वर्षा कीजिये तथा उनपर अपने शुभ नाम सलाम की छाया रखिये।

पवित्र कुरआन में इस सम्बन्ध में यह सूचना मिलती है कि स्वयं परमात्मा पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद पर अपार दया और कृपा की वर्षा करता रहता है और उनके ईशदूत भी दरूद नामक विनती करते रहते हैं। इसलिए परमात्मा के आदेशों के प्रति समर्पित मानवों को चाहिये कि वे भी उसके प्रिय पैग़म्बर हेतु यही विनती बारम्बार करते रहें।

दरूद नामक विनती से परमात्मा बड़ा प्रसन्न होता है और हर वह मनोकामना जिसके आरम्भ और अंत में तीन बार दरूद पढ़ लेते हैं। वह शीघ्र पूर्ण हो जाती है। दरूद की महिमा में अत्यधिक कथन और इनके लाभ के सम्बंध में ढेर सारे बखान मिलते हैं। सूफ़ी संतों के यहाँ इसके जप की विशेष महत्ता है। स्वयं पैग़म्बर मुहम्मद ने कई प्रकार के दरूद अपने शिष्यों (सहाबियों) को सिखाए थे। बिना दरूद के पैग़म्बर मुहम्मद का शुभ नाम लेना उचित नहीं है इसलिए उनके शुभ नाम के साथ सबसे छोटा दरूद 'सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम' अवश्य कहा जाता है। अनेक सूफ़ी संतों ने दरूद के मूल भूत अवयवों को रखते हुए स्वयं भी दरूद की रचना की है।

मुहम्मद मुस्तफ़ा[सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम] को देखा कि फ़रमाते हैं :

"मुज़फ़्फ़र इस रात को तुम्हारे भतीजे ने मुझको ऐसा उपहार भेंट किया है कि आज तक किसी ने ऐसा उपहार बहुत कम भेजा है।"

तथा यह भी फ़रमाया :

"पहले केवल एक हुसैन मेरे प्रिय थे अर्थात अली के पुत्र हुसैन, अब दो हुसैन मेरे प्रिय हुए एक वही अली के पुत्र हुसैन और दूसरे मुईज़ के पुत्र हुसैन (तुम्हारे भतीजे)।"

मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी की आँखें खुलीं तो उसी समय शैख़ हुसैन के कमरे पर गए और द्वार खटखटाया फिर स्वंय पहले सलाम किया और बड़े आदर भाव के साथ अपना स्वप्न उनको सुनाया तो मख़दूम हुसैन ने उन्हें दरूद की रचना के बारे में बताया। उन दिनों जो लोग पवित्र काबा के दर्शन हेतु आए हुए थे। उनमें तीस या चालीस पारंगत संत और ईशमित्र थे। उन सब ने रात्रि में स्वप्न में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद[सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम] के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया और सभी को आदेश प्राप्त हुआ कि शैख़ मुज़फ़्फ़र के भतीजे ने जो दरूद रच कर मुझे भेंट किया है उसको कन्ठस्थ कर लो। सुबह हुई तो हर एक हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र के पास आए और अपना-अपना स्वप्न सुनाया। दरूद सुनकर याद किया और जहाँ से आए थे वहाँ इस पवित्र दरूद को लेकर लौट गए।

हज़रत मख़दूम हुसैन की सेवा में जो कोई भी आता धनी हो या निर्धन, किसी भी धर्म का हो, आप उसे उसकी अवस्था के अनुसार कुछ देकर विदा करते। खाली हाथ कोई कम ही फिरता।

हज़रत मख़दूम हुसैन के काल में ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म की छटा ही निराली थी। तीस, चालीस सूफ़ी संत ख़ानक़ाह में ऐसे रहते थे जो कि प्राय: हर समय भावविभोर, परमात्मा के ध्यान में लीन तथा जाप और चिन्तन मनन में व्यस्त रहते थे। कठोर साधना और तप का

क्रम चलता रहता था। आपके काल में उच्च कोटि के पद्य गाने वाले कव्वाल 60 और 70 की संख्या में एकत्र होकर गाते थे और जहाँ तक दृष्टि काम करती थी बड़े-बड़े सूफ़ी संत, प्रशासनिक अधिकारी, राजपरिवार के सदस्य और गणमान्य व्यक्तियों की भीड़ होती थी।

मख़दूम हुसन अरबी और फ़ारसी भाषा के उद्भट विद्वान थे और धर्म विज्ञान में पारंगत थे। हदीस (पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के प्रवचनों का अध्ययन) में आपकी विशेष रुचि थी।

भारत वर्ष में हदीस की शिक्षा के प्रचार प्रसार में आपका योगदान महत्वपूर्ण और आधारभूत है।

आपके मुरीदों और शिष्यों की संख्या भी बहुत अधिक थी। देश, विदेश में आपके शिष्य फैले हुए थे। आपने भी हज़रत मख़दूमे जहाँ की भाँति पत्राचार के द्वारा ज्ञान के प्रसार का कार्य बड़ी व्यापकता के साथ किया। आपके पत्रों की शैली और उनका स्वरूप भी हज़रत मख़दूमे जहाँ से मिलता जुलता है। आपके 200 पत्रों की एक पाण्डुलिपि कुछ वर्ष हुए मैंने हैदराबाद के आसफ़िया ग्रन्थालय में खोज निकाली है, जिसमें उच्च कोटि के सूफ़ी दर्शन और इस्लामी धार्मिक विधाओं का समावेश है। इन पत्रों के उर्दू अनुवाद में श्री डाक्टर सैयद अली अरशद साहब शरफ़ी (गुलज़ार इबराहीम, भैंसासुर, बिहारशरीफ़) व्यस्त हैं और वे शीघ्र ही प्रकाशित हो कर अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होंगे।

आपकी मृत्यु का समय समीप आया तो आपके सुपुत्र, शिष्य, मुरीद और उत्तराधिकारी, हज़रत हसन दायम जश्न बल्ख़ी ने बड़ी निराशा के साथ अनुरोध किया कि हमें धार्मिक या सांसारिक जिसकी भी आवश्यकता होती थी उसकी पूर्ति आपकी सेवा में हो जाती थी। अब आप हमसे विदा हो रहे हैं तो हमारा क्या होगा। आपने फ़रमाया :

"क्यों चिंता करते हो, अल्लाह पाक के मित्रों को जो अधिकार और शक्ति इस लोक में प्राप्त है वह

उस लोक में जाकर दोगुनी हो जाती है, क्योंकि इस संसार में आत्मा बन्दी है, तुरंत पूर्व और पश्चिम में नहीं जा सकती। लेकिन जब शरीर से अलग हुई तो पलक झपकते आ, जा सकती है और पल भर में एक संसार का काम कर सकती है। इसलिए तुम्हें कोई आवश्यकता हो तो मेरी ओर ध्यान करना और हज़रत मख़दूमे जहाँ से विनती करना, अगर अल्लाह की सहमति हुई तो तुम्हारी आवश्यकता अवश्य पूर्ण हो जाएगी।''

आज भी यह विधि कारगर है।

हज़रत मख़दूम हुसैन 844 हि०/1441 ई० के ज़िलहिज्जा मास की 24 तारीख़ को परलोक सिधारे और बड़ी दरगाह से पश्चिम कुछ बाँस की दूरी पर पहाड़पूरा नामक स्थान में आप की दरगाह बनी।

आप के प्रसिद्ध **ख़लीफ़ा** निम्नलिखित हुए :

(1) हज़रत हसन दायम जशन बल्ख़ी (सुपुत्र)

(2) हज़रत शैख़ सुलेमान बल्ख़ी (पुत्र)

(3) हज़रत शैख़ मूसा बनारसी

(4) हज़रत कुत्बुद्दीन बीनाए दिल जौनपूरी

(5) हज़रत सैफुद्दीन बल्ख़ी

(6) हज़रत बहराम बिहारी

(7) हज़रत इल्म मनेरी

आपकी रचित **पुस्तकें** निम्नलिखित हैं-

(1) हज़राते ख़म्स (अरबी भाषा में)

(2) रिसाला क़ज़ा व क़द्र

(3) रिसाला तौहीद अख़स्सुल ख़वास

(4) रिसाला दर बयाने हश्त चीज़

(5) रिसाला तौहीदे ख़ास

(6) औरादे दह फ़सली

(7) पत्रों का संग्रह

(8) फ़ारसी कविताओं का संग्रह (दीवान)

(9) मसनवी ज़ादुल मुसाफ़ेरत

(10) रिसाला दर शमाएलो ख़साएले नबवी[सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम]

(11) मसनवी चहार दरवेश

आपके प्रवचनों को आपके एक प्रिय मुरीद क़ाज़ी नेमतुल्लाह नें संग्रहित कर '**गन्जे ला यख़्फ़ा**' नाम दिया है। यह भी एक बहुमूल्य संग्रह है।

3

हज़रत मख़दूम हसन दायम जश्न बल्ख़ी

(844 - 855 हि०/1441-1451 ई०)

आप अपने पिताश्री, हज़रत मख़दूम हुसैन के बाद मख़दूमे जहाँ के तीसरे सज्जादानशीन हुए और लगभग 11 वर्षो तक इस पवित्र गद्दी को शोभान्वित करते रहे।

आपकी शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से ही हुई। आप भी अपने समय के महान सूफ़ी संत हुए हैं। आप में दानशीलता की प्रवृत्ति बड़ी मुखर थी। घर में कुछ रखना आपको पसन्द न था यहाँ तक कि हज़रत मख़दूम हुसैन ने एक बार उनकी इस प्रवृत्ति के बारे में फ़रमाया कि :

> "प्रिय हसन को अगर घर भर धन दौलत मिल जाए, फिर भी यह कुछ ही दिनों में उसे बाँट कर निश्चिंत हो जाएं। बल्कि अगर पावें तो हमें भी किसी को दे दें।"

आपने अपने पिताश्री, हज़रत मख़दूम हुसैन की अरबी भाषा में रचित पुस्तक '**हज़राते ख़म्स**' की फ़ारसी भाषा में सुन्दर व्याख्या का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। आपने हज़रत मख़दूम हुसैन के पत्रों को भी एकत्र कर अपनी भूमिका के संग एक संग्रह का रूप दिया।

मख़दूम हुसैन ने लोगों को सान्त्वना दी और चालीस दिनों तक लगातार चाश्त की नमाज़ पढ़ कर अपने पवित्र मुखस्राव को आपकी बन्द आँखों पर मलते रहे। अन्ततः चालीसवें दिन आखें खुलीं और आपको इस संसार में पहला दर्शन मख़दूम हुसैन का प्राप्त हुआ। आप बराबर अपने दादा की सेवा में रहे और उनसे ही शिक्षा प्राप्त करते रहे।

हज़रत मख़दूम हुसैन आपकी शिक्षा-दीक्षा में विशेष रुचि लेते थे और बराबर उच्च से उच्चतर शिक्षा की प्राप्ति के लिए उत्प्रेरित करते रहते थे। अपनी बीमारी की ही अवस्था में आपको अक़ायद की प्रसिद्ध पुस्तक **'शरह अक़ायदे निस्फ़ी'** मौलाना मुज़फ़्फ़र रचित व्याख्या के संग पढ़ाई और ढेर सारे आर्शीवाद दिये।

एक बार पवित्र मक्का के दर्शन के लिए आप सपरिवार भ्रमण कर रहे थे कि समुद्र में तेज़ आँधी के कारण जहाज़ डूबने लगा और बचने की कोई आशा नहीं रही। सारे यात्री मृत्यु को सामने देखने लगे। इस अवस्था में आप परमात्मा के ध्यान में लीन होकर कहने लगे कि ऐ अल्लाह! मैं तेरे इस कार्य से भी सहमत हूँ अवश्य ही इसमें भी कोई भलाई छिपी होगी। उसी समय आप की सुपुत्री फ़ातिमा को ऊँघ आई तो उसने हज़रत अली को स्वप्न में देखा कि वे तसल्ली दे रहे हैं कि तुम लोग चिंतित न हो, तुम्हारा जहाज़ सुरक्षित रहेगा। इसके बाद जहाज़ ख़तरे से बाहर हो गया। इसी कारण आप लंगर दरिया प्रसिद्ध हो गए।

एक दिन फ़रीद नामी एक व्यक्ति छोटी सी टोपी लिये हुए आपकी सेवा में आए और कहने लगे कि मेरे जन्म होने पर मेरे पिता ने हज़रत मख़दूम हुसैन से मेरे लिए एक टोपी माँगी थी। हज़रत मख़दूम ने एक बचकानी टोपी प्रदान की थी, जिसे छट्ठी के दिन पहनाया गया था। अब वह टोपी मेरे सिर पर नहीं आती है, बहुत छोटी है। मैं ने विचार किया कि आपकी सेवा में इसके बारे में प्रश्न करूँ, देखूँ क्या आदेश होता है। आपने वह टोपी ली और दोनों हाथ

उसके अन्दर देकर फिराने लगे और हज़रत मख़दूमे जहाँ के मख़दूम हुसैन को टोपी भेजने और उसके जीवन भर पहनने की कथा सुनाने लगे। जब कथा समाप्त हुई तो उनको समीप बुलाया। फ़रीद समीप आए और सिर झुकाया। आपने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कह कर उसे उनके सर पर रखा तो अब टोपी इतनी बड़ी थी कि भवों तक पहुँची।

आप रमज़ान की 19 तारीख़ को ८९१ हि० में परलोक सिधारे आपकी दरगाह भी पहाड़पूरा में मख़दूम हुसैन की दरगाह में प्रवेश से पहले ही क़ब्रिस्तान में एक सामान्य घेरे के भीतर है।

आपके प्रवचनों का संग्रह '**मूनिसुलकुलूब**' के नाम से विख्यात है। फ़ारसी भाषा में यह भी अभी तक हस्तलिखित है। हज़रत मख़दूमे जहाँ और उनके सज्जादानशीनों के विषय में इस प्रवचन संग्रह से बहुमुल्य सूचनाएं प्राप्त होती हैं।

इसके अतिरिक्त फ़ारसी कविताओं का एक संग्रह भी आपकी यादगार है। आपके प्रसिद्ध ख़लीफ़ा आपके सुपुत्र हज़रत मख़दूम इबराहीम बल्ख़ी हुए।

5

हज़रत मख़दूम इबराहीम सुलतान बल्ख़ी फ़िरदौसी

(891-914 हि०/1486-1508-09 ई०)

आप अपने पिता के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के पाँचवें सज्जादानशीन हुए और लगभग 23 वर्षों तक इस पद पर आसीन रहे।

आप भी अपने काल के लोकप्रिय सूफ़ी संत गुज़रे हैं। आपके पाँच पुत्र थे। (1) हाफ़िज़ बल्ख़ी (2) महमूद बल्ख़ी (3) दुरवेश बल्ख़ी (4) शाहीन बल्ख़ी (5) दौलत बल्ख़ी ।

रमज़ान की 19 तारीख़ को 914 हिजरी में आपकी मृत्यु हुई। आपकी दरगाह बिहारशरीफ़ में गंगन दीवान की दरगाह से पहले काँटा पर स्थित है।

6

हज़रत मख़दूम हाफ़िज़ बल्ख़ी फ़िरदौसी

आप अपने पिता के बाद 914 हिजरी में हज़रत मख़दूमे जहाँ के छठे सज्जादानशीन हुए। आप एक महान संत के वंशज और स्वंय भी एक महान संत थे आपके समय में ही हज़रत मख़दूमे जहाँ के वशंज में से एक सूफ़ी संत हज़रत मख़दूम शाह भीख, बड़ी दरगाह बिहारशरीफ़ में अपने स्वास्थ्य की कामना से आकर रहने लगे तो मख़दूम के वंशज होने के कारण आपने उनका इस सीमा तक आदर सत्कार किया कि स्वंय उन्हें अपने स्थान पर मख़दूमे जहाँ का सज्जादानशीन बना कर धन्य हो गए। आपने बिहारशरीफ़ में ही अपने गुरुओं की भाँति लोगों की शिक्षा-दीक्षा और कल्याण में समय बिताया।

आप का मज़ार बड़ी दरगाह क्षेत्र प्रारम्भ होने से पहले मिलने वाले तिराहे के समीप हबीब ख़ाँ मार्केट के भीतर बल्ख़ी मुहल्ले में स्थित है। आपके पुत्र हज़रत जीवन बल्ख़ी का मज़ार भी साथ ही है। हज़रत जीवन बल्ख़ी के वंशज बिहारशरीफ़ से फुलवारीशरीफ़ के समीप मौज़ा बेउर चले आये थे और फिर वहाँ से फ़तूहा में आकर बस गए। रायपूरा फतूहा (पटना) में आज तक आप के वंशज की यादगार ख़ानक़ाह बलख़िया मौजूद है और हज़रत मौलाना सैयद शाह अलीमुद्दीन बल्ख़ी वर्तमान सज्जादाशीन हैं।

7

हज़रत मख़दूम सैयद शाह भीख फ़िरदौसी

हज़रत मख़दूम हाफ़िज़ बल्ख़ी के जीवन में ही उनके स्थान पर मख़दूमे जहाँ के सातवें सज्जादानशीन हुए। आप हज़रत मख़दूमे जहाँ के सुपुत्र हज़रत मख़दूम ज़कीउद्दीन की एकमात्र सुपुत्री बीबी **बारका** (हज़रत वहीदुद्दीन चिल्लाकश की पत्नी) के वंशज थे। इसलिए मख़दूमे जहाँ के वंशज होने के कारण सभी आपके प्रति आदर भाव रखते थे और बिहारशरीफ़ में आपके आगमन ने मानों

मख़दूम की स्मृति को जीवन्त बना दिया था।

आप न केवल मख़दूमे जहाँ की औलाद में थे बल्कि मख़दूम के पीरो-मुर्शिद हज़रत नजीबुद्दीन फ़िरदौसी की बहन (बहाउद्दीन चिल्लाकश की माता) के वंशज भी थे। आपकी लोकप्रियता आकाश छूने लगी। हर व्यक्ति आपके प्रेम और स्नेह में भावविभोर हो गया। इस बीच मख़दूम की भी आप पर स्पष्ट कृपादृष्टि चमत्कार स्वरूप हुई अर्थात आप रोगग्रस्त होकर दरगाह शरीफ़ पर स्वास्थ्य की कामना से हाज़िर हुए थे और दरगाह शरीफ़ पर हाज़री ने आपको रोगमुक्त कर दिया। तब से आज तक आप ही के वंश में मख़दूमे जहाँ की सज्जादानशीनी चली आ रही है।

आप को सूफ़ीवाद की शिक्षा-दीक्षा हज़रत शाह बसीरुद्दीन नूरशामी से प्राप्त हुई थी और आप फ़िरदौसी सिलसिले में उन्हीं के मुरीद और ख़लीफ़ा थे। हज़रत शाह बसीरुद्दीन नूरशामी को हज़रत शाह सदरुद्दीन रज़ा से यह सब कुछ प्राप्त हुआ था और हज़रत शाह सदरुद्दीन रज़ा स्वंय, हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रिय मुरीद और ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना नसीरुद्दीन सुन्नामी से लाभान्वित हुए थे।

आप हज़रत मख़दूमे जहाँ की दरगाह शरीफ़ के प्रति अभूतपूर्व आदर सम्मान का भाव रखते थे और दिन रात ईश-जाप में व्यस्त रहते थे।

आप अपनी वसीयत के अनुसार बड़ी दरगाह में प्रवेश के उस द्वार से सटे दफ़न हुए जिसका निर्माण शेख़ सलाहुद्दीन ने कराया था।

8

हज़रत मख़दूम शाह जलाल फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह भीख फ़िरदौसी के बाद मख़दूमे जहाँ के आठवें सज्जादानशीन हुए। आप अपने पिता के मार्ग का पूर्णतः अनुसरण करते रहे और आपका निवास भी बड़ी दरगाह पर ही रहा केवल वार्षिक उर्स शरीफ़ के अवसर पर ख़ानक़ाह

मुअज़्ज़म पधारते और सज्जादानशीन के कर्त्तव्यों को पूरा करते।

आप का मज़ार भी अपने पिता और बड़े भाई हज़रत शाह लाल के समीप है।

9

हज़रत मख़दूम शाह अख़वन्द फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह जलाल फ़िरदौसी के बाद मख़दूमे जहाँ के नौवें सज्जादानशीन हुए और पूर्वजों के मार्ग का अनुसरण किया। आपने सूरी वंश का उत्थान और अवनति दोनों देखी तथा मुगलों का भी शासन काल देखा। आपही के काल में सन्दली दरवाज़े का निर्माण बड़ी दरगाह में हुआ।

आप अपने पिता के ही मुरीद और ख़लीफ़ा थे। आपका मज़ार पिता एवं दादा के मज़ार से पूरब तनिक ऊँचे चबूतरे पर है।

10

हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह अख़वन्द फ़िरदौसी के उपरांत हज़रत मख़दूमे जहाँ के 10 वें सज्जादानशीन हुए। आपने सूफ़ीवाद की शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से ही प्राप्त की और उन्हीं के मुरीद और ख़लीफ़ा हुए आपका जीवन भी अपने बुजुर्गों की भांति दरगाह शरीफ़ पर ही गुज़रा।

आपका मज़ार भी अपने पिता से सटे है।

11

हज़रत मख़दूम शाह अहमद फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 11वें सज्जादानशीन हुए। आप अपने पिता के ही शिष्य मुरीद और ख़लीफ़ा थे। आपने अपने पूर्वजों की ही भाँति बड़ी दरगाह में रहकर लोगों के मार्गदर्शन और कल्याण में अपना जीवन बिताया। आपका मज़ार भी अपने पिता के सटे है।

12

हज़रत मख़दूम दीवान शाह अली फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह अहमद फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 12वें सज्जादानशीन हुए। आपने भी शिक्षा-दीक्षा अपने पिता ही से प्राप्त की और महान सूफ़ी संत हुए। आप हज़रत मख़दूम शाह भीख के वंशज में सर्वप्रथम थे जिन्होंने बड़ी दरगाह का निवास छोड़ कर ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में स्थाई निवास प्रारम्भ किया। आपके ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में निवास करने से ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म की पुरानी छटा फिर जीवंत हो उठी और यह पवित्र स्थान एक बार फिर मख़दूम के वंशजों से आबाद और प्रकाशित हो उठा। आपने ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म क्षेत्र में विभिन्न निर्माण कार्य कराया और लंगर जारी किया। ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के क्षेत्र को फिर से आबाद करने के कारण यह मुहल्ला आप ही के नाम से मुहल्ला शाह अली प्रसिद्ध हुआ।

दूर-दूर से सत्य प्रेमी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म आकर आप से लाभान्वित होने लगे और आपकी महानता की चर्चा दिल्ली दरबार तक जा पहुँची। तत्कालीन सुल्तान ने ख़ानक़ाह के खर्चे के लिए जागीरें भेंट कीं।

आपका विवाह हज़रत मख़दूम शोऐब फ़िरदौसी शेख़पूरवी के वंश में हुआ। जिनसे दो पुत्र प्रसिद्ध हुए (1) हज़रत शाह मुस्तफ़ा (2) हज़रत मख़दूम शाह अब्दुस्सलाम।

इन दोनों ही पुत्रों से आपका वंश ख़ूब फला-फूला और अब तक फल फूल रहा है। आप का मज़ार भी बड़ी दरगाह में अपने पूर्वजों के संग है।

13

हज़रत मख़दूम शाह अब्दुस्सलाम फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम दीवान शाह अली फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 13वें सज्जादानशीन हुए। शिक्षा-दीक्षा अपने

पिता से ही प्राप्त की और उन्हीं से मुरीद होकर ख़िलाफ़त प्राप्त की।

1033 हिजरी में सम्राट जहाँगीर ने मौज़ा मसादिरपूर आपही को भेंट किया था।

आपका मज़ार हज़रत मख़दूमे जहाँ के चरणों के बाद दूसरी पंक्ति में है।

14

हज़रत मख़दूम शाह ज़कीउद्दीन फ़िरदौसी

आप अपने पिता शाह अब्दुस्सलाम फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 14वें सज्जादानशीन हुए।

आप पिता के शिष्य मुरीद और ख़लीफ़ा थे। इस्लामी विद्या में निपुण और महान सूफ़ी संत थे। प्रसिद्ध मौलाना अब्दुन्नबी मुहद्दिस बिहारी जो कि शैख़ नूरुलहक़ मुहद्दिस देहलवी के शिष्य थे, आपसे भी लाभान्वित हुए थे। आप ही के काल में हबीब खाँ सूरी ने बड़ी दरगाह में ईदगाह और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए हौज़े शरफ़ुद्दीन (मख़दूम तालाब) का निर्माण कराया।

आपका मज़ार मख़दूमे जहाँ के चरणों के पास तीसरी पंक्ति में स्थित है।

15

हज़रत मख़दूम शाह वजीहुद्दीन फ़िरदौसी

आप आपने पिता हज़रत मख़दूम शाह ज़कीउद्दीन के बाद मख़दूमे जहाँ के 15 वें सज्जादानशीन हुए।

दरगाह शरीफ़ की अचल सम्पत्तियों को लेकर आपके सौतेले भाईयों ने आपसे विवाद प्रारम्भ किया था, परन्तु तत्कालीन सूफ़ी संतों और दूसरी दरगाहों के सज्जादानशीनों ने मिल कर आपके अधिकारों की लिखित पुष्टि की और इस प्रकार विवाद समाप्त हो गया।

आप अपने काल के विख्यात सूफ़ी संत हज़रत शाह रुक्नुद्दीन शत्तारी (सज्जादानशीन मख़दूम शाह अली शत्तारी, जन्दाहा, वैशाली) से मुरीद होकर ख़िलाफ़त प्राप्त की थी। इसके अतिरिक्त आप अपने

पिता के भी ख़लीफ़ा थे।

आपकी सेवा में तत्कालीन गवर्नर अज़ीमुश्शान ने हाज़िरी दी थी और बड़ी दरगाह पर निर्माण कार्य में रुचि ली थी। सुल्तान फर्रुख़सियर ने भी कई गाँव मख़दूम जहाँ के उर्स के लिए भेंट किये थे। आपके काल में मख़दूम जहाँ का उर्स बड़े धूम-धाम से होता था। आपही के काल में वे सारी पवित्र वस्तुएं (तबर्रुकात), जो अब तोशाख़ाने में रखी हैं, ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में एकत्र हुईं।

आप का मज़ार भी बड़ी दरगाह में है।

16

हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद बुज़ुर्ग फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह ज़कीउद्दीन के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 16वें सज्जादानशीन हुए। परन्तु आप कुछ ही दिनों बाद स्वर्ग सिधार गए।

17

हज़रत मख़दूम शाह अली फ़िरदौसी

आप अपने सगे भाई हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद बुज़ुर्ग फ़िरदौसी की मृत्यु के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 17वें सज्जादानशीन हुए। परन्तु आप भी जल्दी ही स्वर्ग सिधार गए।

18

हज़रत मख़दूम शाह अलाउद्दीन फ़िरदौसी

आप अपने सगे भाई हज़रत मख़दूम शाह अली फ़िरदौसी के उपरांत मख़दूमे जहाँ के 18वें सज्जादानशीन हुए, परन्तु आप भी अपने दो बड़े भाइयों की ही भाँति जल्दी ही परलोक सिधार गए।

19

हज़रत मख़दूम शाह बदीउद्दीन फ़िरदौसी

आप अपने सगे भाई हज़रत मख़दूम शाह अलाउद्दीन फ़िरदौसी की मृत्यु के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 19वें सज्जादानशीन हुए। अपने तीन भाईयों की जल्दी-जल्दी मृत्यु के बाद आपके काल में

ठहराव आया और आपकी लोकप्रियता सुदृढ़ हुई। राजगीर में हज़रत मख़्दूमे जहाँ के हुजरे का नवनिर्माण आपही के काल में 1150 हि० में हुआ। आपके समय में ही मुग़ल शासक मुहम्मद शाह रंगीला ने कई गाँव ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में भेंट किये।

आप का मज़ार भी बड़ी दरगाह में है।

20

हज़रत मख़्दूम शाह अलीमुद्दीन दुरवेश फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़्दूम शाह बदीउद्दीन फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़्दूमे जहाँ के 20 वें सज्जादानशीन हुए। आप हज़रत शाह मुहम्मद शफ़ी शुत्तारी के मुरीद और ख़लीफ़ा थे, जो कि हज़रत शाह रुक्नुद्दीन शत्तारी के परनाती और मुरीद तथा ख़लीफ़ा थे।

आप एक लोकप्रिय महान सूफ़ी संत गुज़रे हैं। आपकी महानता की चर्चा शाही दरबार तक जा पहुँची। शाह आलम द्वितीय बिहारशरीफ़ में हाज़री के लिए आया और आपसे भेंट कर आर्शीवाद प्राप्त किया। उसने कई गाँव मख़्दूम जहाँ के दरगाह के खर्चे के लिए भेंट किये।

शाह आलम द्वितीय के कई शाही फ़रमान ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में सुरक्षित हैं, जिससे अपने काल में हज़रत शाह अलीमुद्दीन फ़िरदौसी की अतिलोकप्रियता और महानता का पता चलता है।

आपके तीन विवाह हुए। पहली पत्नी से कोई सन्तान न हुई। दूसरी पत्नी से केवल एक लड़की बीबी मरियम थीं। तीसरी पत्नी सैयद मनव्वर अली की पुत्री थीं उनसे एक पुत्र हज़रत शाह वलीउल्लाह आपकी अन्तिम अवस्था में जन्मे।

आप का मज़ार हज़रत मख़्दूमे जहाँ के 26वें सज्जादानशीन हज़रत मख़्दूम शाह मुहम्मद अमजाद फ़िरदौसी के मज़ार से सटे पूर्व में है।

21

हज़रत मख़्दूम शाह वलीउल्लाह फ़िरदौसी

अपने पिता मख़्दूम शाह अलीमुद्दीन दुरवेश फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़्दूमे जहाँ के 21वें सज्जादानशीन हुए। आप का जन्म

भी हज़रत मख़दूमे जहाँ का एक स्पष्ट चमत्कार था। हज़रत शाह अलीमुद्दीन को तीनों विवाह से कोई पुत्र नहीं हुआ और वृद्धावस्था के लक्षण शरीर पर स्पष्ट होने लगे तो आप सन्तान के न होने से मख़दूम की गद्दी के संचालन के प्रति चिंतित हुए और अपने हार्दिक मित्र हज़रत शाह एहसानुल्लाह चिश्ती (सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह फ़रीदुद्दीन तवीलाबख़्श चिश्ती चाँदपूरा, बिहारशरीफ) से अपनी चिंता की चर्चा की और उन्हीं के परामर्शानुसार, उनके साथ आप मख़दूमे जहाँ की दरगाह शरीफ़ पर विशेष हाज़री के लिए फूल और सुगंधित सामग्री के साथ चले। मार्ग में हज़रत शाह एहसानुल्लाह चिश्ती ने हज़रत मख़दूमे जहाँ की महिमा में एक कविता रची और उसी में अपनी विशेष चिंता की ओर मख़दूमे जहाँ का ध्यान आकृष्ट कराया और उसे पढ़ते हुए दरगाह शरीफ़ पर हाज़री दी और वह रात वहीं दरगाह शरीफ़ पर ध्यान में बिताई तो एक तेजस्वी पुत्र का अर्शीवाद प्राप्त हुआ। हज़रत शाह एहसानुल्लाह चिश्ती की कविता के कुछ पद्य इस प्रकार है:

या शरफ़ दीं तुझ शरफ़ से जुमला आलम पुरशरफ़
जुमला आलम पुरशरफ़ है तुझ शरफ़ से हर तरफ़
जुल्म करना चाहता है हासिदे नादाँ हरफ़
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाहे नजफ़

एक तो मैं हूँ अकेला दुसरे सुनसान है
तिस उपर उन हासिदों के डाह का घमसान है
तुम करो आबाद इस जंगल को जो वीरान है
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाह नज़फ़

जो मुरादें थीं मेरी सब तुमने बरलाया शताब
शाद हैं सब दोस्त मेरे और हैं दुशमन कबाब
आरज़ू एक और मैं रखता हूँ ऐ आली जनाब
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाह नज़फ़

या शरफ़ दीं तुझ से रखता हूँ मैं इतनी इल्तेजा

शाह अलीमुद्दीं को दे तु इक पेसर बहरे ख़ुदा
वरना चंगुल मेरा और दामन तेरा रोज़े जज़ा
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाह नज़फ़
साले हिजरी ग्यारह सौ अस्सी और उसपर पाँच है
ये हेकायत बोलता हूँ तुम सुनो सब साँच है
लग रही अब दिल में मेरे इश्क़ की सौ आँच है
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाह नज़फ़

रो-रो कर की गई यह बिनती स्वीकार हुई और हज़रत शाह वलीउल्लाह का जन्म हुआ।

आप चार पाँच वर्ष के ही थे कि आपके पिता की मृत्यु हो गई। हज़रत शाह अलीमुद्दीन की मृत्यु के बाद आप के सौतेले बहनोई को मख़दूमे जहाँ की गद्दी पर आसीन होने की लालसा हुई उधर अधिकतर परिवार के लोग परम्परानुसार पिता के बाद पुत्र को सज्जादानशीन बनाना चाहते थे। इसलिए विवाद ने जन्म लिया। विवाद सुलझाने हेतु दोनों पक्षों और उनके समर्थकों ने उस काल के सबसे महान सूफ़ी संत हज़रत मख़दूम मुनइम पाक* को निर्णय के लिए अधिकृत किया।

(*) हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद मुनइम पाक (1082-1185 हि०) अपने काल के विख्यात महान सुफ़ी संत हुए हैं। आपकी जन्म भुमि पचना ग्राम जिला शेख़पुरा थी। आपने शिक्षा-दीक्षा बाढ़ के मीर मुहल्ला में हज़रत दीवान जाफ़र की ख़ानक़ाह में प्राप्त की। हज़रत दीवान जाफ़र के पुत्र हज़रत दीवान सैयद ख़लीलुद्दीन से मुरीद हुए और सभी सूफ़ी शाखाओं में ख़िलाफ़त प्राप्त की। फिर दिल्ली जा कर उच्च शिक्षा और शोध कार्य किया। फिर स्वंय दिल्ली में उच्च शिक्षा प्रदान करते रहे। दिल्ली में ही अबुलउलाईया सिलसिले के हज़रत शाह फ़रहाद और हज़रत शाह असदुल्लाह से लाभान्वित हुए और इन दोनों के बाद उनकी ख़ानक़ाह के सज्जादानशीन हुए। फिर दिव्य संकेत से पटना पधारे और पटना सिटी के मुहल्ला मीतन घाट में मुल्ला मीतन की मस्जिद में बाक़ी बचा सारा जीवन व्यतीत किया। आपने अभूतपूर्व लोकप्रियता अर्जित की। आप उच्चकोटी के सूफ़ी संत और महापुरुष गुज़रे हैं। इस उपमहाद्वीप में आपके शिष्यों कीशृंखला असामान्य रूप से फैली है। आपकी दरगाह शरीफ़ ख़ानक़ाह मीतन घाट में मौजूद है और मैं सैयद शाह शमीमुद्दीन अहमद मुनएमी वर्तमान सज्जादानशीन हूँ।

हज़रत मख़्दूम मुनइम पाक, जिनकी सेवा पीढ़ी दर पीढ़ी इस तुच्छ लेखक के परिवार में चली आती है, हज़रत मख़्दूमे जहाँ के परम भक्त थे, उन्हीं ने कहा कि हज़रत मख़्दूमे जहाँ जो निर्णय करेंगे उसी को लागू किया जाएगा यह कहकर दरगाह शरीफ़ चले गए और हज़रत मख़्दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार के समीप ध्यान में लीन हो गए। जब स्पष्ट संकेत प्राप्त हुआ तो वह पवित्र चादर जो नए सज्जादानशीन की पगड़ी के लिए मख़्दूमे जहाँ के मज़ार पर रखी जाती है, लेकर ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म आए। सबकी दृष्टि आपकी ओर थी और आपका निर्णय सुनने को सभी बेचैन थे। हज़रत शाह एहसानुल्लाह चिश्ती अल्पायु शाह वलीउल्लाह को ख़ानक़ाह में मख़्दूमे जहाँ की गद्दी के पास ले गए और हज़रत मख़्दूम मुनइम पाक ने यह कहते हुए हज़रत शाह वलीउल्लाह के शीर्ष पर पवित्र चादर की पहली पगड़ी अपने हाथों से बाँध दी कि जिस प्रकार हज़रत मख़्दूमे जहाँ को देखा है, उसी प्रकार मेरे हाथ से यह कार्य सम्पन्न हो रहा है। आपकी पगड़ी के बाद सभी सूफ़ी संतों और दूसरे संस्थानों से आए सज्जादानशीनों ने भी अपनी अपनी ओर से पगड़ी बाँध दी और सारा विवाद समाप्त हो गया। सर्वसम्मति से हज़रत शाह वलीउल्लाह, हज़रत मख़्दूमे जहाँ के 21वें सज्जादानशीन हो गए।

आपके मख़्दूमे जहाँ के सज्जादानशीन होने का सत्यापन मुग़ल शासक मुहम्मद शाह की ओर से भी फ़रमान के रूप में आया, जो कि ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में सुरक्षित है।

हज़रत शाह वलीउल्लाह ने हज़रत शाह हुसैन अली शत्तारी (सज्जादा नशीन, ख़ानक़ाह शत्तारिया, जन्दाहा) से मुरीद होकर संतमार्ग की शिक्षा दीक्षा प्राप्त की। आप हज़रत शाह हमीदुद्दीन राजगीरी से भी लाभान्वित हुए। हज़रत शाह वलीउल्लाह ने हज़रत मख़्दूम मुनइम पाक के सिलसिले की इजाज़त व ख़िलाफ़त मौलाना सैयद हसन रज़ा मुनएमी के ख़लीफ़ा से प्राप्त की।

आपको हज़रत मख़्दूमे जहाँ से असामान्य घनिष्ठता थी और

हज़रत मख़दूमे जहाँ की भी आप पर अभूतपूर्व दया और कृपा थी।

आपने अपने काल में ख़ानकाह मुअज़्ज़म का नवनिर्माण कराया और बड़े लोकप्रिय हुए।

आप 1234 हिजरी में 23 रजब को परलोक सिधारे। आपका मज़ार हज़रत मख़दूमे जहाँ के चरणों के पास दूसरी पंक्ति में सज्जादानशीनों के घिरे हुए विशिष्ट क्षेत्र में पहला है।

22

हज़रत मख़दूम शाह अमीरुद्दीन फ़िरदौसी

(1234-1287 हि०)

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह वली उल्लाह के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 22वें सज्जादानशीन हुए और लगभग 53 वर्ष तक हज़रत मख़दूमे जहाँ की गद्दी की शोभा रहे। आपका जन्म 1217 हि० के मुहर्रम मास की 9 तारीख़ को हुआ था।

आपने शिक्षा-दीक्षा अपने काल के प्रसिद्ध विद्वान मौलाना शाह अज़ीजुल्लाह कुरजवी से प्राप्त की थी जो [illegible] हज़रत मख़दूम मुनइम पाक के ख़लीफ़ा हज़रत शाह कुत्बुद्दीन बसावन मुनएमी के सुपुत्र थे। आप हज़रत शाह हुसैन अली शत्तारी अर्थात अपने पिता के ही पीरो मुर्शिद से मुरीद हुए और ख़िलाफ़त प्राप्त की। अपने पिता से भी लाभान्वित हुए तथा महान सूफ़ी संत हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात अबुलउलाई के सुपुत्र हज़रत शाह अबुलहसन अबुलउलाई से भी सिलसिला अबुलउलाइया की ख़िलाफ़त प्राप्त की। 13वीं शताब्दी के विख्यात सूफ़ी संत आला हज़रत सैयद शाह क़मरुद्दीन हुसैन मुनएमी से भी एक अवसर पर केवल एक आलिंगन में लाभान्वित हुए।

(कैफ़ीयतुल आरेफ़ीन)

आपका शरीर दुबला पतला था परन्तु मुखमण्डल पवित्र वंश के तेज और आभा से परिपूर्ण था। आपकी महानता के बारे में सभी समकालीन संत एकमत थे।

आप में दानशीलता बहुत थी। स्वभाव ऐसा था कि पीड़ित और दुःखी व्यक्ति भी आपसे मिल कर अपनी पीड़ा और दुख भूल जाता था।

आप फ़ारसी और उर्दू भाषा के लोकप्रिय कवि हुए हैं। इन दोनों भाषाओं में आपको दक्षत प्राप्त थी। फ़ारसी और उर्दू में आपने क्रमशः 'ज़ुलूम' और 'वज्द' के उपनाम अपनाए हैं। आपकी उर्दू ग़ज़ल के कुछ पद्य यहाँ लिखना अनुचित न होगा:-

शरारे हुस्न से तेरे नहीं कोई ख़ाली
हरम का संग हो पत्थर हो या कलीसा हो
करता हूँ सरापा को तेरे नक्श मैं दिल पर
तस्वीर तेरी ज़ेरे बग़ल जाए तो अच्छा
बे यार के जीने से तो मरना ही भला है
अब जान मेरी तन से निकल जाए तो अच्छा

आप 1287 हि० में जमादि प्रथम मास की 5वीं तिथि को शुक्रवार की रात्रि में परलोक सिधारे और अपने पिता से सटे पश्चिम दफ़्न हुए।

23

जनाबहुज़ूर मख़दूम शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी

(1287-1321 हि०/1870-1903 ई०)

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह अमीरुद्दीन फ़िरदौसी के बाद मख़दूमे जहाँ के 23 वें सज्जादानशीन हुए और लगभग 34 वर्षों तक हज़रत मख़दूमे जहाँ की पवित्र गद्दी की शोभा बढ़ाते रहे।

आपका जन्म 23 रजब 1248 हि० को सोमवार की रात्रि में हुआ। आपने क्रमशः मौलवी एनायत हुसैन, मौलाना हाजी सैयद वज़ीरुद्दीन और मौलाना मुहम्मद मूसा मुल्तानी से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की। बीस वर्ष की उम्र में आप शिक्षा और ज्ञान में निपुण हो चुके थे। आपमें अभूतपूर्व मेधा थी और और स्मरण शक्ति इतनी तीव्र थी कि केवल एक बार पढ़ने से सम्पूर्ण पुस्तक याद हो जाती थी। आपके

शिक्षक तथा सहपाठी सभी आपकी कुशाग्र बुद्धि के प्रति आश्चर्यचकित रहते थे। आप की लिखावट भी बहुत सुन्दर होती थी।

आपकी काया भी बड़ी सुन्दर थी और मुखमण्डल में बड़ा आकर्षण था, जो देखता मंत्रमुग्ध हो जाता।

सूफ़ी वाद की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की और फिर उन्हीं के आदेशानुसार हज़रत मख़दूम शोऐब फ़िरदौसी के सज्जादानशीन हज़रत शाह जमाल अली फ़िरदौसी से मुरीद हुए और अपने पिता के अतिरिक्त उनसे भी ख़िलाफ़त प्राप्त की। हज़रत शाह जमाल अली की मृत्यु के बाद आपने प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत शाह विलायत अली मुनएमी इस्लामपुरी की सेवा में उपस्थित हो कर बहुत कुछ लाभ प्राप्त किया और ख़िलाफ़त भी प्राप्त की।

आप अपने समय की प्रसिद्ध विद्वान और पारंगत सूफ़ी संत गुज़रे हैं। सभी समकालीन संत आपका नाम न लेकर आदर स्वरूप आपको जनाबहुज़ूर से सम्बोधित करते थे। आपके बाद मख़दूमे जहाँ के सभी सज्जादानशीन जनाबहुज़ूर कहलाने लगे। फ़ारसी भाषा में आपको उत्कृष्ट दक्षता प्राप्त थी। फ़ारसी पद्य में आपकी रचनाएं बहुत बड़ी संख्या में हैं, जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं-

(1) शजराते तय्येबात	(2) सिलसिलतुल लआली
(3) गुले फ़िरदौस	(4) गुले बहिश्ती
(5) रौज़तुन्नईम	(6) इबरत अफ़ज़ा
(7) शहदो शीर	(8) रिसाला इल्मे नुजूम
(9) रिसाला इल्मे रमल	(10) रुबाइयों का संग्रह

आपने कविता में अपना तख़ल्लुस (उपनाम) 'सेवात' रखा था उर्दू में भी आपकी कविताएं मिलती हैं। उर्दू में आप 'शौक़' के उपनाम से कहते थे।

आपसे असंख्य लोगों ने सूफ़ी वाद की शिक्षा ली और आपने लगभग 35 व्यक्तियों को शिक्षा-दीक्षा देकर दूसरों की शिक्षा के लिए अधिकार (ख़िलाफ़त) दिया। जिनमें प्रसिद्ध ख़लीफ़ा निम्नलिखित हैं:

(1) हज़रत मौलाना शाह बुरहानुद्दीन फ़िरदौसी (सुपुत्र)

(2) हज़रत शाह मुहम्मद हयात फ़िरदौसी (पौत्र)

(3) हज़रत शाह वसी अहमद उर्फ़ शाह वगती (सुपुत्र)

(4) हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद फ़ाज़िल (दामाद)

(5) हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद सईद (सुपुत्र)

(6) हज़रत मौलवी जमालुद्दीन गोरखपुरी

(7) हज़रत सैयद शाह मुहम्मद नाज़िम मानपुरी

(8) हज़रत मौलवी अबदुर्रहमान अमृतसरी

(9) हज़रत शैख़ मुहम्मद इसमाईल, बम्बई

(10) हज़रत सैयद शाह अबू मुहम्मद अशरफ़ हुसैन सज्जादानशीन कछौछा शरीफ़, फ़ैज़ाबाद

(11) हज़रत मौलाना शाह रशीदुद्दीन (सुपुत्र)

(12) हज़रत हाफ़िज़ सैयद शाह मुहम्मद शफ़ी फ़िरदौसी (सुपुत्र)

(13) हज़रत शाह मुहम्मद इलयास यास बिहारी (सुपुत्र)

(14) हज़रत शाह नजमुद्दीन फ़िरदौसी। इत्यादि

आपने अपने पूर्वजों की भाँति पत्राचार के द्वारा भी शिक्षा-दीक्षा का कार्य किया।

आपने अपनी धर्मपत्नियों की मृत्यु के कारण पाँच विवाह किये और इन पाँचों पत्नियों से आपको बड़ी संख्या में सुपुत्र और सुपुत्रियाँ हुईं। आपकी सभी संतान अभूतपूर्व रूप से शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों की पात्र हुईं।

आपके जीवन और उपलब्धियों पर आधारित एक विस्तृत पुस्तक हज़रत शाह नजमुद्दीन फ़िरदौसी लिखित '**हयाते सेबात**' के नाम से हस्तलिखित सुरक्षित है। आपके जीवन पर शोध कार्य करके डाक्टर अली अरशद साहब शरफ़ी ने डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है।

आप का स्वर्गवास 12 मई 1903 ई० 5 जमादी द्वितीय 1321 हि० की रात्रि के 1 बज कर 55 मिनट पर हुआ। आपका मज़ार अपने

पिता के सटे पश्चिम में है।

आपके व्यक्तित्व पर ख़ानक़ाहे मुअज़्ज़म से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका '**अनवारे मख़्दूम**' ने 2003 ई० एक विशेषांक प्रकाशित किया है।

24

जनाबहुज़ूर मख़्दूम सैयद शाह मुहम्मद हयात फ़िरदौसी

(1903-1935 ई०/1321-1354 हि०)

आप अपने दादा जनाबहुज़ूर सैयद शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी के बाद पिता की अकस्मात मृत्यु के कारण हज़रत मख़्दूमे जहाँ के 24वें सज्जादानशीन हुए और लगभग 32 वर्षों तक उस पवित्र गद्दी की शोभा रहे।

आप का जन्म 1297 हि० में हुआ। आपने शिक्षा दीक्षा अपने फूफा हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद फ़ाज़िल से प्राप्त की और अपने दादा से मुरीद हुए और ख़िलाफ़त प्राप्त की।

आपकी संगीत और कविता में गहरी रुचि थी और इसके माध्यम से आप ईशजाप और ध्यान में लीन रहते थे। उर्दू और विशेष कर हिन्दी और मगही कविता कहने में आपको दक्षता प्राप्त थी। आपकी मगही कविताओं का एक बड़ा संग्रह ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के ग्रन्थालय में सुरक्षित है।

जमादी द्वितीय की पहली तिथि को 1354 हि० (1935 ई०) में आपकी मृत्यु हुई। आपका मज़ार अपने पिता के सटे पश्चिम में है।

25

जनाबहुज़ूर मख़्दूम सैयद शाह मुहम्मद सज्जाद फ़िरदौसी

(1935 ई०–1976 ई०)

आप अपने पिता जनाबहुज़ूर सैयद शाह फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़्दूमे जहाँ के 25 वें सज्जादानशीन हुए और लगभग 41 वर्षों तक इस पवित्र गद्दी की शोभा बढ़ाते रहे।

आपका जन्म 1911 ई० में हुआ था। आपने शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से प्राप्त की और उन्हीं से मुरीद हुए और फिर ख़िलाफ़त प्राप्त की।

आप अपने काल के महान सूफ़ी संत और लोकप्रिय गद्दीनशीन गुज़रे हैं। आपही के काल में हज़रत मख़दूमे जहाँ के मज़ार पर भव्य गुम्बद का निर्माण हुआ। आप के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करने वाले लोग अभी जीवित हैं और वे आपकी महिमा के जीवन्त साक्षी हैं।

आपकी जीवनी को आपके प्रिय मुरीद और ख़लीफ़ा सैयद मुस्तफ़ा हसन फ़िरदौसी (हिजरत करके पाकिस्तान, कराची में फ़िरदौसिया सिलसिले का केन्द्रबिन्दु बने और वहीं दफ़न हुए। उनके मुरीद और ख़लीफ़ा अभी भी पाकिस्तान में हैं।) ने बहुत सुन्दरता के साथ संकलित किया है परन्तु यह अभी हस्तलिखित है।

आप शव्वाल की 25 तारीख़ को 1976 ई० में परलोक सिधारे और अपने पिता के सटे पश्चिम में दफ़न हुए।

26

जनाबहुजूर मख़दूम सैयद शाह मुहम्मद अमजाद फ़िरदौसी

(1976-1997 ई०)

आप अपने पिता जनाबहुजूर सैयद शाह मुहम्मद सज्जाद फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 26 वें सज्जादानशीन हुए और लगभग 21 वर्षों तक इस पवित्र गद्दी की शोभा रहे। आप अपने पिता के शिष्य, मुरीद और ख़लीफ़ा थे।

आप शान्त और सुशील स्वभाव के दयालु हृदय वाले मृदु भाषी संत पुरुष थे। आपने बहुत ही सादा सहज और पारदर्शी जीवन व्यतीत किया जो सारा का सारा जन सामान्य के लिए समर्पित था। लोगों के दुख दर्द, परेशानियाँ, विपत्तियाँ, कष्ट और असुविधा के बारे में सुनकर आप इस प्रकार विचलित हो उठते मानो वह स्वंय उनकी पीड़ा हो। दान शीलता, परोपकारिता, बलिदान और संयम की आप जीवंत प्रतिमूर्ति थे। दिखावा, बनावट और अहं की भावना आपको छू

तक नहीं गई थी। आपके जीवनवृत्त पर एक पुस्तक लिखी जा रही है, जिसमें विस्तार से सभी पहलूओं को प्रकाशित किया जायेगा।

आप के काल में ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म की प्रगति और उत्थान के मार्ग में कई महत्वपूर्ण मील के पत्थर स्थापित हुए। हज़रत मख़दूमे जहाँ के हुजरे तथा ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म और हज़रत मख़दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार शरीफ़ के नव निर्माण का अति महत्वपूर्ण कार्य हुआ। मख़दूमे जहाँ की रचनायें मकतूबाते दो सदी, मादेनुल मआनी, ख़्वाने पुरनेमत, मूनिसुल मुरीदीन इत्यादि का पहली बार उर्दू रूपान्तरण प्रकाशित हुआ।

आप के मुरीद और शिष्य न केवल इस उपमहाद्वीप में है बल्कि अरब देशों और अमेरिका में भी हैं। आप एक अत्यन्त लोकप्रिय और महान सूफ़ी संत हुए हैं।

आप सफ़र मास की 23 तारीख़ 1418 हि० अर्थात 29 जून 1997 ई० को रविवार को 2 बजे दिन में अल्लाह के शुभ नाम के साथ परलोक सिधारे और बड़ी दरगाह में अपने पिता के चरणों में दफ़न हुए।

27
वर्तमान सज्जादानशीं
जनाबहुजूर सैयद शाह मुहम्मद सैफुद्दीन फ़िरदौसी

आप अपने पिता जनाबहुज़ूर मख़दूम सैयद शाह मुहम्मद अमजाद फ़िरदौसी के बाद 26 सफ़र 1418 हि० को अन्तिम बुध के दिन अर्थात 2 जुलाई 1997 ई० को हज़रत मख़दूमे जहाँ के 27वें सज्जादानशीं हुए। आपने लखनऊ में स्थित नदवतुलउलमा विश्वविद्यालय से धार्मिक शिक्षा प्राप्त की है और संत मार्ग में अपने पिताश्री के शिष्य, मुरीद और ख़लीफ़ा है।

आपके काल के प्रारम्भ में ही हज़रत मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद बल्ख़ी की पवित्र दरगाह शरीफ़ (पहाड़पुरा) की विशाल चहारदीवारी का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ। बड़ी दरगाह में भी

खुले प्रांगण में मार्बल फ़र्श होने के साथ-साथ सौन्द्रर्यीकरण का कार्य भी बड़े पैमाने पर हुआ। जिस सूर्य के उगते समय किरण की यह दशा हो उसके प्रताप की कल्पना भली भाँति की जा सकती है।

आपके काल में ख़ानक़ाहे मुअज़्ज़म, बड़ी दरगाह और पहाड़पूरा दरगाह में जीर्णोद्धार और नवनिर्माण कार्य बड़े पैमाने पर हुआ और हो रहा है। ख़ानक़ाहे मुअज़्ज़म के मुख्य हॉल के दोनों ओर के कमरे दोतले हो गए, जिससे जामेअतुश्शरफ़ के छात्रों के निवास से लिए काफ़ी जगह निकल आई। मख़दूमे जहाँ का वह हुजरा जहाँ आपका स्वर्गवास हुआ था और वह पवित्र स्थान जहाँ आपको अंतिम स्नान कराया गया था, उस पर एक भव्य और बहुमंज़िली इमारत का निर्माण हुआ, जिसमें ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का ग्रन्थालय और दूसरे शोध कार्यों के लिए पर्याप्त जगह निकल आई। बड़ी दरगाह बिहारशरीफ़ में प्रवेश द्वार पर वज़ूख़ाने का निर्माण और दूसरे सौन्दर्यीकरण और जीर्णोद्धार के कार्य सम्पन्न हुए। पहाड़पूरा दरगाह में पुरानी मसजिद के स्थान पर भव्य विशाल और दो मंज़िली मसजिद का नवनिर्माण हुआ।

आपके काल में ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त कीं, जिनमें महत्वपूर्ण जामिअतुश्शरफ़ का आरम्भ और सुचारू रूप से कार्यरत होना है। प्रत्येक वर्ष बच्चे और बच्चियाँ यहाँ से क़ुरआन को कण्ठस्थ करके अपना शैक्षणिक जीवन आगे बढ़ा रहे हैं। इसके अतिरिक्त जामिअतुश्शरफ़ पब्लिक स्कूल के नाम से एक ऐसी बड़ी शैक्षणिक क्रांति का प्रारंभ हुआ जिसमें अबतक सैकड़ों ग़रीब परिवार के बच्चे और बच्चियाँ 10वें वर्ग तक की निःशुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसकी शाखाएं ख़ानक़ाहे मुअज़्ज़म के अतिरिक्त बिहारशरीफ़ के पहाड़ी मुहल्ले में और नालंदा ज़िले के हिलसा प्रखण्ड में भी भलीभाँति कार्यरत हैं। शरफ़ दातव्य आरोग्यशाला का भी बहुपयोगी आरम्भ हुआ तथा आगामी वर्षों में कई आधुनिक शिक्षण केन्द्रों की स्थापना का लक्ष्य है।

आपकी सज्जादानशीनी के काल में कई महत्वपूर्ण अनुवाद सम्पन्न हुए और उनका प्रकाशन हुआ। फ़िरदौसिया सिलसिले में विशेष रूप से हज़रत मख़्दूमे जहाँ के जीवनवृत्त का एक विश्वस्त स्रोत '**मनाक़िबुल असफ़िया**' फ़ारसी से उर्दू में अनूदित हो कर प्रकाशित हुआ। हज़रत मख़्दूमे जहाँ की संकलित '**फ़वायदे रुक्नी**' भी उर्दू भाषा में परिवर्तित होकर छपी और ख़ूब लोकप्रिय हुई।

मख़्दूमे जहाँ के चौथे सज्जादानशीन, हज़रत अहमद लंगर दरिया बल्ख़ी का मलफ़ूज़, जो फ़िरदौसी सूफ़ियों के बारे में महत्वपूर्ण दस्तावेज़ की हैसियत रखता है, का अनुवाद पहली बार प्रकाशित हो कर सामने आया।

हज़रत अहमद ग़ज़ाली के '**रिसाला ऐनिया**' का भी उर्दू रूपांतरण प्रकाशित हुआ।

इन सबके अतिरिक्त त्रैमासिक पत्रिका '**अनवारे मख़्दूम**' के भी वर्ष 2002 से वर्ष 2005 तक 7 महत्वपूर्ण अंक प्रकाशित हुए।

देश और विदेश के हज़ारों लोग आपके हाथ पर अपने पापों से तौबा करते हैं और सिलसिलए फ़िरदौसिया में मुरीद होते हैं। आप देश के विभिन्न भागों में प्रवचन और सत्संग के लिए भ्रमण करते रहते हैं। आप मृदुभाषी, दयावान, उचित मार्ग बताने वाले और उच्च विचारों वाले तथा अपने पूर्वजों के सही मानों में उत्तराधिकारी हैं। अपने परिवार के दूर और पास वालों पर आपकी कृपा दृष्टि एक तरह है। अपने मुरीदों पर भी आपके व्यक्तित्व की ठंडी छाँव साफ़ झलकती है।

आपके तीन सुपुत्र हैं जिनमें बड़े सैयद शाह हुसामुद्दीन हैं और उन्होंने बहुत ही अल्प समय में पवित्र क़ुरआन को कंठस्थ कर लिया है। उसके पाठ करने एवं नात और मनक़बत पढ़ने में आपकी आवाज़ और अंदाज़ अभूतपूर्व आकर्षण और प्रभाव पैदा करने वाली है। सैयद शाह शरफ़ुद्दीन और सैयद हुसैन मुहम्मद सज्जाद अभी छोटे हैं और स्कूल में पढ़ते हैं।

मैं इसी कामना के साथ इस पुस्तक को समाप्त करता हूँ कि अल्लाह पाक उन्हें चिरंजीवी बनाए, मख़्दूमे जहाँ की प्रतिमूर्ति और अपने पूर्वजों के लिए गर्व का विषय बनाए। मख़्दूमे जहाँ की पवित्र गद्दी की शोभा चारों दिशाओं में फैले और यह हज़रत मख़्दूमे जहाँ के सज्जादानशीनों की स्वर्णिम शृंखला अमर रहे।

मेरे पीरे शरफ़ तोरी नगरी सलामत

मेरे शाहे शरफ़ तोरी डेयोढ़ी सलामत

अरज करे एक नारी

घरवा से निकसी, बिरिछ तरे ठारी

अंसुवन भीजे मोरी सारी

सब पन्हरियाँ भर-भर गैलीं

मैं तोरा दरवाजे ठारी

❖❖❖

संदर्भ सूची

❖ मनाक़िबुल असफ़ीया	नवल किशोर	फ़ारसी
❖ सियरुल औलिया	अमीर खुर्द किरमानी	फ़ारसी
❖ अख़्बारुल अख़्यार	शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी	फ़ारसी
❖ गंजे अरशदी	(पाण्डुलिपि)	फ़ारसी
❖ तारीख़ फ़ीरोज़शाही	शम्स सेराज अफ़ीफ़	फ़ारसी
❖ सीरते फ़ीरोज़शाही	ज़ियाउद्दीन बरनी	फ़ारसी
❖ गंजे ला यख़फ़ा	मलफ़ुज़ात शैख़ हुसैन नौशए तौहीद बल्ख़ी (पाण्डुलिपि)	फ़ारसी
❖ मसनवी	मौलाना रूम	फ़ारसी
❖ फ़वायदुल फ़वाद	हसन सिजज़ी	फ़ारसी
❖ मख़ज़नुल ग़रायब	अहमद अली सन्देलवी	फ़ारसी
❖ अनसाबे शरफ़ी	(पाण्डुलिपि)	फ़ारसी
❖ गुले फ़िरदौस	शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी	फ़ारसी
❖ कनज़ुल अनसाब	शाह अता हुसैन फ़ानी	फ़ारसी
❖ मनाक़िबुल असफ़ीया	मकतबा शरफ़	उर्दू
❖ तारीख़ सिलसिलए फ़िरदौसिया	मुईनुद्दीन दरदाई	उर्दू
❖ हयाते सबात	शाह नजमुद्दीन फ़िरदौसी (पाण्डुलिपि) ख़ानक़ाह मुअज़्ज़मम	उर्दू
❖ अश्शरफ़	डा० तैय्यब अबदाली	उर्दू
❖ वसीलए शरफ़ ज़रीयए दौलत	सूफ़ी मनेरी	उर्दू

- मौलूदं शरफ़ी — शाह अता हुसैन फ़ानी — उर्दू
- सीरतुश्शरफ़ — सैयद ज़मीरुद्दीन बिहारी — उर्दू
- जादए इरफ़ां — डा० तैय्यब अबदाली — उर्दू
- उर्दू की इब्तेदाई नश्वो नुमा में सूफ़ियाए केराम का काम — मौलवी अब्दुल हक़ — उर्दू
- आसारे मनेर — शाह मुरादुल्लाह मनेरी — उर्दू
- मूनेसुलकुलूब — मलफ़ुज़ात शेख़ अहमद लंगर दरिया बल्ख़ी — उर्दू
- तारीख़े दावतो अज़ीमत — मौलाना अबुलहसन अली नदवी — उर्दू
- तारीख़े मगध — फ़सीहुद्दीन बल्ख़ी — उर्दू
- तारीख़े खुलाफ़ाए अरबो इसलाम — कबीर दानापूरी — उर्दू
- सेमाही अनवारे मख़दूम — मकतबए शरफ़ — उर्दू
- A History of Sufism
- in India Vol. I & II — A.A. Rizvi — Eng.
- Collected works of Syed Hasan Askari — Eng.
- Medival Bihar — Syed Hasan Askari — Eng.
- Bihar through the ages — Eng.
- Corpus of Arabic & Persian — Prof. Qeyamuddin — Eng.
- Inscriptions of Bihar
  A History of Sufism in Bangladesh — Eng.

उपरोक्त मुख्य संदर्भ ग्रन्थों के अतिरिक्त मख़दूम जहाँ के सभी उपलब्ध पत्र संग्रह, मलफ़ुज़ात और सभी रचनाएं एवं उनके उर्दू और अंग्रेजी अनुवाद।

-:-:-:-

MAKHDOOM-E-JAHAN
Shaikh Sharafuddin Ahmad Yahya Maneri
Jeevan Aur Sandesh

By

Syed Shah Shamimuddin Ahmad Munemi

"ए भाई! मेरे जो लेख तुम तक पहुँचे हैं, उन्हें पूरी तन्मयता और पूरी एकाग्रता के साथ बराबर अध्ययन करते रहो। जिस प्रकार कथा-कहानी पढ़ते हैं उस प्रकार मत पढ़ो।

एक महात्मा से लोगों ने पूछा कि जब ऐसा समय आ जाए कि सद्गुरू का सत्संग उपलब्ध न हो तो उस समय क्या करना चाहिए? उन्होंने उत्तर दिया कि महापुरुषों की रचनाओं में से थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन पढ़ लिया जाए, क्योंकि जब सूर्यास्त हो जाता है तो दीये से प्रकाश लिया जाता है।"

मख़दूम-ए-जहाँ
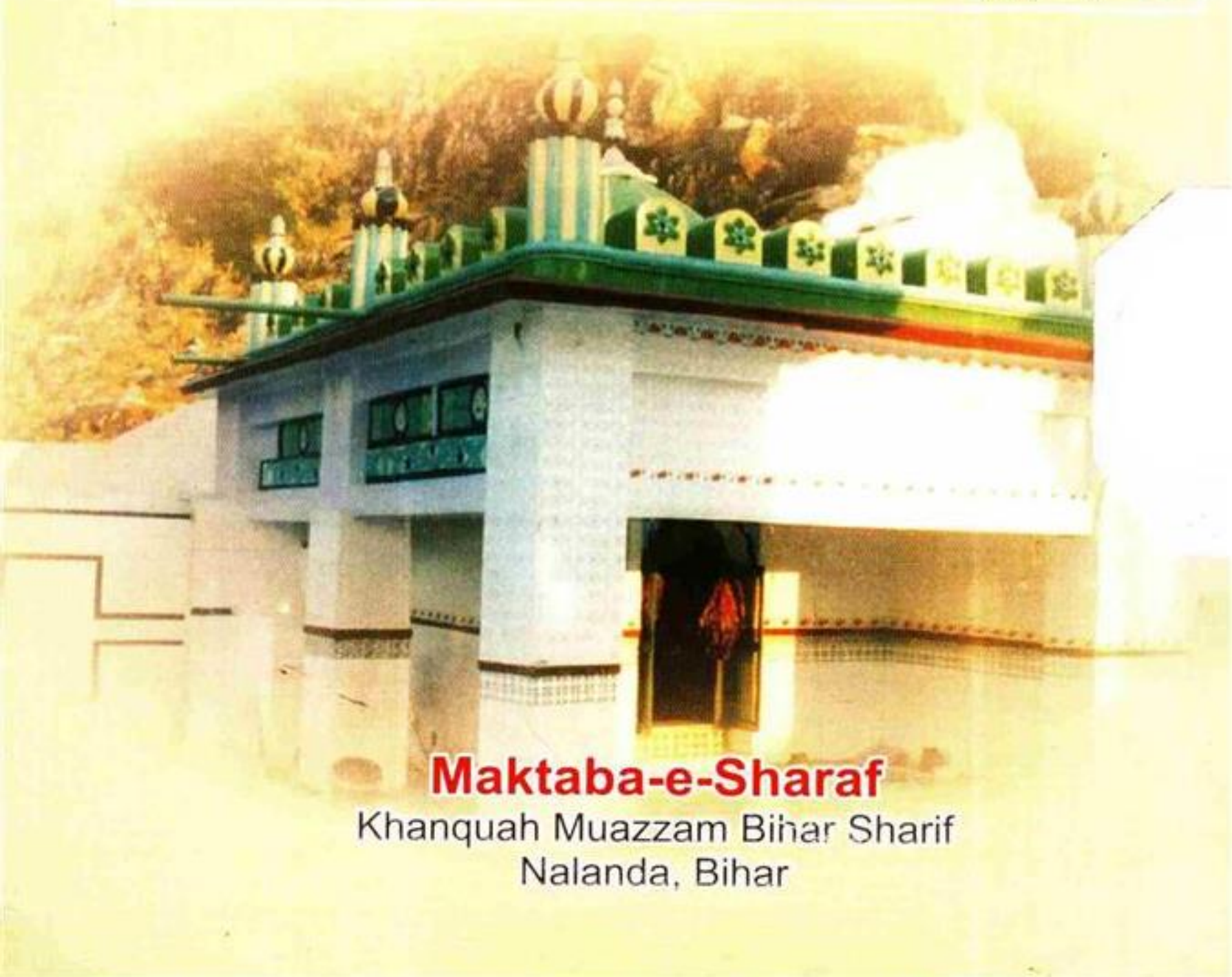
Maktaba-e-Sharaf
Khanquah Muazzam Bihar Sharif
Nalanda, Bihar